सूत्र ८.

अंग ११.

बाल ब्रह्मचारी पंडित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज कृत

हिन्दी भाषानुवाद सहित.

विपाक सूत्र

प्रसिद्ध कर्ता-दक्षिण हैदराबाद निवासी.

राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी

अमूल्य.

प्रत १०००

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय सीकंदराबाद (दक्षिण.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अमूल्य शास्त्र दानदाता.

जैन स्थम्भ दानवीर

स्व. राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी, जौंहरी.

जन्म सं० १९२०. स्वर्गस्थ सं० १९७४.

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय, सिकंदराबाद, (दक्षिण.)

जैन प्रभावक धर्म धुरंधर

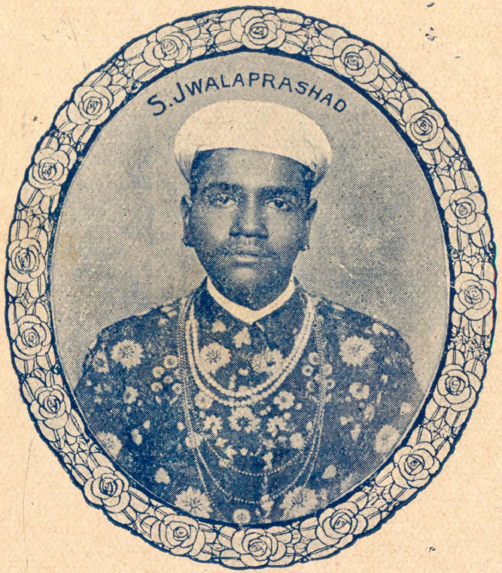

लाला ज्वालाप्रसादजी, जौंहरी.

जन्म सं० १९५०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री खुबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझे साथ ले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बडा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म में प्रसिद्ध किया व परमोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये. उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैद्राबाद में हुए. इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए. जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे.

शिशु-अमोल ऋषि

उपकारी-महात्मा

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्यपाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज! आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आप के परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं. आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोंद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा.

दास-अमोल ऋषि

gyanmandir@kobatirth.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आभारी-महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज! इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचिन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समय २पर आवश्यकीय शुभ सम्माति द्वारा मदत देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका. इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के अभारी होंगे.

आपका अमोल ऋषि

हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया. और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तल दबे हुए हम आप के बडे अभारी हैं.

संघकी तर्फ से.

सुखदेव सहाय ज्वाला प्रसाद

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अपनी छत्ती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजीके शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी. वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी. तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी. इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाका बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोपचार का संयोग मिला. दो प्रहर का व्याख्यान, प्रसंगीसे वार्तालाप, कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखक पूर्ण सके. इस लिये इन कार्य षष्टक उक्त मुनिवरों का भी बडा उपकार है.

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहनलालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रतनचन्द्रजी, तपस्वीजी माणकचन्दजी, कवीवर श्री अमी ऋषिजी, सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी. पं. श्री नथमलजी. पं. श्री जोरावरमलजी. कविवर श्री नानचन्द्रजी. प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी. गुणज्ञ सतीजी श्री रंभाजी. धोराजी सर्वज्ञ भंडार, भीनासरवाले कनीरामजी बहादरमलजी बाँठीया, लींबडी भंडार, कुचेरा भंडार, इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है. इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शास्त्र-प्रकाशक

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ठ दृढधर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महालाभके लोभी बन जैन साधुमार्गीय धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने को रु. २००००, का खर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु. ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नहीं होते भी आपने उस ही उत्साह से कार्य को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों की गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

हैदाबाद सिकन्द्राबाद जैन संघ

अवश्यकीय सूचना

झोवाला (काठियावाड) निवासी मणीलाल शीवलाल जो शास्त्रोद्धार कार्यालय का मेनेजर था और जो शास्त्रोद्धार जैसे महा उपकारी और धार्मीक कार्य के हिसाब को संतोष जनक और विश्वासनीय ढंग से नहीं समझा सकने के सबब से हमको पूर्ण अविश्वास होगया और आप खुद घबरा कर बिना इजाजत एक दम चलागया इस लिये जो प्रेस अखबार और धार्मीक कार्य के लिये मणीलाल को देना चाहाथा वो उसकी अप्रमाणिकता और घोटाला देखकर उस को नहीं देते हुवे आग्रा निवासी जैनपथप्रदर्शक मासिक के प्रसिद्ध कर्ता बाबू पदम सिंघ जैनको धार्मिक कार्य निमित्त दिया गया है सर्व सज्जन इस अखबार से फायदा उठावें

ज्वालाप्रसाद

विपाकसूत्र की-प्रस्तावना.

प्रणम्य श्रीजिनाधीशं, सद्गुरून नमो नमः॥विपाक सूत्र स्यवार्तिकं, कुरुते बाल बोधकः ॥१॥

श्री जिनेश्वर भगवान् को और गुरु महाराज को साविनय वंदना नमस्कार कर के एका दश अंग जो श्री विपाक सूत्र है उस के अर्थ का अल्पज्ञों को सुख से अवबोध कराने के लिये हिन्दी अनुवाद लिखता हुं ॥ ६ ॥ दशमा अंग प्रश्नव्याकरण सूत्र में तो आश्रव संवर का स्वरूप समजाया. आश्रव दुःख रूप और संवर सुखरूप होता है. इस लिये इग्यारवा अंग विपाक सूत्र में दो प्रकार के पाक (सुख दुःख रूप) कथन कहते हैं. अर्थात्-जैसे अफीमादि का कटुपाक भोगवते दुःख रूप होता है ऐसे ही पाप कर्म के कटु फल भोगवते दुःख रूप होते हैं और जैसे मिष्टान्नादि भोगवते सुख रूप होता है वैसेही मिष्ट के मिष्ट फल भोगवते सुख रूप होते हैं. इस कथन को दश २ दृष्टान्तों कर के विस्तार पूर्वक इस सूत्र में समजाया गया है. कहते हैं कि जिस प्रकार माता पिता मृत्यु के अवसर में अपने घर का सार पदार्थ सुपुत्र को बताते हैं तैसे ही श्री महावीर महापिता ने आन्तिम समय में चारो ही तीर्थ को इस विपाक सूत्रका फरमान चारो तीर्थ रूप पुत्रको किया है. इस सूत्र के दो श्रुतस्कन्ध है यथा-१ दुःख विपाक और २ सुख विपाक. एकेक श्रुतस्कन्ध के दश२ अध्ययनो, यों दोनों के सब २० अध्ययन हैं. इस का उतारा मुख्यता में तो कच्छ देश पावन कर्ता महात्मा श्री नागचन्द जी,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महाराज की तरफ से प्राप्त हुई धनपतसिंह बाबू की छपाइ हुई प्रत पर से किया है और गौणता में मेरे पास की दो प्रतों पर से किया है. छद्मस्थता के योग से अशुद्धीयों रहगई हैं सो शुद्धकर पढीये.

विपाकसूत्र की अनुक्रमणिका.

१ प्रथम श्रुतस्कन्ध.

१ प्रथम अध्ययन-मृगालोडिया का	५
२ द्वितीय अध्ययन-उज्झित कुमार का	३५
३ तृतीय अध्ययन-अभग्गसेन चोरका	६३
४ चतुर्थ अध्ययन-शकट कुमार का	९३
५ पंचम अध्ययन-बृहस्पति दत्त का	१०२
६ षष्टम अध्ययन-नन्दीसेण कुमार का	११०
७ सप्तम अध्ययन-उम्बरदत्त कुमार का	२२१
८ अष्टम अध्ययन-सौर्यदत्तमच्छी का	२४०
९ नवम अध्ययन-देवदत्ताराणी का	२५२
१० दशम अध्ययन-अंजूराणी का	२७४

२ द्वितीय श्रुतस्कन्ध.

१ प्रथम अध्ययन-सुबाहु कुमार का	२८२
२ आगे नवही अध्ययन संक्षिप्त है.	

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिमहाराज के सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलकऋषिजी नें सीर्फ तीन वर्ष में ३२ ही शास्त्रों का हिंदी भाषानुवाद किया, उन ३२ ही शास्त्रों की १०००-१००० प्रतों को सीर्फ पांच ही वर्ष में छपवाकर दक्षिण हैद्राबाद निवासी राजा बहादूरलाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी ने सब को अमूल्य लाभ दिया है !

॥ एकादशमाङ्ग-विपाक सूत्रम् ॥

॥ प्रथम-श्रुतस्कन्ध ॥

❀ प्रथम अध्यायनम् ❀

सूत्र

तेणंकालेणं तेणंसमएणं चंपाएणामं णयरीहोत्था वण्णओ ॥ १ ॥ तएणं चंपाएणरीए उत्तरपुरिच्छिम दिसीभाए एत्थणं पुण्णभद्दणामं चेइएहोत्था वण्णओ॥ २ ॥तेणंकालेणं तेणं

अर्थ

उस काल चौथे आरे में उस समय जिस वक्त यह भाव प्रवर्तते थे तब चम्पा नाम की नगरी थी, उसका वर्णन उववाइ सूत्र से जानना ॥ १ ॥ उस चम्पा नगरी के उत्तर और पूर्व दिशा के विभाग में ईशान कौन में यहां पूर्णभद्र नाम का चैत्य था इस का भी वर्णन उववाइ सूत्र से जानना ॥ २ ॥ उस काल उस

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मेणामं अणगारे जाइ संपण्णे वण्णओ, चउदसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगार सएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव पुण्णभद्देचेइए अहापडिरूवं जाव विहरइ ॥ ३ ॥ परिसाणिग्गया धम्मंसोच्चा निसम्म जामेवदिसिं पाउब्भूया तमिवदिसिं पडिगया ॥४॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं अज्जसुहमस्स अंतेवासी अज्ज जंबूणामं अणगारे सत्तुस्सेहे जहा गोयमसामी तहा जाव झाणकोट्ठोवगए विहरइ ॥ ५ ॥ तएणं अज्ज जंबूणामं

अर्थ

समय में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के शिष्य. आर्य सुधर्मा स्वामी नाम के अनगार-साधु उत्तम जातिवन्त इत्यादि गुनों का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना, चउदे पूर्व के पाठी चार ज्ञान सहित पांच सो साधुओं के साथ परिवरे हुवे पूर्वानुपूर्व चलते हुवे यावत् जहां पूर्णभद्र नाम का चैत्य, बगीचे युक्त था. तहां पधारे, यथा प्रतिरूप साधु को कल्पनीय वस्तु का अवग्रह-आज्ञा ग्रहणकर संयम तपसे आत्मा भावते विचरने लगे ॥ ३ ॥ परिषदा दर्शनार्थ आई, धर्मकथा-व्याख्यान श्रवण कर अवधारकर जिस दिशा से आई थी, उसदिशा पीछीगइ ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में आर्य सुधर्मा स्वामी के शिष्य आर्य जम्बू स्वामी नाम के अनगार-साधु सात हाथ के ऊंचे यावत् जैसे गौतम स्वामी का भगवती सूत्र में वर्णन चला है तैसे यावत् ध्यान कोष्टक में धर्म ध्यान ध्याते हुवे विचर रहे थे ॥ ५ ॥ तब वे आर्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अणगारे जायसड्ढे जाव जेणेव अज्ज सुहम्मे अणगारे तेणेव उवागए तिक्खुतो आया-
हिणं पयाहिणं करेइ करेइ त्ता वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता जाव पज्जुवासइ,एवं वयासी-
जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दसमस्स अंगस्स पण्हावा-
गरणाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, एक्कारसमस्सणं भंते ! अंगस्स विवाग सुयक्खंधस्स
समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ ६ ॥ तएणं अज्ज-
सुहम्म अणगारे जंबूअणारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं
एक्कारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दोसुयखंधा पण्णत्ता, तंजहा-दुहविवागाय, सुह-

अर्थ

जम्बू नाम के अनगार को प्रश्न पूछने की श्रद्धा उत्पन्न हुई यावत् जहां आर्य सुधर्मा स्वामी थे, तहां, आये, आकर तीन वक्त दोनों हाथ जोड प्रदक्षिणावर्त फिराकर वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार करके यावत् सेवा करते हुवे यों कहने लगे—यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने दशवा अंग प्रश्न व्याकरण का तो उक्त अर्थ कहा वह मैंने श्रवण किया, अहो भगवन् ! इग्यारवा अंग विपाक सूत्र का श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने कैसा अर्थ कहा है ? ॥ ६ ॥ तब वे आर्य सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामी से इस प्रकार कहने लगे—यों निश्चय हे जम्बू ! श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोंने इग्यारवा अंग विपाक सूत्र के दो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

विवागय, ॥ ७ ॥ पढमस्सणं भंते ! सुयक्खंधस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं केअट्ठे पण्णत्ते ? ॥ ८ ॥ तएणं सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! समणेणं आईगरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दसअज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा-१ मियापुत्ते, २ उज्झियए, ३ अभग्ग, ४ सगडे, ५ वहस्सइ, ६ नंदी, ७ उंवर, ८ सोरियदत्तेय, ९ देवदत्ताय, १० अंजूय ॥९॥ जइणं भंते ! समणेणं आईगरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा मियापुत्ते जाव अंजूय,

अर्थ

श्रुतस्कन्ध कहे हैं, उन के नाम—१ दुःख विपाक और २ सुख विपाक ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! प्रथम श्रुतस्कन्ध दुःख विपाक के श्रमण भगवन्त यावत् मुक्ति पधारे उनोंने क्या अर्थ कहा है ? ॥ ८ ॥ तब वे सुधर्मा अनगार जम्बू अनगार से यों कहने लगे—यों निश्चय हे जम्बू ! श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी धर्म की आदि के करता यावत् मुक्ति पधारे उनोंने दुःख विपाक के दश अध्ययन कहे हैं. उन के नाम—१ मृगापुत्र का, २ उज्झित कुमार का, ३ अभंगसेन चोर का, ४ सकट कुमार का. ५ बृहस्पति कुमार का, ६ नंदीवृधन कुमार का, ७ उम्बरदत्त कुमार का, ८ सौर्यदत्त कुमार का, ९ देवदत्ता रानी का, और १० अंजू कुमारी का ॥ ९ ॥ यदि अहो भगवन् ! श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी धर्म की आदि के करता यावत् मुक्ति पधारे उनोंने दुःख विपाक के दश अध्याय कहे हैं तद्यथा—मृगापुत्र का यावत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

पढमस्सणं भंते ! अज्झयणस्स दुहविवागणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ १० ॥ तएणं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणंसमएणं मियगामे णयरेहोत्था वण्णओ ॥ ११ ॥ तस्सणं मियगामस्स णगरस्स बहिया उत्तरपुच्छिमे दिसीभाए चंदणपायवे णामं उज्जाणेहोत्था, सव्वउय वण्णओ ॥१२॥ तत्थणं चंदणपायवस्स बहुमज्झदेसभाए सुहमस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था, चिराईए जहा पुण्णभद्दे ॥ १३ ॥ तत्थणं मियगामे णगरे विजए णामं खत्तिए रायापरिवसई वण्णओ ॥ १४ ॥ तस्सणं विजयस्स खतियस्स मियाणामं देवी

अर्थ

जंबू कुमारी का, अहो भगवन् ! इन में से प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? ॥ १० ॥ तब वे सुधर्मा अनगार जम्बू अनगार से यों कहने लगे—यों निश्चय अहो जम्बू ! उस काल उस समय में मृगाग्राम नाम का नगर था वर्णन उववाइ सूत्र से जानना ॥ ११ ॥ उस मृगाग्राम नगर के बाहिर ईशान कौन में चंदनपादप नाम का उद्यान था, वह सर्व (छही) ऋतु में सुखकारी वर्णन योग्य था ॥१२॥ उस चंदनपादप उद्यान के मध्य में सुधर्मा यक्ष का यक्षायतन (मंदिर) था, वह पूराना यावत् जैसा पूर्ण भद्र यक्ष का वर्णन उववाइ सूत्र में चला है तैसा इस का भी जानना ॥ १३ ॥ उस मृगाग्राम नगर में विजय नाम का क्षत्रीय राजा राज्य करता था, वह वर्णन योग्य था ॥ १४ ॥ उस विजय राजा के मृगादेवी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

होत्था अहीणवण्णओ ॥ १५ ॥ तस्सणं विजयखत्तियस्स पुत्ते मियाएदेवीए अत्तए मियापुत्तेणामं दारएहोत्था-जाइ अंधे, जाइमूए, जाइबहिरे, जाइपंगुले, हुंडेय वायवे, णत्थिणं तस्स दारगस्स-हत्थावा, पायावा, कण्णावा, अच्छिवा, णासावा, केवलभे तेसिं अंगोवंगाणं आगिती आगिमित्ते ॥१६॥ तएणं सा मियादेवी तं मियापुत्तदारगं रहस्सियं भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी२ विहरइ ॥ १७ ॥ तत्थणं मियागामे णयरे एगे जाइ अंधे पुरिसे परिवसइ, सेणं एगेणं सचक्खु तेणं पुरिसेणं

अर्थ

नाम की रानी थी. वह प्रतिपूर्ण अंग की धारक सुरूपा यावत् वर्णन् योग्य थी ॥१५॥ उस विजय क्षत्री का पुत्र मृगादेवी का आत्मज मृगापुत्र नाम का कुमार था, वह जन्म से अन्धा, जन्म से मुक्का [बोबडा] जन्म से बहिरा, जन्म से पांगुला, हुंडक संस्थानवाला, वात कफ पित्तादि रोग युक्त था. उस बच्चे के हाथ पांव कान आंख नाक नहींथे फक्त अंगोपांगके चिन्ह मात्र-आकार मात्रथे परंतु प्रसिद्ध नहीं देखातेथे॥१६॥ तब वह मृगादेवी उस मृगा पुत्र को छिपाकर भूमी घर (भोंयारे) में गुप्त रखकर गुप्त आहार पानी देती हुइ विचरती थी ॥ १७ ॥ उस मृगाग्राम नगर में एक जन्म का अन्धा पुरुष रहता था, उस को एक पुरुष चक्षुवाला आगे को दंड (लकडी) ग्रहण करता हुवा ले जाता था, उस अन्ध पुरुष के मस्तक के बाल बिखरे हुवे थे, उस के शरीर वस्त्रादि की मलीनता कर उसे मक्षिकाओंने घेर रखा था,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ

पुरओ दंडएणं पगड्डिज्जमणे २ फुट्टहडाहडसीसे मच्छिया चडगर पहकरेणं अणि-ज्जमाणमग्गे मियागामे णयरे गिहेगिहे कालवडियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ ॥१८॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए परिसानिग्गया॥१९॥ तएणं से विजए खत्तिए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जहा कूणिए तहा णिग्गए जाव पज्जुवासइ ॥ २० ॥ तएणं से अंधे पुरिसे तं महाजणसद्दंच जाव सुणेता, तं पुरिसं एवं वयासी-किन्नं देवाणप्पिया! अज्जमियगामे इंदमहंतिवा जाव निगच्छइ ? ॥ २१ ॥ तएणं से पुरिसे तं जाइ अंध पुरिसं एवं वयासी-णो खलु देवाणुप्पिया

सूत्र

उस के पीछे २ मक्खीओं जाती थी; वह अन्ध उस मृगा ग्राम नगर में घरोघर भिक्षा के लिये दीनवृति से आजीविका करता हुवा विचरता था ॥ १८ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे चंदनपादोप बगीचे में यथा उचित अवग्रह ग्रहण कर विचरते थे, दर्शनार्थ परिषदा आई ॥ १९ ॥ तब उस विजय क्षत्री राजा को भगवन्त पधारने की खबर लगी, जिस प्रकार कोणिक राजा भगवंत के दर्शन करने आया था तैसे वह भी आया ॥ २० ॥ तब वह अन्ध पुरुष उन दर्शनार्थ जाते हुवे बहुत लोगों का शब्द सुनकर, चक्षुवाले पुरुष से यों कहने लगा—हे देवानुप्रिय! आज मृगाग्राम नगर में क्या इन्द्रोत्सव है यावत् जिस के लिये इतने पुरुष जाते हैं? ॥ २१ ॥ तब वह चक्षुवाला पुरुष उस जाति अन्ध पुरुष से

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

इंदमहेइ जाव निग्गए एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे जाव विहरइ, तएणं एए जाव निगच्छइ ॥ २२ ॥ तएणं से अंध पुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी-गच्छमोणे देवाणुप्पिया ! अम्हेवि समणे भगवं जाव पज्जुवासामो ॥ २३ ॥ तएणं से सचक्खु पुरिसे जाइ अंध पुरिसे पुरओ दंडएणं पगडिज्जमाणे २ जेणेव समणे भगवं महावीर तेणेव उवागच्छई २ त्ता, तिक्खुतो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वंदइत्ता नमंसइत्ता जाव पज्जुवासई॥ २४ ॥ तएणं समणं भगवं महावीरे विजयस्स तीसिय धम्मं परिकहइ, जाव परिसा पडिग्गया, विजए विगए ॥ २५ ॥ तेणंकालेणं

अर्थ

यों कहने लगा—हे देवानुप्रिय ! आज इन्द्र महोत्सव आदि कुछ नहीं है परंतु श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे हैं उन के दर्शन करने के लिये यह बहुत से लोगों जाते हैं ॥ २२ ॥ तब वह अन्ध पुरुष सचक्षु पुरुष से यों कहने लगा. अहो देवानुप्रिय ! अपन भी श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के दर्शन करने चले. यावत् सेवा करेंगे ॥ २३ ॥ तब उस जाति अन्ध पुरुष का उस सचक्षु पुरुषने आगे को दंडा धरन कर जहां श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे तहां आया, आकर तीन वक्त हाथ जोड प्रदक्षिणावर्त फिराकर वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर सेवा भक्ति करने लगा ॥ २४ ॥ तब श्रमण भगवंत महावीर स्वामी विजय क्षत्री राजा को उस महा परिषदा को धर्मकथा सुनाई, परिषदा पीछी गइ, विजय

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तेणंसमएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूइ णामं अणगारे जाव विहरइ ॥ २६ ॥ तएणं से भगवं गोयमे तं जाइ अंधपुरिसं पासइ२त्ता जाय-सड्ढे जाव एवं वयासी-अत्थिणं भंते ! केइपुरिसे जाइअंधे, जाइअंधारूवे ? हंता अत्थि ॥२७॥ कहिणं भंते ! से पुरिसे जाइअंधे जाइ अंधारूवे ? एवं खलु गोयमा ! इहेव मियगामे णयरे विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियादेवीए अतए मियापुत्ते णामं दारए जाइअंधे जाइअंधारूवे, नत्थिणं तस्स दारगस्स जाव आगितिमित्ते, तएणं सा-

अर्थ

राजा भी गया ॥ २५ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के समीप रहनेवाले बडे शिष्य इन्द्रभूती नाम के अनगार यावत् धर्मध्यान ध्याते विचर रहे थे ॥२६॥ तब वे भगवंत गौतम स्वामी उस जन्मान्ध पुरुष को देखकर, प्रश्न पूछने की श्रद्धा उत्पन्न हुई यावत् भगवंत के पास आये वंदना नमस्कार कर यों कहने लगे-अहो भगवान् ! ऐसा कोइ जन्मान्ध पुरुष है. जन्मान्धरूप उत्पन्न हुवा है ? भगवानने कहा-हां है ॥ २७ ॥ गोतम स्वामी बोले—अहो भगवान ! वह जाति अन्ध पुरुष जाती अन्धरूप पुरुष कहां है? भगवंत बोले—हे गौतम ! यहां ही मृगाग्राम नगर में विजय क्षत्रि राजा का पुत्र मृगादेवी रानी का आतमज मृगापुत्र नामका कुमार जन्मान्ध जन्मान्धरूप है उस कुमार के हाथ पांव कान नाक आंख

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

मियादेवी जाव पडिजागरमाणी २ विहरइ ॥ २८ ॥ तएणं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामिणं भंते! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियापुत्तं दारयं पासित्तए ?, अहासुहं देवाणुप्पिया ! ॥ २९ ॥ तएणं से भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठे समण-स्स भगवओ अंतियाओ पडिणिक्खमई २ त्ता अतुरियं जाव सोहेमाणे २ जेणेव मियागामेणयरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मियागामं णयरं मज्झंमज्झेणं अणुपवसई २त्ता जेणेव मियाए देवीए गिंह तेणेव उवागच्छइ ॥ ३० ॥ तएणं सामियादेवी

अर्थ

आदि अवयव कुछ नहीं हैं. फक्त आकार मात्र प्रच्छन्न हैं; उस का मृगादेवी पलन करती हुई विचर रही है॥२८॥ तब भगवंत गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर यों कहने लगे-अहो भगवान ! जो आपकी आज्ञा होते में मृगापुत्र कुमार को देखना चहाता हुं ? भगवानने कहा हे देवानुप्रिय ! जैसे सुख हो वैसे करो ॥२९॥ तब भगवंत गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की आज्ञा प्राप्त होने हृष्ट तुष्ट आनंदित हुवे, श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पास से निकलकर त्वरित-शीघ्रता रहित यावत् इर्यासमिति से देखतेहुवे २ जहां मृगाग्राम नगर था तहां आये, मृगाग्राम नगर में प्रवेशकर के मध्य मध्य में होकर जहां मृगावती रानी का घर था, तहां आये ॥ ३० ॥ तब वह मृगादेवी भगवंत गौतम स्वामी को आते हुवे

सूत्र

भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी-संदिसंतुणं देवाणुप्पिया ! किमागमण पयोयणं ॥ ३१ ॥ तएणं भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी अहणं देवाणुप्पिया ! तवपुत्तं पासियं हव्वमागए॥ ३२ ॥ तएणं सा मियादेवि मियापुत्तस्स दारयस्स अणुमग्ग जायए, चत्तारिपुत्ते सव्वालंकाराविभूसिए करेइ २ त्ता भगवं गोयमस्स पाएसु पाडेइ २ त्ता एवं वयासी-एएणं भंते! मम पुत्ते पासह ॥ ३३ ॥ तएणं से भगवं गोयमे मियंदेविं एवं वयासी-णो खलु देवाणुप्पिय! अहं एए तवपुत्ते पासिओमागए, तत्थणं जे से तव जेट्ठे पुत्ते मियापुत्ते दारए जाइ अंधे जाइअंधारूवे जन्नं तुमं रहस्सियं भूमि

अर्थ

देखकर हर्षपाइ यावत् वंदना कर यों कहने लगी—अहो देवानुप्रिया ! आज्ञादीजीये आप किस प्रयोजन मे यहां पधारे है ? ॥ ३१ ॥ तब भगवंत गौतम मृगादेवी मे ऐसा बोले—हे देवानुप्रिया ! मैं तेरे पुत्र को देखने यहां शीघ्र आया हुं ॥ ३२ ॥ तब वह मृगादेवी मृगापुत्र के बाद चार पुत्र हुवे थे उन को सर्व प्रकार के वस्त्रालंकार से विभूषित कर भगवंत गौतम स्वामी के पांव लगाये, पांव लगाकर यों कहने लगी—अहो भगवान ! देखीये यह हैं मेरे पुत्र ॥ ३३ ॥ तब वे भगवंत गौतम स्वामी मृगादेवी से ऐसा बोले—हे देवानुप्रिया ! में इन तेरे पुत्रों को देखने नहीं आयाहु परंतु जो वह तेरा बडा पुत्र मृगापुत्र कुमार जन्मान्ध जन्मान्धरूपे है जिस को तूं गुप्त भूमीघर में रखती है, गुप्त आहार पानी देतीहुई विचरतीहै,

सूत्र

घरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी २ विहरइ तन्नं अहं पासिओ हव्वमागए ॥ ३४ ॥ तएणं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी-सेकेणं गोयमा! से तहारुवे णाणीवा तवस्सिवा जेणं ~~तव~~ एसमट्ठे मम ताव रहस्स कहेइ, ते तुब्भंहव्वमक्खाए, जओणं तुब्भेजाणह ? ॥ ३५ ॥ तएणं भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! ममधम्मायरिए समणे भगवं महावीरे जाव जओणं अहं जाणामि ॥ ३६ ॥ जावंचणं मियादेवी भगवया गोयमेणं सद्धिं एयमट्ठं संलवइ, तावंचणं मियापुत्तस्स दारगस्स भत्तवेलाजायथाविहोत्था ॥ ३७ ॥ तएणं सामियादेवि भगवं गोयमं एवं

अर्थ

उस को देखने केलिये मैं आयाहुं॥३४॥ तब वह मृगावतीदेवी भगवंत गौतम स्वामी से यों कहने लगी अहो इति आश्चर्य ! अहो गौतम ! यह कौन ऐसा तथा रूप ज्ञानी अथवा तपरूप लब्धिकर युक्त है जिसने यह मेरा छिपा हुआ अर्थ तुम को कहा, जिसे प्रसिद्ध किया जिस से तुमने जाना और उसे देखने शीघ्र पधारे हो ? ॥ ३५ ॥ तब भगवंत गौतम मृगादेवी से यों कहने लगे—हे देवानुप्रिय ! मेरे धर्माचार्य श्रमण भगवंत महावीर स्वामी सर्वज्ञ सर्वदर्शी हैं. यावत् जिनोने मेरे से कहा जिस से मैंने जाना ॥ ३६ ॥ जितने में मृगावती देवी गौतम स्वामी से उक्त वार्तालाप करती थी उतने में मृगापुत्र कुमार को भोजन देने की वक्त होगई ॥ ३७ ॥ तब वह मृगावतीदेवी भगवंत गौतम स्वामी से यों कहने लगी—

सूत्र

वयासी-तुब्भेणं भंते ! इहचेव चिट्ठह, जहणं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारयं उवेदंस-
मितिकट्टु, जेणेव भत्तपाणघरए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वत्थपरियट्टं करेइ २ त्ता
कट्ठसगडियं गिण्हइ २ त्ता विपुलस्स असण पाण खाइम साइमस्स भरेइ २ त्ता
तं कट्ठसगडियं अणुकट्ठमाणी २ जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ२ त्ता भगवं
गोयमं एवं वयासी-एहिणं तुब्भे भंते ! ममं अणुगच्छह, जहाणं अहं तुब्भं मियापुत्तं
दारयं उवदंसेमि ॥ ३८ ॥ तएणं से भगवं गोयमे मियंदेविं पिट्ठओ समणुगच्छइ
॥ ३९ ॥ तएणं सा मियादेवी तं कट्ठ सगडियं अणुकट्ठमाणी२ जेणेव भूमिघरे तेणेव
उवागच्छइ२त्ता चउप्पडेणं वत्थेणं मुहबंधमाणी, भगवं गोयमं एवं वयासी-तुब्भेविणं

अर्थ

अहो भगवान! तुम यहांहीं खडेरहो जिससे मैं तुमारे को मृगापुत्र कुमारदेखावूं,यों कहकर जहां भोजन गृहथा
तहां आई आकर वस्त्र बदले, वस्त्र बदलकर लकडे की छोटीसी गाडी ग्रहण की, उस में विस्तीर्ण अन्न पानी
खादिम स्वादिम भरा, भरकर उस काष्ट गाडी के मुख को डोरी बन्धी थी उसे खेंचती हुई २ जहां भगवंत
गौतम स्वामी थे तहां आइ, गौतम स्वामी से यों कहने लगी—अहो भगवान ! तुम मेरे पीछे पधारो जिस
से मैं तुमारे को मृगापुत्र देखावूं ॥ ३८ ॥ तब भगवंत गौतम स्वामी मृगावतीदेवी के पीछे २ चले ॥३९॥
तब वह मृगावती देवी उस काष्ट गाडी को खेंचती २ जहां भूमिगृह (भोंयारा) था तहां आई, आकर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

भंते ! मुहपोत्तियाए मुहबंधह ॥ ४० ॥ तएणं से भगवं गोयमे मियादेवीए एवं वुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुहबंधेइ २ त्ता ॥४१॥ तएणं सा मियादेवी परंमूही भूमिघरस्स दुवारं विहाडेइ, तओणं गंधो णिगच्छइ, से जहा नामए अहिमडेइवा जाव तओविणं अणिट्ठतराए चेव जाव गंधे पण्णत्ते ॥४२॥ तएणं से मियापुत्तेदारए तस्स विपुलस्स असण पाण खाइम साइमस्स गंधेणं अभिभूएसमाणे तं विपुलं असणं४ मुच्छिए, तं

अर्थ

वस्त्र के चार पटकर मुख (नाक) बन्धती हुई, भगवंत गौतम स्वामी से यों कहने लगी—अहो भगवन् ! तुम भी मुख को (नाक) को वस्त्र बन्धो + ॥ ४० ॥ तब वे भगवन्त गौतम ! मृगादेवीका उक्त वचन अवधार कर मुख [नाक] को वस्त्र बन्धा ॥ ४१ ॥ तब वह मृगावतीदेवी अपने मुख को भूमीगृह की तरफ से फिराकर पराङ मुखी हो भुमी गृह के द्वार खुल्ले किये, उसी वक्त उस में से दुर्गन्ध निकली, वह दुर्गन्ध यथादृष्टान्त-सर्पका मडा(मृतपुक शरीर)इत्यादि मडे सड जानेसे उस में से जैसी दुर्गन्ध निकलती है उस से भी अधिक दुर्गन्ध कही है॥४२॥तब वह मृगापुत्र बालक उस विस्तीर्ण अशनादि चारों आहार की सुगंध आने से, उस अशनादि चारों आहार में मूर्छित हुवा, उस अशनादि चारों प्रकार के आहार को खाने

+ नाक दको यह शब्द लज्जा स्पद होने से, मुख बंधो ऐसा कहा है. क्यों कि गंध को नाक ही ग्रहण करता है. नकिमुख.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

विपुलं असणं ४ आसएणं आहारेइ से खिप्पामेव विद्धंसेइ २ त्ता तओपच्छा पूयत्ताए सोणियत्ताए परिणमेइ, तंपियणं पूयंच सोणियंच आहारेइ ॥ ४३ ॥ तएणं भगवं गोयमं तंमियापुत्तं दारयं पासित्ता अयमेयरूवे अज्झत्थिए पत्थीए चिंतीए मणीगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहोणं इमेदारए पुरापोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पाडिकंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगंफल वित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ, णमे दिट्ठाणरगावा णेरइयावा, पच्चक्खं खलु अयंपुरिसे णरय पडिरूवियं वेयणं वेएई, तिकट्टु मियंदेविं आपुच्छइ२त्ता मियादेवीए गिहाओ पडिनिक्खमई २ त्ता मियग्गामं

अर्थ

लगा, खाते ही वह आहार विगडगया, विद्धंस कर पीप [राद] पने रक्त पने परिणमा, तब उस पीप रक्त रूप आहार को भी वह खा गया ॥ ४३ ॥ तब भगवन्त गौतम उस मृगा पुत्र कुमार को देखकर इस प्रकार अध्यवसाय प्रार्थना चिन्ता मनोगत संकल्प समुत्पन्न हुवा-अहो इति खेदाश्चर्य ! यह बालक पूर्व बहुत काले पहिले जन्मान्तर में दुश्चीर्ण-प्राणातिपातादि आचरन किये, उन अशुभ कर्म के कारन एसे पाप कर्म के बिपाक संचय किये जिस के अशुभ फल रूप वृत्ति भोगवता हुवा प्रत्यक्ष अनुभवता विचरता है, मैंने नरक और नेरीयेको तो प्रत्यक्ष नहीं देखे परंतु यह पुरुष प्रत्यक्षमें पापकेफल नरक जैसी वेदनावेदता देखा है. यों विचार कर मृगावंती देवीको पूछकर मृगावती देवी के घर से निकलकर मृगाग्राम के मध्य २ में होकर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णयरं मज्झं मज्झेणं निगच्छइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरं तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एव खलु भंते! अह तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियग्गामं णयरं मज्झं मज्झेणं अणुपविसामि. जेणेव मियादेविएगिहे तेणेव उवागए, तएणं साभियादेवी ममं एजमाण पासइ २ त्ता हट्ठं, तंचेव सव्वं जाव पूयंच सोणियंच आहारेइ, तएणं ममं इमे अज्झत्थिए पत्थीए चिंतीए मणोगएसंकप्पे समुप्पज्जित्ता-अहोणं इमे दारए पुरा जाव विहरइ, सेणं भंते! पुरिसे पुव्वभवे के आसी? किं णामेएवा किं

जहां श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे तहां आये, आकर श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को तीन वक्त हाथ जोड प्रदक्षिणावर्त फिराकर वंदना नमस्कार की, वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले-अहो भगवन्! मैं आपकी आज्ञासे मृगाग्राम नगर के मध्य२में हो जहां मृगावती देवीका घर तहां गया, तब मृगावती देवी मेरेको आता हुवा देखकर हृष्टतुष्ट हुई इत्यादि सब कथन कहदिया यावत् पीप रक्तपणे वह आहार परिणमा उसे भी वह खागया, तब मुझे इसप्रकार अध्यवसाय प्रार्थी चिंता मनोगत संकल्प उत्पन्न हुवा कि-अहो खेदाश्चर्य यह बालक पूर्व जन्मान्तर के संचित पाप के फल भोगमता विचर रहा है, अहो भगवान! वह पुरुष पूर्व भव में कौन था, क्या नाम था, क्या गोत्र था, किस ग्राम में अथवा नगर में रहता था, क्या खराब वस्तु अन्यकोदी, क्या

सूत्र

गोएवा कयरंसि गामंसिवा णयरंसिवा, किंवादच्चा किंवाभोच्चा किंवा समायरित्ता के-सिंवा पुरापोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं असुभाणं पावाणं कम्माणं फलवित्ति विसेसं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? ॥ ४४ ॥ गोयमाइ, समणे भगवं महावीरे गोयमं एवं वयसी-एवं खलु गोयमा ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं इहेव जंबूदीवे दीवे भारहेवासे सयदुवारे णामं णयरे होत्था, रिद्धत्थमिए समिद्धा वण्णओ तत्थणं सयदुवारे णयरे धणवती णामं रायाहोत्था वण्णओ, ॥४५॥ तस्सणं सयदुवारस्स णंयरस्स अदूरसामंते

अर्थ

अभक्ष खाया, क्या पाप समाचरन किये, कौन से जन्मान्तर में पुरातम् बहुत कालके दुश्चीर्ण प्रणाति पातादि दुष्टपने समाचारे, उसे प्रतिक्रमे नहीं प्रायःश्चित ले शुद्ध हुवा नहीं, वे अशुभ करनी के हेतू भूत पापकर्म सावद्य अनुष्ठान कर्म उस के अशुभ विपाक फल रूपवृत्ति जिस का प्रत्यक्ष अनुभव करतां भोगवता हुवा यह यहां विचर रहा है ? ॥ ४४ ॥ गौतम दिसे श्रमण भगवंत महावीर स्वामी गौतम स्वामी से यों कहने लगे-यों निश्चय हे गौतम ! उस काल उस समय में इसही जबुद्वीप में सोद्वार वाली शतद्वारा नामकी नगरी कही, वह नगरी ऋधिकर प्रधान तथा भूमिका आवासकर सुसोभित स्वचक्र परचक्र के भयरहित, धन धान्यकर पूर्णथी. तहां शतद्वारा नगरीमें धनपतिनामका राजा कोणिक राजा जैसाथा॥४५॥

दाहिण पुरत्थिमे दिसिभाए विजयवद्धमाणे णामं खेडेहोत्था, रिद्धत्थमिय वण्णओ ॥ ४६ ॥ तस्सणं विजयवद्धमाणे खेडस्स पंचगामसयाइं अभोएयावि होत्था ॥४७॥ तस्सणं विजयवद्धमाणे खेडे एक्काइ णामं रट्ठकूडेहोत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडिया-णंदे, ॥ ४८ ॥ सेणं एक्काइणामं रट्ठकूडे विजयवद्धमाण खेडस्स पंचण्हंगामसयाणं आहेवच्चं पोरवच्चं सामित्तं भट्टितं महतरगत्तं आणाईसर सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥ ४९ ॥ तएणं से एक्काइ रट्ठकूडे विजयवद्धमाण खेडस्स पंचगाम

उस शतद्वारा नगरी से बहुत दूर नहीं तैसे बहुत नजीक नहीं दक्षिण पूर्व के बीच अग्निकौन में विजय बृद्धमान नामक खेडा (धुलका कोट वाला) ग्राम था, वह भी ऋद्धि समृद्धिकर शोभित था॥४६॥उस विजय बृद्धमान खेडा के पीछे पांचसो ग्राम लगते थे, उसका भोग विजय बृद्धमान खेडा के अधिपति कोमिलता था ॥ ४७ ॥ उस विजय बृद्धमान खेडे में एकाइ राठोड-देशाधिकारी ठाकुर था, वह एकाइ अधर्मी यावत् कुकर्म करके ही आनन्दप्राप्त करता था॥४८॥ वह एकाइ राठोड विजय बृद्धमान खेड में लगते हुने पांचसो ग्रामका अधिपति(जिष्टिक)पना अग्रेसर(स्वामी)पना,(सेनापति)पना भरन पोषन करता पालता हुवा विचरताथा ॥४९॥ तब फिर वह एकाइ राठोड विजय बृद्धमान खेडा के पांचसो ग्राम का कर बढाता विशेष करलेता,

सूत्र

सयाइं बहुहिं करेहिय भारेहिय विद्धीहिय उक्कोडाहिय पराभवेहिय दिज्जेहिय भज्जेहिय कुंतेहिय लंछपोसेहिय, आलोवणेहिय पंथकोट्टेहिय उवीलेमाणे २ विहिंसेमाणे २ तज्जेमाणे २ तालेमाणे २ निद्धणेकरेमाणे २ विहरइ ॥ ५० ॥ तएणं से एक्काईरट्ठकूडे विजयवद्धमाण खेडस्स बहुणं राईसर जाव सत्थवाहाणं अण्णेसिंच बहुणं गामेल्लगपुरिसाणं

अर्थ

प्रचूर करलेता, कृष्णादि पाम से बहुत धनलेता, उस में भी प्रतिदिन कर वृद्धिकरता. लांचलेता लोगोंका पराभव करता, ऋण (करजा) दिया हुवा पीछा अधिकलेता, एकका दंड बहुत के सिर डालता (तथा कहता था की तेरे पास मेरा इस भवका व पर भवका ऋन है वह चुका) लांचलेकर चोरों का पोषन कर चोरी करता रास्ता लूंटकरता, दूसरेके पास करता, लोगोंचको धर्म से आचार से भृष्ट करता, तर्जना करता, चपेट मारता, स्वार्थ पूर्ण करने लाल पाल (खुशामद) करता, इत्यादि प्रकार से लोगोंको निर्धन करता हुवा दुःखी करता हुवा विचरता था॥५०॥और भी वह एक्काइ राठोड विजय बृद्धमान खेडे के बहुत से राजा युवराजा शेठ सार्थवाही प्रमुखो को और भी बहुत से ग्राम के पुरुषों को बहुत से कार्यों में घसीटता, सेंकडो कार्य जिन के पास करता, आलोच-सला करने में, गुह्य-निर्लज कार्य करने में, हरके वस्तु का निर्णय करने में, निश्चय के काम में, व्यवहार के काम में, सुना हुवा भी कहता मैं ने नहीं सुना है और विनासुना

सूत्र

बहुसु-कज्जेसुय कारणेसुय मंतेसुय गुज्झेसुय निच्छेसुय ववहारेसुय सुणमाणे भणइ नसुणेइ असुणमाणे भणइ सुणेइ एवं पस्समाणे भासमाणे गिण्हमाणे जाणमाणे ॥ ५१ ॥ तएणं से एक्काइरट्ठकूडे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारेसुय बहुपावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणमाणे विहरइ ॥ ५२ ॥ तएणं तस्स एक्काइयस्स रट्ठकूडस्स अण्णया कयाई सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलसरोगायंका पाउब्भूया, तंजहा-सासे, खासे, जरे, दाहे, कुच्छिसूले, भगंदरे, अरिसे, अजीरे, दिट्ठीसूले, मुद्धसूले, अरोए,

अर्थ

हुवा कहेता कि मैं ने सुना है, ऐसेही देखे हुए को नहीं देखा कहता है और बिना देखे हुवे को देखा कहता, बोला हुवा को नहीं बोला कहता और बिना बोले को बोला कहता है, लिया हुवा नहीं लिया और नलिये को लिया कहता था. यों हरेक कार्य में अपना मतलब साधते झूठ बोलता हुवा अन्य का धन ग्रहण करता था ॥ ५० ॥ तब वह एकाइ राष्ट्रकुड इस कुकर्मकर, इस मार्ग में प्रवृतिकर उक्त प्रकार पाप समाचरता हुवा बहुत खोटेकर्म क्लेशकारी कर्म उपार्जन करता हुवा विचरता था ॥ ५२ ॥ तब एक्काइ राठोड के शरीर में अन्यदा किसी वक्त एकही साथ सोलेरोग प्रगट हुवे, उन के नाम-१ श्वाश, २ खांसी, ३ ज्वर, ४ दाहा, ५ कुक्षीशूल, ६ भगंदर, ७ हरश (मस्सा) ८ आजीर्ण, ९ दृष्टीशूल, १० मस्तकशूल, ११ अरुचि, १२ आंखकीवेदना, १३ कानकीवेदना, १४ खुजली, १५ जलोदर, और

अक्खिवेयणा, कण्णवेयणा, कंडू, उदरे, कोढे, ॥ ५३ ॥ तएणं से एक्काइरट्ठकूडे सोलसहिं रोयातंकेहिं अभिभूएसमाणे कोडुंबिय पुरिसेसद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विजयवद्धमाणे सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर महापहेसु महया २ सद्देणं उघोसेमाणे २ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! एक्काइरट्ठकूडस्स सरीरगंसि सोलसरोयंका पाउब्भूया तंजहा-सासे खासे जाव कोडय, तंजोणं इच्छइ देवाणुप्पिया ! विज्जोवा विज्जपुत्तेवा, जाणओवा, जाणपुत्तोवा, तेइच्छीयोवा, तेइच्छीय पुत्तोवा, एक्काइरट्ठकुडस्स एसिं सोलसण्हं रोगायंकाएणं एगमविरोगायंक उवसामित्तए तस्सणं

अर्थ

१६ कोड ॥५३॥ तब फिर वह एक्काइराठोड उन सोलहरोगांतक प्राणोंका नाशकरे ऐसे उन से पराभवपाया हुवा, कोटुम्बिकआज्ञा-कारी पुरुषको बोलाया, बोलाकर यों कहने लगा-हे देवानुप्रिया! तुम आवो विजय वृद्धमानखेडमें श्रृगाटकपंथ में, त्रीपंथ में, चौरास्ते में, महापंथ-राज्यपंथ में महाशब्दकर उदघोषनाकरो, उद्घोशना करते हुवे ऐसा कहाकि-अहो देवानुप्रिया ! एक्काइराठोड के शरीर में सोले रोगांतक प्रगट हुवे है, उन के नाम-श्वाश खांसी यावत् कोड, इस लिये अहो देवानुपिया ! वैद्य वैद्य के पुत्र, वैद्यकशास्त्र के जान, वैद्यक शास्त्र के जानने वाले के पुत्र, औषधीवाले, औषधीवालों के पुत्र, जोकोइ इच्छताहो वह एक्काइराठोड के शरीर में के इन सोलेरोगों में का एक भी रोग उपशमावेगा-गमावेगा उसको एक्काइराठोड

सूत्र

एक्काइरट्ठकूडे विपुलं अत्थसंपयाणं दलसइ, दोच्चंपि तच्चंपि उग्घोसेह २ त्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥ तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ॥ ५४ ॥ तएणं से विजयवद्ध-माणखेडंसि इमंएयारूवाइं उग्घोसणं सोच्चा णिसम्म बहवे विज्जया६ सत्थकोस हत्थगया सएहिं २ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता विजयवद्धमाण खेडं मज्झंमज्झेणं जेणेव एक्काइ रट्ठकू-डस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एक्काई रट्ठकूडस्स सरीरयं परामुसइ २ त्ता तेसिं रोगाणं नियाणं पुच्छइ २ त्ता, एक्काई रट्ठकूडस्स बहुहिं अब्भंगाहिय, उवट्टणाहिय, सणहं पाणेहिय, वम णेहिय विरेयणेहिय, सांचेगहिय, अवदहणेहिय, अणुवासणाहिय, वत्थि कम्मेहिय, निरुहेहिय,

अर्थ

बहुत धन सम्पदा देवेगा, इस प्रकार दो तीन वक्त उद्‌गोपना करो, कर के यह मेरी आज्ञापीछी मेरेसुंपरत करो. तब वह कुटुम्बिक पुरुष कहे मुजब उद्‌घोषना करके आज्ञा पीछे सुपरत करी ॥ ५४ ॥ तब उस विजय बृद्धमान खेडा के रहने वाले उक्त प्रकार की उद्‌घोषना श्रवण कर अवधार कर, बहुत वैद्य वैद्य के पुत्रों यावत् औषधी वाले के पुत्रों वेदिक शस्त्रों का कोर्शी-बक्स हाथ में ग्रहण कर अपने २ घर से निकले. निकलकर विजय बृद्धमान खेडे के मध्य मध्य में होकर जहां एक्काइ राठोड का घर था तहां आये, तहां आकर एक्काइ राठोड के शरीर को नाडी आदि अंग परिक्षालिये ग्रहण किया, उस रोग का निदान-उत्पन्न होने का कारन पूछा, एक्काइ राठोड के शरीर को बहुत प्रकार के तैलका मर्दन कराया, उगटना(पीठी)कराया,

सूत्र

सिरावेहेहिय, तच्छणेहिय, पच्छणेहिय, सिरवत्थीहिय, तप्पणेहिय, पुडपागेहिय, छल्लीहिय, मूलेहिय, कंदहिय, पुप्फेहिय, पत्तेहिय, फलेहिय बीएहिय, सिलियाहिय, गुलियाहिय, ओसहेहिय, भेसयहिय, इच्छंति, तेसेणिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगातंकं उवसामित्तए णो चेवणं संचाएइ उवसामित्तए ॥५५॥ तएणं ते बहवे विज्जोवा विज्ज-पुत्तोवा जहा णो संचाएइ तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमविरोगायंकं उवसमित्तए

अर्थ

उकालकर पानीपाया, वमन कराया, विरेचन(जुलब) कराया, औषधीयों का सींचन किया, सेवन कराया, बहुत प्रकार के औषध के पानी से स्नान कराया, यंत्रादि के योग से शरीर का मर्दन कराया, चर्म की वत्ती (नली) औषधी से भरकर गुदा में प्रक्षेप की, केइ वस्तु सुघाई, धूंवादिया, छुरी आदि शस्त्रकर त्वचा-चमडी का छेदकिया, पाछनादि से मांसादि काटे, मृगचर्मादि से बन्धे, शरीर के छिन्द्रों में तैलपुरे, उष्ण तेलादि शरीर पर छांटे, लीम्बादि के पत्तेसे सिकताव किया, अनेक प्रकार की वनस्पतिकी छालकर मूलकर कंदकर फुलकर पानकर फलकर बीजकर, चिरायतादि कापानीकर गोली त्रिगडा प्रमुख, औषध मिले हुवे द्रव्यकर, भेषध प्रत्येक अलग २ द्रव्य कर, जो जो जिसने चहाया वह २ उपाय किया, परन्तु उनसोले रोगोंमें का एकभी रोग उपशमासके नहीं॥५५॥तब वे वैद्य वैद्य केपुत्र इत्यादि जब समर्थ नहीं हुवे उन सोल रोग मे का एक ही रोग उपशमाने, तब थकगये अतीही थकगये, जिस दिशा से आये थे उस दिशा पीछे

सूत्र

ताहे संता तंता परितंता, जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया ॥ ५६ ॥ तएणं एक्काइ विजेवि पडियाक्खिए परियारगं परिच्चए निव्विणो सहभिसज्जे सोलसरोगायंके अभिभूय समाणे, रज्जेय रट्ठेय जाव अंतेउरेय मुच्छिए, रज्जंच आसायमाणे पत्थेमाणे पींहेमाणे अभिलसमाणे अट्टदुहट्ट वसट्टे अड्ढाइजाइं वाससयाइं परमाऊ पालइ २त्ता, कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिइएसु णरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे ॥ ५७ ॥ सेणं तओ अणंतरं उवट्टित्ता इहेव मियग्गामे णयरे विजयखत्तियस्स मियादेविएकुच्छिसि पुत्ताए उववण्णे ॥ तएणं तीसे मियादेवीए

अर्थ

गये ॥ ५६ ॥ तब एक्काइ राठोड वैद्यादि को हार कर पीछे गये जाने, सार संभाल करने वाले भी थके जाने, औषधोपचार से भी थके, तब उन सोले रोगों की प्रबल वेदना कर अति ही पीडित हुवा, राज्य में देश में यावत् अन्तेपुर में अत्यन्त मूर्च्छित बना हुवा राज्यादिको अस्वादना-प्रार्थता-चहाता हुवा, अभिलाषा करता हुवा आर्तध्यान रौद्रध्यान ध्याता-शारीरिक मानसिक दुःखकर अति दुःखी हुवा, उस वेदना के वशमें पडा, अढाइसो (२५०) वर्ष का परम उत्कृष्ट आयुष्य का पालनकर, काल के अवसर में काल पूर्णकर इस प्रथम रत्न प्रभा पृथ्वी में उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति वाला नरक में नेरीया उत्पन्न हुवा ॥ ५७ ॥ वह तहां से अन्तर रहित निकलकर इस ही मृगाग्राम नगर में विजय क्षत्री राजा की मृगावती रानी की

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सरीर वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव जलंता, जप्पभिइंचणं मियापुत्तदारए मियादेवीए कुच्छिसि गब्भत्ताए उववण्णे तप्पभिइंचणं मियादेवी विजयस्सखत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जायाविहोत्था ॥ ५८ ॥ तएणं तीसे- मियादेवीए अण्णयाकयाइं पुव्वरत्तावरतकालसमयंसि कुटुंब जागरियाए जागर- माणीए इमे अज्झत्थिए २ समुप्पन्ने-एवं खलु अहं विजयखत्तियस्स पुव्विं इट्ठा २ धेज्जा विसासिया अमणुयीआसी ; जप्पभिइंचणं ममं इमेगब्भे कुच्छिसि गब्भत्ताए उववण्णे तप्पभिइंचणं विजयस्स खातियस्स अहं अणिट्ठा २ जाव अमणामा जायावि

अर्थ

कूक्षी में पुत्रपने उत्पन्न हुवा, तब मृगावती देवी के शरीर में वेदना प्रगट हुइ, वह वेदना अति उज्वल जाज्वल्यमान सहन करना अतिदुक्कर॥ जिस दिन से मृगावती के कूक्षी में गर्व उत्पन्न हुवा था उस दिन से मृगावती देवी विजय क्षत्री राजा को अनिष्ट लगने लगी, प्रीति का नाश हुवा, मन को अनगमती लगी, मन को सुहाती नहीं, ॥ ५८ ॥ तब मह मृगावती देवी अन्यदा किसी वक्त आधी रात्रि में कुटुम्ब जागरना जागती हुइ इस प्रकार अध्यवसाय उत्पन्न हुवा—यों निश्चय में विजय क्षत्री राजा को पहिले इष्टकारी प्रियकारी मनोज्ञ थी मेरे नाम को वे हृदय में धारन करते थें, में उन को विश्वास पात्र थी, बल्लभथी, परन्तु जिस दिन से मेरे यह गर्भ कूक्षी में उत्पन्न हुवा है उस दिन से विजयक्षत्री राजा को में अनिष्ट

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

होत्था; नेच्छइणं विजए खात्तिए ममं णामंवा गोयंवा गिण्हित्तए किमंगपुणं दंसणंवा परिभोगंवा; तं सेयं खलु ममं एयं गब्भं बहुहिं गब्भसाडणाहिय, पाडणाहिय, गालणाहिय मारणाहिय, साडित्तएवा पाडित्तएवा गालित्तएवा मारित्तएवा, एवं संपेहेइ २ त्ता बहुणि खाराणिय, कडूयाणिय, तूवराणिय, गब्भसाडणाणिय, पाडणाणिय, गालणाणिय, मारणाणिय खायमाणी पियमाणी इच्छइ, तंगब्भं साडित्तएवा पाडित्तएवा गालीतएवा मारित्तएवा, णो चेवणं से गब्भे सडंइवा पडइवा गलइवा मरइवा ॥ तएणं सा मिया देवी जाहे णो संचाए तंगब्भं साडत्तएवा पाडत्तएवा गालेत्तएवा मारित्तएवा तहेव

अर्थ

अप्रिय अमनोज्ञ हुइ हूं यावत् मन में भी अच्छी लगती नहीं हुं, विजय क्षत्रीराजा मेरा नाम गोत्रसुनना भी चहाते नहीं हैं, तो मुझे आंखों से देखना यावत् भोगोपभोगना तो दूरहीरहा, इसलिये मुझे श्रेयकारी है कि मैं इस गर्भ को औषधोपचार करके सडावुं पडावुं गलावुं मारू, जिस प्रकार यह गर्भ सडे पडे गले मरे ऐसा उपचार करूं, इस प्रकार विचार कर अनेक प्रकार के क्षारे कडुवे तूर इत्यादि गर्भपात की औषधीयों खाती हुई पीती हुई इच्छने लगी की यह गर्भ सडो पडो गलो मरो, परन्तु वह गर्भ किसी भी उपचार कर सडा नहीं पडा नहीं गला नहीं मरा नहीं ॥ ५८ ॥ तब उस मृगावती देवी का उस गर्भ को सडाने पडाने गालने मारने का कुछ भी उपाय चला नहीं, तब मन में अत्यन्त खेदित हो दुःख धारन करने लगी.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

संता तंता परितंता अकामिया अवसयंव। तंगब्भं दुहं दुहेणं परिवसइ ॥५९॥ तस्सणं दारगस्स गब्भइगयस्स चेव अट्ठनालीओ अब्भितर पवाहाओ, अट्ठनालीओ बाहिरप्पवहा- ओ, अट्ठपूयप्पवहाओ, अट्ठसोणियप्पवहाओ, दुवे २ कण्णंतरेसु दुवे २ अक्खिइरेसु, दुवे २ नक्कंतरेसु दुवे २ धमाणिअंतरेसु अभिक्खणं २ पूयंच सोणियंच परस्सवमाणीओ २ चिट्ठंति ॥ ६० ॥ तएणं तस्स दारगस्स गब्भगयस्स चेव अग्गिएणामं वाही पाउब्भूए, जेणं सेदारए आहारेइ सेणं खिप्पामेव विद्धंसंसेमागच्छइ २ त्ता, पूयत्ताएय, सोणियत्ताएय

अर्थ

अभिलाषा रहित विना मन. परवशपने उस गर्भ को दुःख से निर्वाहने लगी ॥ ५९ ॥ तब उस बालक को उस गर्व अवस्था में से ही आठ नाडीयों के शिरासे अभ्यन्तर [शरीर के अन्दर] रुधीर बहने लगा, आठ नाडीकी शिरा से शरीर के बाहिर रुधीर बहने लगा, यों १६, आठ नाडी पीप (राध) की अन्दर बहने लगी, और आठ नाडी पीप की बाहिर बहने लगी, यों ३२, दो दोनाडी दोनो कान में, दो दो नाडी दोनों आंखोंमें, दोदो नाडी नाकमें यों १६, सब ४८ नाडायों वारम्वार पीप रक्तसे पूरित हो बहने लगी॥६०॥तब उस बालकको गर्भ अवस्था मे सेही अग्निरोग (भस्माग्नि) नाम का रोग उत्पन्न हुवा उस रोगकर वह बालक जिस वस्तु का आहार करै वह आहार तत्काल विद्धंस हो जावे, विद्धंशपाकर, पीप (राध) पने रक्तपने

सूत्र

परिणमइ, तं पियसे पूयंच सोणियंच तं आहारेइ ॥ ६१ ॥ तएणं सा मियादेवी अण्णयाकयाइ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारयं पयाया-जाइअंधे जाव आगितिमित्ते ॥६२॥तएणं सा मियादेवी तं दारयं हुंडं अंधारूवं पासइ २त्ता भीया ४ अम्माधाइ सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी-गच्छहणं देवाणुप्पिए!तुमं एयंदारगं एगंते उक्करुडिया उज्झाडि॥ ६३ ॥ तएणं सा अम्माधाइ मियादेवीए तहत्ति, एयमट्ठं पडिसुणेइ २त्ता जेणेव विजएखत्तिए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल परिग्गहियं जाव एवं वयासी-एवं खलु सामी ! मियादेवी णवण्हं जाव आगितिमित्ते, तएणं सामियादेवी तं हुंडं

अर्थ

परिण में,क्षुधा के प्रबलता से उस पीप रक्त को भी वह आहार कर जाने लगा ॥६१॥तब फिर मृगावती रानी अन्यदा नव महीने प्रतिपूर्ण होने से कुमार का जन्मदिया, बालक जाति अन्ध अङ्गोपाङ्ग रहित यावत् उस के इन्द्रियों के आकार मात्र देखाते थे ॥ ६२ ॥ तब वह मृगावती रानी उस मांस की लोथ समान इन्द्रिय रहित उस बालक को देखकर डरगइ, त्रास पाइ, भय भीत हुइ, उस वक्त अपनी धायमाता को बोलाकर यों कहने लगी- हे देवानुप्रिया ! तुम जावो इस बालक को एकान्त उकरडे पर डाल देवो ॥६३ ॥ तब वह धायमाता मृगावती देवी का उक्त कथन प्रमाणकर जहां विजय क्षत्री राजा थे तहां आई, आकर दोनों हाथ जोड कर मस्तकपर चढाकर यावत् यों कहने लगी-हे स्वामी ! मृगावती रानी नव महीने प्रतिपूर्ण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अंधारूवं पासइ २ त्ता भीया ४ ममं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छणं तुमं देवाणुप्पिए ! एयं दारयं एगंत उक्करुडियाए उज्झाहिं, तं संदिसहणं सामी ! तं दारगं अहं एगंते उज्झामि? उदाहु मा ॥ ६४ ॥ तएणं से विजए, तीसे अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, तहेव ससंभंते उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेता जेणेव मियादेवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तंमियादेविं एवं वयासी- देवाणुप्पिए ! तुम्म पढमं गब्भे, तं जइणं तुमं एयंदारगं एगंते उक्करुडियाए उज्झामि, तोणं तुम्मं पया णोथिरा भविस्सइ, तेणं तुम्मं एयंदारगं रहस्सियगंसि भूमिघरंसि रहस्सिएण भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी २ विहरामि, तोणं

अर्थ

हुवे बालक प्रसवा है, वह बालक जन्मान्ध सर्व इन्द्रियों रहित है. उस के इन्द्रिय के आकार मात्र देखाते हैं, तब मृगावती देवी उस हुंड मांस की लोथ जैसे बालक को देखकर डरगइ त्रासपाइ, मेरे को बोलाकर यों कहने लगी-हे देवानुप्रिया तुम जावो इस बालक को एकान्त उकरडी ऊपर डाल दो, इसलिये हे स्वामी आपकी आज्ञा चहाती हुं उस बच्चे को मैं एकान्त उकरडी पर फेंकूया नहीं फेंकूं, कहिये ? ॥ ६४ ॥ तब विजय क्षत्रीराजा उस अम्माधाइ के पास उक्त वचन श्रवनकर वैसे ही संभ्रांत घबराया हुवा शीघ्र उठा खडा हुवा, जहां मृगावती देवी थी तहां आया, आकर मृगावती देवी से ऐसा कहने लगा-हे देवानुप्रिया ! तुमारा यह प्रथम गर्भ है, जो तुम इस बालक को एकान्त उकरडी पर डालोगे तो आग को तुमारे संतान

सूत्र

तुम्मं पया थिरा भविस्सइ॥ ६ ५॥तएणं सा मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ त्ता, तंदारगं रहस्सिय भूमिघरं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी विहरइ ॥ ६ ६॥एवं खलु गोयमा! मियापुत्तदारए पुरापोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणे विहरइ॥ ६ ७॥ मियापुत्तेणं भंत ! इओ कालमासे कालंकिच्चा कहिं गमिहिंति कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! मियापुत्ते दारए बत्तीसं वासाइं परमाऊ पालइ २ त्ता कालमासे कालंकिच्चा इहेव जंबुद्दीवे २ भारहवासे वेयड्डगिरिपाइमूले सीहकुलंसि सीहत्ताए पच्चायाहिंति,

अर्थ

स्थिर नहीं होवेगा, इसलिये तुम इस पुत्रको न्हाखोमत, परंतु इस को तुम छिपाकर भूमीघर में गुप्त पने रक्खकर आहार पानी से पोषती हुइ विचरो कि जिस से आगे तुमारे संतान स्थिरी भूत होवे ॥ ६५ ॥ तब वह मृगावती रानी विजय क्षत्री राजा का उक्त वचन तहत प्रमाण कर सविनय श्रवणकर अवधारकर उस बालक को भूमीघरमें प्रच्छन्नपने रखकर आहार पानी से पोषती हुइ विचरने लगी ॥६६॥ हे गौतम ! इस प्रकार मृगापुत्र कुमार पूर्वभव में बहुत कालके संचित किये पाप के दुर्ध्विर्ण खराब फल को भोगवता हुवा विचर रहा है॥६७॥ अहो भगवान! यह मृगापुत्र बालक यहांसे कालके अवसरकालपूर्ण करके कहां जावेगा कहां उत्पन्न होवेगा? हे गौतम मृगापुत्र बालक बत्तीस वर्षका उत्कृष्ट आयुष्यका पालनकर कालके अवसर काल पूर्ण कर इस वैताड पर्वत के पास सिंह के कुलमें सिंहपने उत्पन्न होगा, वह सिंह अधर्मी पापिष्ट यावत् सहासिक क्रूरर

अर्थ

सेणं तत्थसीहे भविस्सइ, अहाम्मिए जाव साहस्सीए. बहुपावं जाव समाज्जिणइ २ त्ता कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए उक्कोसं सागरोवमं जाव उववजेहिंति, सेणं तओ अणंतरं उवट्टित्ता सिरीसिवेसु उववज्जहिंति, तत्थणं कालंकिच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसिया तिण्णि सागरोवमाइं, सेणं तओ अणंतरं उवट्टित्ता पक्खीसु उववज्जइ, तत्थणं कालंकिच्चा तच्चाए पुढवीए सत्तसागरोवम, तओ सीहेसु, तयाणं तरंचणं चउत्थीए पुढवीए, उरगो, पंचमी, इत्थीओ, छट्ठीए, मणुओ. अहेसत्तमाए, तओ अणंतरं उवट्टित्ता से जाइं इमाइं जलयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणियाणं, मच्छ कच्छभ-

सूत्र

होगा, वहां बहुत पापका उपार्जन करेगा, वहांसे कालपूर्ण करके इस रत्नप्रभा पहिली नरकमें उत्कृष्ट एक सागरोपमकी स्थिति वाला नेरइया होगा, तहां से अन्तर रहित निकलकर नकुलपने उत्पन्न होवैगा, वहांसे कालपूर्ण कर दूसरी नरक में उत्कृष्ट तीन सागरोपमकी स्थिति पावेगा, तहां से अन्तर रहित निकलकर पक्षी में उत्पन्न होगा, तहां से काल पूर्णकरके तीसरी नरक में सात सागरोपमकी स्थिति पावेगा, तहां से निकलकर सिंह होवेगा. वहां से निकल चौथी नरकमें दश सागरस्थिति पावेगा, फिर सर्प होगा, फिर पांचवीनरकमें सतरा सागरोपमस्थिति पावेगा फिर स्त्री होगा, फिर छठी नरक में बाइस सागरोपमस्थिति पावेगा फिर मनुष्य होगा, फिर सातवी नरक में तेतीस सागरोपमस्थिति पावेगा, वहां से अन्तर रहित निकल कर जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय होगा, यों मच्छ, काछवा,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

गाहा-मगर-सुसुमारादीणं अद्धतेरस जाइ कुलकोडीजोणि पमुह सयः हस्साइं, तत्थणं एगमेगंसि जोणिविहाणंसि अणेगसयसहस्स खुत्तो उद्दाइ २ त्ता तत्थेवभुज्जो २ पच्चायाइस्सइ; सेणं तओ उवट्टित्ता एवं चउप्पएसु, उरपरिसप्पेसु, भुयपरिसप्पेसु, खहयरेसु, चउरिंदिएसु, तेइंदिएसु, वेइंदिएसु, वणप्फइकडुयरुक्खेसु कडुयदुद्धिएसु; वाऊ-तेऊ-आऊ-पुढवि अणेगसहस्स खुत्तो ॥ ६८ ॥ सेणं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता सुपइट्ठपुरे गोणत्ताए पच्चायाहिंति, सेण तत्थ उमुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते अण्णयाकयाइं पढमापाउसंमि गंगाए महाणईए खलीणमट्टियं खणमाणे तडीए पल्लिए

अर्थ

ग्रह,मगर,सुसुमार आदिक जलचर जीवोंकी साढीवारेलाख कुलकोडी में उत्पन्न होगा,तहां एकेक योनी के भेद उस में अनेक सोहजार (लाखों) वार जन्म धारन कर कर मरेगा, तहां २ फिर २ उत्पन्न होवेगा, वहां से निकल कर चौपदों में, उरपर सर्प में, भुजपर में, ऐसे ही पक्षीयों में,ऐसे ही चौरिन्द्रिय तेन्द्रिय बेइन्द्रिय, वनस्पति में, कडवे कंटाले वृक्षों में,वायु में तेऊ-अग्नि में पृथवी में,यों छही काय की सर्व योनीयों में अनेक लाखवार मर २ कर तहां २ ही पीछा उत्पन्न होगा ॥६८॥ फिर तहां से अन्तर रहित निकलकर सुप्रतिष्ठ नगरमें बैल (सांड) होवेगा, तब बाल्या वस्थासे मुक्त हो यौवन अवस्था को प्राप्त होवेगा, तब प्रथम की वर्षाद ऋतु में गंगानदी के तटकी मृति का शृंग से खोदता हुवा वह तट टूटकर ऊपर पडेगा, जिस से मृत्युपाकर,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

समाणे कालंगए, तत्थेव सुपइट्ठपुरे णयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ, सेणं तत्थ उमुक्कबालभावे जाव जोव्वणगमणुपत्ते तहा रूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा-णिसम्म मुंडेभवित्ता, आगाराओ अणगारियं पव्वइस्सई॥सेणं तत्थ अणगारे भविस्सई, इरिया समिए जाव बंभयारी, सेणं तत्थ बहुइं वासइं सामण्ण दरियागं पाउणित्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालंमासे कालंकिच्चा सोहम्मकप्पे देवताए उववज्जि-हिंति, सेणं तओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहेवासे सेजाइं कुलाइं भवंति अड्ढइं

अर्थ

तहां ही सुप्रतिष्ट नगर में शेठ के पुत्रपने उत्पन्न होगा, तहां बाल्य अवस्था से मुक्त होकर तथा रूप स्थविर आचार्य के पास धर्म श्रवण करेगा अवधारेगा यावत् गृहस्थावास का त्यगकर मुण्डित हो-अणगार साधु बनेगा ॥ वह साधु वहां इर्यासमिति आदि पांच समिति समिता तीन गुप्ति गुप्ता यावत् ब्रह्मचार्यादि साधु के गुन युक्त बहुत वर्ष साधु पना पालकर आलोचना प्रतिक्रमना निन्दना ग्रहना कर शुद्ध हो, समाधी परिणाम से काल के अवसर काल पूर्णकर सौधर्म देवलोक में देवता होवेगा, तहां से अन्तर रहित चवकर महा विदेह क्षेत्र में उत्तम कुल में जन्म धारन कर स्मृद्धिवंत जैसा उववाइ व रायप्रसेनी सूत्र में दृढ प्रतिज्ञा कुमरका कथन कहा है तैसा होकर बहुतर कलाका अभ्यसकर कर यावत् दीक्षा लेकर करणी कर कर्म क्षय

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

जहा दढपइण्णे, सव्ववत्तव्वया कालाओ जाव सिज्झिहिंति ॥ ६९ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, त्तिबेमि ॥ दुहविवागाणं पढमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ १ ॥ *

अर्थ

कर सिद्ध होगा बुद्ध होगा मुक्त होगा निर्वाण पावेगा सब दुःख का अन्तःकरेगा॥६९॥यों निश्चय हे जम्बू! श्रमण भगवंत महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोने दुःख विपाक के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ कहा, तैसा मैंने तेरे से कहा ॥ इति मृगा पुत्र का प्रथम अध्ययन समाप्तम् ॥ १ ॥ ०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

※ द्वितीय-अध्ययनम् ※

सूत्र

जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चसेणं भंते ! अज्झयणस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपतेणं केअट्ठे पण्णत्ते ? ॥१॥ तएणं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू! तेणंकालेणं तेणंसमएणं वाणीयगामे णामं णयरे होत्था, रिद्धत्थिमिय ॥ २ ॥ तस्सणं वाणियगामस्स नगरस्स उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए दुईपलासे णामं उज्जाणेहोत्था, तत्थणं दुइपलासे मुहमस्स जक्खस्स जक्खायतने होत्था वण्णओ ॥३॥ तत्थेणं वाणियगामे

अर्थ

यदि अहो भगवान ! श्रमण भगवंत महावीर स्वामी यावत् मुक्ति पधारे उनोने प्रथम अध्ययन का उक्त अर्थ कहा, तो अहो भगवान! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति पधारे उनोने दुःख विपाक के दूसरे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? ॥१॥ तब सुधर्मा स्वामी जंबूस्वामी से ऐसा बोले-यों निश्चय हे जंबू ! उसकाल उस समय में वाणिज्य ग्राम नाम का नगर था, वह ऋद्धि समृद्धिकर संयुक्त था ॥२॥ उस वाणिज्यग्राम नगर के ईशान कौन में द्युति पालास नाम का उध्यान (बाग) था, उस द्युति पालास उध्यान में सुधर्म यक्ष का यक्षायतन (मंदिर) था, पूर्ण भद्र जैसा वर्णन् योग्य ॥ ३ ॥ उस वाणिज्यग्राम नगर में मित्र नामका राजा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

मित्तेणामं रायाहोत्था ॥ तत्थणं मित्तस्सरण्णो सिरीनामंदेवी होत्था वण्णओ ॥ ४ ॥ तत्थणं वाणियग्गाम णयरे कामज्झयाणामं गणियाहोत्था, अहीण जाव सुरूवा, बावत्तरीकला पंडिया, चउसट्ठि गणिया गुणोववेया, एकूणतीसे विसेसे रममाणी, एक्कतीसरइगुणप्पहाणा, बतीस पुरिसोवयार कुसला, णवंगसुत्त पडिबोहिया, अट्ठारस्सदेसी भासाविसारया, सिंगारागार चारुवेसाइ, गीयरइ गंधव्वणट्ट कुसला, संगयगय भाणिय विहिय विलासललिय संलावणिउणजुत्तो वयारकुसला, सुंदर-थण-जहण-वयण-कर-

अर्थ

राज्य करता था, उस मित्र राजाकी श्री देवीरानी थी, उसका वर्णन धारनी रानी जैसा जानना ॥४॥ उस वाणिज्य ग्राम नगर में कामद्धजा नाम की गणिका (वैश्या) रहती थी वह पांचोंइन्द्रिय अङ्गोपाङ्गकर पूर्ण सुरूपवती थी. वह पुरुष की ७२ कला तथा स्त्रीकी ६४ कलकी जान थी, ६४ वैश्या के गुणयुक्त थी, २९ रति (विषय) के गुन में रमन करती थी, ३१ रति के गुन प्रधान भोगवती थी, ३२ पुरुष के उपचार जिस से पुरुष वश्य होवे उस में पण्डित थी, ९ अंग (२ कान, २ आंख, २ नाक, १ जिव्हा, १ त्वचा और १ मन इन को) सुते हुवे को जाग्रत कर सकती थी, १८ देश की भाषा बोलने में विशारद [पडिंत] थी, श्रृंगार का आगार [घर] समान चारू-मनोहर वेश की धारन करने वाली थी, गीत गाने में रती (काम) सेवन में गन्धर्ग कला नृत्य कला में बडी कुशल थी, संगित गतिकी जानने वाली, विधि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

चरण-लावण्ण-विलास कलिया, ऊसियधया सहस्सलंभा, विदिण्ण-छत्त चामर बाल-वेयणिकाया, कणीरहप्पयायाहोत्था, बहुणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महतरगत्तं आणाइसर सेणावच्चं करेमाणी पालेमाणी विहरइ ॥ ५ ॥ तत्थणं वाणियग्गामे विजयमित्ते णामं सत्थवाहे परिवसइ, अड्डे॥ ६ ॥ तस्सणं विजय मित्तस्स सुभद्दाणामं भारिया होत्था, अहीणा जाव सुरूवा ॥ ७ ॥ तस्सणं विजयमित्तस्स

अर्थ

साहिक कहने वाली विविध प्रकार के विलास, ललित वचन बोलना इनकर युक्त थी, लौकीक व्यवहार साधने में बडी कुशल थी, उस के शरीर के अवयव स्तन जंघन मुख हाथ पांव, लावण्यता विलास कालित पनाकर अतिसुन्दरथे, जिस के घरपर ऊंची ध्वजा फरारा रहीथी, हजार दिनार (सुवर्ण मोहर) देनेवालेको अंगीकार करती थी, उसे छत्र चमर बाल वीजना—मोरछंग, करण का सहित रथ पालखी राजाने बक्षीस में दियेथे, वह बहुत हजार गणिका की मालकनी थी. सब का पालन करती अधिपतिपना करती अग्रेसरपना करती पोषकपना जेष्टिकापना आज्ञा मनाती ऐश्वर्यपना करती पालती विचरती थी ॥५॥ तहां वाणिज्य ग्राम नगर में विजय मित्र नामे सार्थवाही रहता था, वह ऋद्धिवंत था यावत् अपरामवित था ॥ ६ ॥ उस विजय मित्र सार्थवाही की सुभिद्रा नाम की भार्या थी, वह प्रतिपूर्ण अङ्गोपाङ्ग वाली यावत् सुरूपा थी ॥ ७ ॥ उस

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

पुत्ते सुभद्दाए भारियाए अत्तए, उज्झिए णामं दारए होत्था, अहीण जाव सुरुवा॥८॥ तेणंकालणं तेणंसमएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे परिसाणिग्गया रायावि निग्गया, जहा कुणिओ निग्गओ॥धम्मकहिओ परिसा राया पडिगया॥९॥तेणंकालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूइ जाव तेयलेसे, छट्ठं छट्ठेणं जहा पणत्तीए पढमं जाव जेणेव वाणियगामे तेणेव उवागच्छइ२त्ता वाणियगामे उच्चनीयमज्झिमाइंकुलाइं अडमाणे जणेव रायमग्गो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता

अर्थ

विजय मित्रका पुत्र भद्रा का आत्मज उज्झित नाम का बालक था, वह सर्व अंग पूर्ण रूपवंत था ॥८॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा आई जिस प्रकार कोणिक राजा आया, उस प्रकार, राजा भी आया, धर्मकथा कही परिषदा पीछी गइ, राजा भी पीछा गया ॥ ९ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के बडे शिष्य इन्द्रभूती नामे अनगार यावत् तेजो लेश्यावंत छठ २ (बेले २) पारना करते भगवती सूत्र में कहे मुजब प्रथम पोरसी में स्वध्याय की, दूसरी में ध्यान धरा, तीसरी पोरसी में भगवंत की आज्ञा लेकर भिक्षार्थ वाणिज्य ग्राम नगर में आये, वाणिज्य ग्राम नगर के ऊंच क्षत्री आदि नीच कृपणादि मध्यम वणिकादि के कुलों में फिरते हुवे जहां राज्य पंथ था तहां आये, वहां आश्चर्य कारक बनाव देखा—बहुत हाथी देखे, वे हाथीयों सन्नद्धा-पाखर युक्त मजबूत डोरीकर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तत्थणं बहवे हत्थीपासइ, सणद्धबद्ध वम्मियगुडिए उप्पीलिय कयत्थे उदामियघंटे णाणामणिरयणविविहगेवेज्जे, उत्तरकंचुइज्जे पडिकप्पिए, ज्झय पडागवर पंचामेल आरुढे, हत्थारोहे गहिया उहनहरेणए, अण्णेय तत्थ बहवे आसे पासई सणद्धबद्ध वम्मियगुडिए, आविद्धगुडे उसारिय पक्खरे उत्तरकंचुइय उचूलमूह चडावर चामर थासक परिमंडिय कडीए, आरुढ अस्सारोहे गहिया उप्पहरणे ॥ तेसिं चणं पुरिसाणं मज्झगयं एगंपुरिसं पासइ अवउडगबंधणं उक्खत्तकण्णनासं णेहतुप्पियगत्तं बज्झकर

अर्थ

जिन का पेट बन्धा हुवा था. बहुत घंटा युक्त, अनेक प्रकार के मणिरत्न जडित विविध प्रकार के आभरण युक्त, उत्तर कंचुक-होदा-अम्बारी युक्त, सर्व सायधोसे कलित, पंचरंगी, पताका ध्वजाओं ऊंची करी हुई है, जिस पर राज पुरुष हथीयारों (शस्त्रों) को धारन कर आरूढ हैं. और भी वहां बहुत घोडों की पंक्ति देखी—वे घोडे भी पाखर पाखरे हुवे हैं, बन्दनकर बने हुवे हैं, पाक्षर जिस पर रखा हुवा है, लगाम खेंचने से जिनका मुख ऊंचा हुवा है. जिन का पृष्ठ विभाग चामरकर आरोपा कर मण्डित है जिस पर सुभट स्वार हुवे हैं. और भी बहुत पुरुष (पायदलों) का लष्कर है, जिन्होंने धनुष्य बाण आदि अनेक प्रहरण शस्त्र धारन किये हैं. उन के मध्य में एक पुरुष देखा, वह उलटी मुस्कों से बन्धा हुवा है उस के कान नाक छेदन किये हैं, स्नेह कर जिस का शरीर चिकना हुवा है, बन्धन निमित्त हाथ कडियों पहनाइ है, चोर के योग्य

सूत्र

कडि जुयणियत्थं, कंठे गुणरत्त मल्लदामं चुण्णगुडियगायं चुण्णयं वज्झपाणीपीयं, तिलं २ चेव छिज्जमाणं, काकणिमंसाइं खावियं, तं णवीककरसएहिं हम्ममाणं अणेगणरणारीसं परिवुडे चच्चरे २ खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं इमं चणं एयारूव उग्घोसणं सुणेइ-णो खलु देवाणुप्पिया ! उज्झियदारगस्स केइराया रायपुत्तोवा अवरज्जइ, अप्प णो से सयाइं कम्माइं अवरज्जइ ॥१०॥ तएणं से भगवं गोयमं तं पुरिसं पासित्ता, इमे अज्झत्थिए ४-अहोणं इमे पुरिसे जाव णिरयपडिरूवयं वेयणंवेएसि त्तिकट्टु,

अर्थ

वस्त्र पहनाये हैं, गले में कणियर के फूल की माला डाली है, गेरू के रंग कर जिस का गात्र भरा है, जिस को अपने प्राण बहुत प्रिय हो रहे हैं, उस के शरीर का मांस तिल २ जितना छेदके-काटके उसको ही खिलाते हैं, उस को कर्कश वचन सुनाते हैं, बांसों के प्रहार कर मारते हैं, अनेक स्त्री पुरुष के परिवार से परिवरा हुवा बजार २ में खडा करके फूटा हुवा ढोल बजाते हैं, १डह बजाते हुवे इस प्रकार उद्घोषकरते हैं कि-हे देवानुप्रिय ! इस उज्झित कुमार पर राजा का राज पुत्रादि किसी का भी अपराध नहीं है, परंतु यह अपने किये हुवे कर्मों करही दुःख पारहा है ॥ १० ॥ तब वे भगवंत गौतम स्वामी उस पुरुषको देखकर इस प्रकार विचार करने लगे—अहो इति खेदाश्चर्य ! यह पुरुष प्रत्यक्ष नरक जैसी वेदनाका अनुभव कररहा है, यों विचार कर वाणिज्य ग्राम नगर के ऊंच नीच कुल में यावत् भिक्षार्थ फिरते हुवे अपनी

सूत्र

वाणियगामे णयरे उच्चणीयकुले जाव अडमाणे अहापज्जत समुदाणं गण्हइ वाणिय गामं णयरं मज्झं मज्झेणं जाव पडिदंसेइ, समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदिता नमंसिता एवं वयासी-एवं खलु अहं भंते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे वाणियगामं जाव तहेव निवेएइ, सेणं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसि जाव पच्चणुब्भवमाणे विहरई ? ॥ ११ ॥ एवं खलु गोयमा ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहेवासे हत्थिणाउरे णामं णयरे होत्था, रिद्धत्थमिय, ॥ १२ ॥ तत्थणं हत्थिणा

अर्थ

मर्याद प्रमाणे समुदानी-बहुत घरों से भिक्षा लेकर वाणिज्य ग्राम के मध्य मध्य में होकर निकलकर यावत् भगवंत के पास आये, आहार पानी बताया, देखाकर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर यों कहने लगे-हे पुज्य ! मैं आपकी आज्ञा लेकर वाणिज्य ग्राम नगर में भिक्षार्थ गया था, वहां बन्धेबन्धा हुवा पुरुषको देखा इत्यादि सब देखाहुआ वृतान्त निवेदन किया, और पूछने लगे कि-हे अहो भदंत ! वह पुरुष पूर्व भव में कौन था? यावत् जो नरक जैसा दुःख भोगव रहा है ? ॥ ११ ॥ भगवंत कहते हैं-यों निश्चय हे गौतम ! उस काल उस समय में इस ही जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में हस्तिनागपुर नाम का नगर ऋद्धि समृद्धिकर सम्पन्न था ॥ १२ ॥ वहां हस्तिनागपुर नगर में सुनन्द नामे राजा राज्य करता था,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

हत्थिणायरे सुदंसणेणामं रायाहोत्था, महिया हिमवंत मलय मंदर ॥ १३ ॥ तत्थणं हत्थिणाउरे णयरे बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महंएगे गोमंडवेहोत्था, अणेग खंभसय सण्णिविट्ठे. पासाईए ४ ॥ १४ ॥ तत्थणं बहवे णयरे गोरुवा सणाहाय अणाहाय णयरगावीउय, णयरबलीवद्दाय णयरपडियाउय, णयरमहिसिउय णयर वसभाय, पउर तण पाणिय णिब्भया णिरुव्विग्गा, सुहं सुहेण परिवसइ ॥ १५ ॥ तत्थणं हत्थिणाउरे भीमणाम कूडग्गाहेहोत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ॥ १६ ॥ तस्सणं भीमस्स

अर्थ

वह राजा महा हिमवंत पर्वत समान मलयाचल तथा मेरु पर्वत समान था ॥ १३ ॥ उस हस्तिनागपुर नगर के मध्य में तहां एक महा बडा मंडप (गोशाला) था, वह अनेक स्थम्भोंकर वेष्टित चित्तको प्रसन्नकारी देखने योग्य अभीरूप, प्रतिरूप था ॥ १४ ॥ उस गोशाला में बहुत नगर के चौपद-पशु सनाथ-मालको के, अनाथ-बिनामालको के नगर की गाइयों, नगर के बैलों, नगर के भैंसो, नगर के पाडे (भैंसे) नगर के महावृषभो (सांड) इत्यादि उस में रहते थे, उस गोशाला में खाने के लिये घांस व दाना पीने केलिये पानी. बहुत था. वे पशुओं सर्व प्रकार के भय रहित सुख २ से अपना जीवित व्यतीत करते थे॥१५॥ तहां हस्तिनागपुर नगर में भीम नाम का कुडग्राही (कुकर्म से द्रव्योपार्जन करने वाला) अधर्म कर यावत् कुकर्म कर आनन्द प्राप्त करनेवाला रहता था ॥१६॥ उसभीम कुडग्राही की उत्पला नाम की भार्या थी. वह

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

कूडगाहस्स उप्पलागामं भारियाहोत्था, अहीण ॥१७॥ तएणं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अण्णयाकयाई अवण्णसत्ता जायायाविहोत्था ॥ १८ ॥ तएणं तीसे उप्पलाए कूडग्गाहिणीए तिण्हमासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेया रूवे दोहले पाउब्भूए-धण्णाउणं ताओ अम्मयाओ ४ जाव सुलद्धे जाओणं बहुणं णयरगोरूवाणं सणाहाणय जाव वसभाणय-ऊहेहिय. थणेहिय, वसणेहिय, छिप्पाहिय, कुकुहेहिय. वहेहिय, कण्णेहिय, अक्खिहिय, णासाहिय, जिब्भाहिय, ओट्ठहिय, कंबलेहिय, सोल्लेहिय, तलेतेहिय भज्जिएहिय, परिसुक्केहिय लावणेहिय सुरंच महुंच मेगरंच जाइंचे सिधुच पसण्णांच

अर्थ

महीन पूर्ण सुरूपा थी ॥ १७ ॥ तब वह उत्पला कूडग्राहणी एक वक्त गर्भवती हुइ ॥ १८ ॥ तब उस उत्पला कूडग्राहणी गर्भ अवस्थाके तीनमहीने व्यतीत होने इसप्रकार दोहला उत्पन्न हुवा कि जोमाता-गौशाला में रहे हुवे बहुत से पशुओं मालकों के या बिनामालक को के गौ बैल, भैंस, पाडे प्रमुख जिनों का गाय के फूहनल रहे उहाड का, बलके बृषण (अंडोका) पेटका, स्तन का, वदन का, स्कन्ध का, कूकड-बेलके स्कन्ध का, गलेका, आंख का, नाक का, जिव्हा का, होष्ठका कबल-गलेके नीचे लटकती लोमका, सूले [टुकडे] कर तेल में तल अंगार भूंजकर, लूंन मिरची आदि मशाले से संस्कार कर सूका हुवा सूरा-मद्य, ताडी, मदिरा, गुडका बना-सिन्धु, धावडी का बना प्रसन्न जिसकर जिन को अस्वाद थी हुइ खाती

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आसाएमाणीओ विसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुंजमाणीओ दोहलं विण-
ज्जंति, तं जयिणं अहमवि बहुणं णयर जाव विणज्जामि, त्तिकट्टु, तंसिदोहलंसि अवि-
णिज्जंमाणंसि सुक्काभुक्खा निम्मंसा उलग्गसरीरा, नितेया, दीणंच मणवयणा पंडुल्लुइय
मुही ॥ १९ ॥ इमंचणं भीमे कूडग्गाहे जेणेव उप्पला कूडग्गाहणीए तेणेव उवा-
गच्छइ २त्ता उहय जाव पासइ २त्ता एवं वयासी-किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! उहय-

अर्थ

हुइ दूसरेको खिलाती हुइ सर्व प्रकारसे भोगोपभोग भोगवती हुइ अपने दोहले को पूर्ण करती है उसमात को धन्य है, वही कर्तार्थ है पुण्यात्म है यावत् मनुष्य जन्म की प्राप्ती उसीही को अच्छी हुइ है. इसलिये में भी बहुत नगरके पशुओंका मांस उक्त प्रकारसे खावूं डोहला पूर्ण करूं, ऐसा विचार किया, परंतु वह डोहला पूर्ण होने जैसा नहीं देखा तब चिंता फिकर करती भोजनादि किये विनासूकगई, सिनगार के अभाव से भूख—लूखी हुइ, मांस रहित दुर्बल शरीर वाली हुइ, निस्तेज हुइ, मन वचन काया के जोग से दीन-गरीब हुई, मुख पर पीलासपना छाया, जीर्ण अवस्था के जैसा शरीर ग्लान हुवा ॥ १९ ॥ उस वक्त भीमकूडग्राही जहां उत्पला कूडग्राहणी थी तहां आया, आकर उत्पला को आर्त-ध्यान ध्याती हुई देखी, देखकर यों कहने लगा—हे देवानुप्रिय ! तू किस लिये आर्तध्यान ध्यारही है ॥२०॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

ज्झियाहिंसि ? ॥ २० ॥ तएणं सा उप्पला भारिया भीमकुडगाहं एवं वयासी- एवं खलु देवाणुप्पिया ! ममं तिण्हं मासाणं बहुपडि पुण्णाणं दोहलं पाउब्भूए धण्णाणं ४ जाउणं बहुणं गोरुवाणं ऊहेहिय जाव लावणएहिय सुरंच ६ आसाए माणीओ ४ दोहलं विणिंति, तएणं अहं देवाणुप्पिया ! तंसि दोहलंसि अविणिज्ज- माणंसि जाव ज्झियामि ॥ २१ ॥ तएणं से भीमकुडग्गाह उप्पलं भारियं एवं वयासी माणं तुमं देवाणुप्पिया ! उहज्झियासि, अहणं तं तहा करिस्सामि जहाणं तवदोहलस्स संपत्ती भविस्सइ, ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव समासासेइ ॥ २२ ॥ तएणं से भीमकूड

अर्थ

तब उत्पला भार्या भीमकूडग्राही से यों कहने लगी—यों निश्चय हे देवानुप्रिय ! मेरे को गर्भावस्थाके तीन महीने प्रतिपूर्ण हुवे दोहला उत्पन्न हुवा, जो माता गौशाला के बहुत गौ बैल भैंस पाडे का उडास्तन यावत् मशाले से संस्कार कर मदिरा आदि के साथ अस्वाद थीं खाती खिलाती हुई विचरती हुई दोहला पूर्ण करती है, उसे धन्य है. तब फिर मैंने हे देवानुप्रिय ! मेरा यह दोहला पूर्ण होता नहीं, देखा इसलिये मैं आर्त ध्यान ध्याती हुई विचर रही हूं ॥ २१ ॥ तब भीमकूडग्राही उत्पला भार्या से यों कहने लगा—हे देवानुप्रिय ! तुम चिन्ता मत करो जिस प्रकार तुमारा दोहला पूरा होगा वैसा ही मैं करूंगा, यों कह कर इष्टकारी प्रियकारी वचन कर उस को संतोषी ॥ २२ ॥ तब फिर वह भीमकूडग्राही

सूत्र

ग्गाहे अद्धरत्तकालसमयंसि एगे अबीए सण्णद्धबद्ध जाव पहरणे, साओ गिहाओ णिगच्छइ २ त्ता हत्थिणाउरं मज्झंमज्झेणं जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता बहुणं णयर गोरुवाणं जाव वसभाणय-अप्पेगइयाणं ऊहे छिदइ, अप्पेगइयाणं कंबलंछिंदइ,अप्पेगइयाणं अण्णमण्णाणं अंगोवंगाइं विइंगेइ २ त्ता जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता उप्पलाए कूडग्गाहणीए उवणेइ ॥ २३ ॥ तएणं सा उप्पला कूडग्गाहणी संपुण्ण दोहला, समाणिय दोहला, विच्छिण्ण दोहला, संपण्ण दोहला,

अर्थ

आधीरात्रि काल समय में अकेला ही किसी को साथ नहीं लेता हुवा सन्नद्ध बन्ध [बखतर] पहनकर हथियार ग्रहण करके अपने घर से निकला, निकलकर हस्तिना पुर नगर के मध्य २ में होकर जहां गौ-शाला थी तहां आया, आकर बहुत से ग्राम के चौपद वृषभ गाय प्रमुख के अलगर कितनेक के उहाडे का छेदन किया, कितनेकका कम्बलका छेदन किया. यों अलगर पशुओं का अवयव अंगोपांग का छेदन कर लेकर जहां अपना घर था तहां आया, आकर उत्पला कूडग्राहणी को वह दिया, उत्पला कूडग्राहणी बहुत प्रकार के गौ आदि के मांस के सूलाकर तल भूंज मदिरादि के साथ आस्वाद थी खाती खिलाती दोहला पूर्ण किया ॥ २३ ॥ तब वह उत्पला कूडग्राहणी का समस्त वांच्छितार्थ पूर्ण हुवा,वांच्छा की निवृत्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवसइ ॥ २४ ॥ तएणं सा उप्पला कुडग्गाहणी अण्णयाकयाई नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगंपयाया ॥ २५ ॥ तएणं तेणं दारएणं जायमित्तेणं चेव महया २ सद्देणं विघुट्ठे विसरे आरसिए ॥ २६ ॥ तएणं तस्स दारगस्स आरोयसद्दं सोच्चा णिसम्म हत्थिणाउरं णयरे बहवे णयरगोरूवा जाव वसभाणय भीया४ उव्विग्गा सव्वओ समंता विप्पलाइत्था ॥ २७ ॥ तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवे णामधेज्जं करेइ जम्हाणं अम्हं इमेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया २

अर्थ

हुई, वांच्छा का विच्छेद हुवा, दोहला संपूर्ण हुवा. उस गर्भ को सुख २ मे वृद्धि करने लगी ॥ २४ ॥ तब फिर वह उत्पला कूडग्राहणी एकदा प्रस्तावे नव महीने प्रतिपूर्ण हुवे बालक को प्रसवा—जन्म दिया ॥२५॥ जिस वक्त उस बालक का जन्म हुवा उस ही वक्त वह बालक महा २ शब्द कर चिल्लाया—चीस मारी विस्सर-खराव स्वर कर अरडाट शब्द कर रुदन किया ॥ २६ ॥ तब उस बालक का वह भयंकर शब्द श्रवण कर उस हस्तिना पुर नगर के मध्य की गौशाला के बहुत से पशु गौ बैलादि उद्वेग पाये भयभ्रान्त हो दिशोदिशा पलायन करने लगे—भगने लगे ॥ २७ ॥ तब फिर उस बालक के मातापिता इस बालक का इस प्रकार का गुणनिष्पन्न नाम स्थापन किया, जिस वक्त यह हमारा बालक का जन्म

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आररिसए तएणं एयस्स दारगस्स आरसिय सद्दे सोच्चा णिसम्म हत्थिणाउरे बहवे णयर गोरूवा जाव भीया ४ उव्विग्गा सव्वओ समंता विप्पलाइत्था, तह्माणं होउणं अहमेदारएगोतासे णामेणं॥ २८॥ तएणं से गोतासे दारए उम्मुक्कबाल भावे जाव जाएयाविहोत्था ॥ २९ ॥ तएणं से भीमकूडग्गाहे अण्णयाकयाइं काल धम्मुणासंजुत्ते ॥ ३० ॥ तएणं से गोतासे दारए बहुणं मित्तणाइं णियग सयण संबंधि परिजणेणं सद्धिं संपरिबुडे रोयमाणे कंदमाणे विलयमाणे भीमस्स कुडग्गाहस्स णीहारणं करेइ २ त्ता, बहुइलोइयमयकिच्चाइ करेइ २, ॥ ३१ ॥ तएणं से सुणंदे

अर्थ

हुवा. तब यह बालक महा२ शब्द कर-रूदन किया चीस पाडी तब इस के भयंकर शब्द को श्रवण कर अव-धार कर हस्तिनापुर नगर के बहुत पशु गोबेलादि त्रास पाये यावत् दिशोदिशा में भगे, इसलिये हमारे इस बालक का नाम 'गौत्रासीया' होवो ॥२८॥ तब फिर वह गौत्रासिया बाल्यावस्था से मुक्त हुवा यावत् यौवन अवस्था को प्राप्त हुवा ॥ २९ ॥ तब वह भीमकूडग्राही अन्यदा प्रस्तावे काल प्राप्त हुवा. मृत्यु पाया ॥ ३० ॥ तब फिर गौत्रासीया बहुत मित्र सजातिये गौत्रीये अपने स्वजन मित्र-दास दासी प्रमुख के साथ परिवरा हुवा रूदन करता आक्रन्दन करता भीमकूडग्राही के शरीर का निहारन कर्म किया फिर बहुत लोकाचार मृत्युक की पीछे करने के काम किये ॥ ३१ ॥ तब फिर उस नगर के सुनन्द

सूत्र

राया गोतासं दारयं अण्णयाकयाइ सयमेव कूडग्गाहेत्ताए ठवेइ ॥ ३२ ॥ तएणं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहेजाएयाविहोत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ॥३३॥ तएणं से गोतासे दारए कूडग्गाहे कल्लाकल्लिं अद्धरत्त कालसमयंसि एगे अबीए सण्णद्धबद्ध कवय जाव गहिया उपहरणे साओ गिहाओ णिज्जाइ २ त्ता जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागच्छइ २त्ता बहुणं णयरगोरूवाणं सणाहाय जाव वियंगतेइ २त्ता जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ २ ॥ तएणं ते गोतासे कूडग्गाहे तेसिं बहुहिं गोमंसेहिं सोल्लेहिं सुरंच ६ आसाएमाणे ४ विहरइ ॥ ३४ ॥ तएणं से गोतासे कूडग्गाहे-एयकम्मे एयप्पहाणे एयवीजे एयसमायारे बहुपावं कम्मं समज्जिणित्ता, पंचवाससयाइं परमाउपा-

अर्थ

राजाने गौत्रासीये बालक को अन्यदा किसी वक्त अपना चाडीया-दूतपने स्थापन किया ॥ ३२ ॥ तब वह गौत्रासीया सदैव आधीरात्रि में अकेला किसी अन्य को साथ में लिये विना कवचादि पहनकर शस्त्र धारन कर अपने घर से निकलकर जहां गौशाला है तहां आता, आकर बहुत नगर के गौरू चौतुष्पद सनाथ अनाथके अंगोपांगका छेदन करता, छेदन करके जहां अपना घर है तहां पीछा आता, उस गौमांस के बहुत सूले करके सुरादि के साथ अस्वादता खाता खिलाता विचरता था ॥३४॥ तब फिर वह गौत्रा-सिया चाडीया ऐसे तीव्र पाप कर्म का समाचरन करके, पाप कर्म में प्रधान-श्रेष्ठ होकर इस प्रकार खराब

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

लइ २ त्ता अट्टदुहट्टोवगए कालमासे कालंकिच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसं तिसागरोवमं णेरइयत्ताए उववण्णे ॥ ३५ ॥ तएणं सा विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा भारिया जाइणिंदुयाविहोत्था, जायादारगा विणिहायमावज्जंति ॥ ३६ ॥ तएणं से गोतासे कुडग्गाहे दोच्चाओ पुढवीओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वाणियग्गामे णयरे विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा भारिया कुच्छिसि पुत्तताए उववण्णे ॥ ३७ ॥ तएणं सा सुभद्दा सत्थवाहीणी अण्णया कयाइ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारयं पयाया ॥ ३८ ॥ तएणं सा सुभद्दा सत्थवाहीणी तं दारगं जायमेवयं चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेइ २ त्ता

अर्थ

समाचारी कर बहुत पाप कर्म की उपार्जना कर पांच सो वर्ष का परम उत्कृष्ट आयुष्य पालन कर आर्त रौद्र ध्यान ध्याता हुवा काल के अवसर काल पूर्ण करके दूसरी नरक पृथ्वी में उत्कृष्ट तीन सागरोपम के आयुष्यपने नेरीयापने नरक में उत्पन्न हुवा ॥ ३५ ॥ तब वह विजय मित्र सार्थवाही की भद्रा भार्या मरे हुवे बालकों का जन्म देती थी ॥ ३६ ॥ तब वह गौत्रासीया चाडीया दूसरी नरक से अंतर रहित निकलकर इस ही वाणिज्य ग्राम नगर में विजय मित्र सार्थवाही की भद्रा भार्या के कूक्षी में पुत्रपने उत्पन्न हुवा ॥ ३७ ॥ तब फिर भद्रा भार्या सार्थवाहीनी एकदा प्रस्तावे नव महीने प्रतिपूर्ण हुवे बाद बालक का जन्म दिया ॥ ३८ ॥ तब वह भद्रा सार्थवाहीनी उस जन्मते हुवे बालक को एकान्त उकरडी पर डलवाया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दोचंपि गिण्हावेइ २त्ता आणुपुव्वेणं सा रक्खमाणी सं गोवेमाणी संवड्ढेइ ॥ ३९ ॥ तओणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठितिवडियंच कम्मं चंदसूरया दंसणियंच जागरियं च माहिया इड्ढि सक्कारे समुदयेणं करेइ॥ ४० ॥ तओणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे णिवत्ते संपत्ते बारसाहे अयमेयारूवे गोणं गुणणिप्पणं णामधेज्जं करेइ, जम्हाणं अम्हे इमं दारए जायमेत्तए चेव एगंते उक्करुडियाए उज्झिए तम्हाणं होउणं अम्हे दारए उज्झिय णामेणं॥४१॥तएणं से उज्झिय दारए पंचधाई परिग्गहिए तं जहा-खीरधाइ, मंज्जणधाइ, मंडणधाइ, कीलामणधाइ, अंकधाइ जहा दढपइण्णे,

अर्थ

डलाकर पीछा दूसरी वक्त उठा लिया, फिर अनुक्रम से उस का रक्षण करती हुई, दुग्धादि से पोषती हुई, वस्त्रादि से गोपती हुई तथा शीतोष्णादि से रक्षती हुई रहने लगी ॥ ३९ ॥ तब फिर उस बालक के माता पिता प्रथम दिन जन्मोत्सव, तीसरे दिन चन्द्र सूर्यके दर्शन छठ दिन जागरण इत्यादि बहुत ऋद्धि सत्कार सन्मान से किया ॥ ४० ॥ तब फिर उस बालक के माता पिता इग्यारवा दिन अशुची कर्म से निवृत हो बारवे दिन इस प्रकार का गुण निष्पन्न नामकी स्थापना की. जिसवक्त हमारा यह बालक जन्मा उस वक्त इसे एकान्त उकरडी पर डाला था, इसलिये हमारे इस बालक का नाम उज्झित कुमार होवो ॥ ४१ ॥ तब फिर वह उज्झित बालक १ दूध पिलानेवाली, २ मंजन करानेवाली, ३ मंडन-सिनगार करानेवाली,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

जाव णिव्वाय णिव्वाघायगिरि कंदर मल्लीणेव चंपगपायवे सुहं सुहेणं विहरइ ॥४२॥ तएणं से विजयमित्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ गणिमंच धरिमंच मेज्जंच पारिच्छेज्जंच चउव्विहं भंडगं गहाय लवण समुद्दं पोय वहणेणं उवगए॥४३॥ तएणं से विजयमित्ते तत्थलवण समुद्दे पोते विवत्तए णिवुडं भंडस्सारे अत्ताणं असरणे कालधम्मुणा संजुत्ते ॥ ४४ ॥ तएणं ते विजयमित्त सत्थवाह जे जहा बहवे ईसर तलवर कोडुंबिय इब्भसेट्ठि सत्थवाहा लवण समुद्दो पोयविवत्तियं निवुड भंडसारं कालधम्मुणा

अर्थ

४क्रीडा करानेवाली और५ गोदी में लेकर खिलानेवाली, इनपांच धाय माताओं से व्याघात रहित पर्वत की गुफाके समीप चम्पक वृक्ष की तरह सुख २ से वृद्धि पाता विचर रहा था ॥ ४२ ॥ तब फिर विजय मित्र सार्थवाही अन्यदा किसी वक्त-नालेरादि गणिमा, गुडादि तोलमा, धान्यादि मापवा, और सुवर्णादि परिक्षवा इन चारों प्रकार के किरियाने को ग्रहण करके लवण समुद्र के किसी द्वीप में व्यापारार्थ गया॥ ४३ ॥ तब वह विजय मित्र सार्थवाह लवण समुद्र में वाहन का भंग होने से लवण समुद्र में ही सर्व वस्तु रूप लक्ष्मी का भंडार, प्रधान वस्तु सहित डूब गया और आपदा से बचानेवाला (धर्म) के शरण रहित मृत्यु को प्राप्त हुवा ॥ ४४ ॥ तब फिर विजय मित्र सार्थवाही का बहुत द्रव्य युवराज कोटवाल माडंबिक कुटुम्बि इभ्य शेठ सार्थवाही इत्यादि जिस के वहां स्थापन रक्खा था उनने यह समा-

सूत्र

संजुत्तं सुणेइ, ते तहा हत्थणिक्खेवंच बाहिर भंडसारंच गहाइ एगंतं अवक्कमइ॥४५ तएणं सा सुभद्दा सत्थवाही विजयमित्तं सत्थवाहं लवणसमुद्दे पोए विविर्त्ति णिव्वुबुडं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेइ २ त्ता महया पइसोएणं अप्पण्णा ममाणी परसुनियताविव चंपगलया धसइ धरणीतलंसि सव्वंगेहिं सण्णिपाडिया ॥ ४६ ॥ तएणं सा सुभद्दा मुहुत्तंतरेणं आसत्थासमाणी बहुहिं मित्त जाव परिवुडा, रोयमाणी कंदमाणी विलवमाणी विजयमितं सत्थवाहं लोइयाइं मयंकिच्चाइं करेइ २ ॥ ४७ ॥ तएणं

अर्थ

चार सुने कि विजय मित्र सार्थवाही लवण समुद्र में लक्ष्मी युक्त काल धर्म को प्राप्त हुवा है, ऐसा श्रवण कर जो गुप्त थापन थी उनने छिपाली, कितनेक मुनीमादि के हाथ जो लगा उसे लेकर एकान्तमें गये॥४५॥ तब फिर भद्रा सार्थवाहीनी विजय मित्र सार्थवाही को लवण समुद्र में डूबने के समाचार श्रवण कर भर-तारके वियोग के दुःख से अती ही पीडित हुइ जैसे फरसी से छेदित की हुइ, चम्पा के वृक्ष की डाल पडती है तैसे धसका खाकर सर्वांग कर धरतीपे पडगइ ॥ ४६ ॥ तब फिर वह सुभद्रा मुहूर्तान्तर सावध हुई बहुत से मित्रज्ञाती आदि से परिवरी हुई आंश्रू न्हाखती, आक्रांद करती, रूदन करती, विलापात करती, विजयमित्र सार्थवाही का लोक सम्बन्धी मृत्युकार्य क्रिया ॥ ४७ ॥ तब फिर वह

सूत्र

सा सुभद्दा अण्णया कयाइ लवण समुद्दोतरंच लच्छिविणासंच पोतविणासंच पति मरणंच अणुचिंतमाणी २ कालधम्मुणा संजुत्ता ॥ ४८ ॥ तएणं णयरगुत्तिया सुभद्दं सत्थवाहिं कालगयं जाणित्ता उज्झिय गंदारगं साओ गिहाओ णिच्छुभंति २ त्ता तंगिहं अण्णस्स दलयंति ॥ ४९ ॥ तएणं से उज्झियदारए सयाओ गिहाओ निच्छुढे समाणे वाणियग्गामे णयरे, सिंघाडग जाव पहेसु जूयखलएसु वेसियाघरएसु पाणागारेसुय सुहं सुहेणं परिवड्ढइ ॥ ५० ॥ तएणं से उज्झिए दारए अणोहट्टए अणिवारए सच्छंद मईसयरप्पयारे

अर्थ

सुभद्रा एकदा प्रस्तावे जिस प्रकार पति लवण समुद्र की मुशाफरी करने गये जिस प्रकार लक्ष्मी का वाहनका नाश हुवा भरतारका मृत्यु हुवा इत्यादि विचारमें चिन्ताग्रस्त बनी हुई महा दुःख धारन करती कालधर्म प्राप्त हुई मरगई. ॥४८॥ तब नगर का कोटवाल सुभद्रा सार्थ वाहीनी को काल धर्म प्राप्त हुई जान कर, उस उज्झित लडके को उसके घर से निकाल दिया, वह घर लक्ष्मी कर्ज दार को दे दिया ॥४९॥ तब फिर वह उज्झित बालक अपने घर से बाहिर निकाला हुवा, वाणिज्य ग्राम नगर के दो तीन चार अनेक रास्ते मिलते तहां जूवा के खेल में वैश्या संग में मद्यपान के स्थान फिरता हुवा सुख से रहने लगा ॥ ५० ॥ तब फिर वह उज्झित बालक किसी के रक्षण रहित किसी के अंकुश रहित स्वच्छन्दा चारी बनकर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

मज्जपसंगी-चोर-जुय-वेस-दारप्पसंगी जाएयाविहोत्था ॥ ५१ ॥ तएणं से उज्झिए अण्णयाकयाइ कामज्झियाए गणियाए सद्धिं संपलिग्गे जाएयावि होत्था, कामज्झियाए गणिए सद्धिं उरालाइं माणुस्सग्गाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥ ५२ ॥ तएणं तस्स मित्तस्स रण्णो अण्णयाकयाइ सिरिए देवीए जोणीसुले पाउब्भूएयावि होत्था, णो संचाएइ मित्तेराया सिरीए देवीए सद्धिं उरालाइं माणुसगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइत्तए ॥ ५३ ॥ तएणं से मित्तेराया अण्णयाकयाइ उज्झियदारए कामज्झियाए गणियाए गिहाओ णिच्छुभावेइ २ त्ता कामज्झियं गणियं अब्भिंतरय ठुवेइ २ त्ता

अर्थ

कुसंगत में पडा हुवा मद्य प्रसंगी बना चोर बना जुगारी बना, वैश्यागमनी बना, परस्त्री प्रमुख दुर्व्यसन का प्रसंगी (सेवन करने वाला) बना ॥ ५१ ॥ तब फिर वह उज्झित बालक का उस कामद्धजा गणिका से सम्बन्ध हुवा, फिर कामद्धजा गणिका के साथ उदार प्रधान काम भोग भोगवता हुवा विचरने लगा ॥ ५२ ॥ उस वक्त उस मित्र राजा की श्रीदेवी रानी को एकदा प्रस्तावे योनी में सूल रोग उत्पन्न हुवा, जिस से मित्र राजा श्रीदेवी के साथ उदार प्रधान मनुष्य सम्बन्धी काम भोग भोगवने समर्थ नहीं हुवा ॥ ५३ ॥ तब फिर वह मित्र राजा एकदा प्रस्तावे उस उज्झित बालक को कामद्धजा गणिका के घर से निकालकर, कामद्धज गणिका को अपने घर में स्थापन कर कामद्धज गणिका के

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

कामज्झियाए गणियाए सद्धिं उरालाइं जाव विहरइ ॥ ५४ ॥ तएणं से उज्झियदारए कामज्झयाए गणियाए गिहाओ णिच्छुभाते समाणे कामज्झियाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढ्ढिए अज्झोववण्णे अण्णत्थकत्थइ सुयंच रतिंच धितिंच अविंदमाणे तच्चिते तम्मण्णे तल्लेसे तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तयप्पियकरणे तब्भावणा भाविए कामज्झियाए गणियाए बहुणि अंतराणिय छिद्दाणिय विवराणिय पडिजागरमाणे २ विहरइ ॥ ५५ ॥ तएणं से उज्झियदारए अण्णयाकयाइ कामज्झियं गणियं अंतरं लभेइ कामज्झियं गणियं गोहिं रहस्सइगं अणुप्पविसइ २ त्ता कामज्झियाए गणियाए सद्धिं

अर्थ

साथ उदार प्रधान भोग भोगवता विचरने लगा ॥ ५४ ॥ तब फिर वह उज्झित बालक कामद्रुज गणिका के घर से निकले बाद कामद्रुज गणिका से मूर्च्छित हुवा गृद्धीवना अतिही आसक्तबना अन्य किसी भी स्थान रति-सुख नहीं प्राप्त करता हुवा, धृति-धैर्यपना नहीं धारन करता हुवा, उस ही कामद्रुज गणिका को अपने चित्त में रटन करता हुवा, उसीमें मन लगाता हुवा उसीकी गवेषना करता हुवा, वही अध्यवसाय उसकी प्राप्ती के उपाय देखता हुवा, फिर कब मिलेगी इसप्रकार उसी में अपना सर्व स्वयं अर्पनकर उसकी भावना भावताहुवा क्षीण मात्रभी नहीं भूलताहुवा, कामद्रुजा गणिकाकी प्राप्ति के लिये राजा का विरह राजाका परिवार सीपाइ-रक्षकादि का विरह बहुत प्रकारसे देखता हुवा विचरने लगा ॥५५॥ तब

सूत्र

उरालाइ जाव विहरइ ॥ ५६ ॥ इमंचणं मित्तराया ण्हाए जाव कयवलीकम्मा कय-कोउय मंगल पायच्छित्ते सव्वालंकार विभूसिए माणस्स वगुराए परिखित्ते, जेणेव कामगणियागिहे तेणेव उवागच्छइ २, ॥ ५७ ॥ तत्थणं उज्झियदारए कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं जाव विहरमाणं पासइ २ त्ता आसुरुत्ते ४ तिवलिंभिउडिं णिलाडे साहट्टु उज्झियं दारयं पुरिसेहिं गिण्हावेइ २ त्ता अट्ठिमुट्ठि जाणुकोप्परप्पहाणं

अर्थ

फिर वह उज्झित बालक अन्यदा किसी वक्त कामध्वज गणिका की प्राप्ती का अन्तर अवसर प्राप्तकर कामध्वजा गणिका के घर में एकान्तपने प्रवेश किया, प्रवेशकर कामध्वजा गणिका के साथ उदार प्रधान भोग भोगवता विचरने लगा ॥ ५६ ॥ इस वक्त मित्रराजा स्नान करके यावत् कुल्ले किये कौतुक मङ्गल निमित्त अनेक प्रायश्चित्त किये, सर्व अलंकार से विभूषित हो मनुष्यों के परिवार से परिवरा हुआ जहां कामध्वजा गणिकाका घरथा तहां आया, ॥ ५७ ॥ तहां उज्झित बालक को कामध्वजा गणिका के साथ उदार प्रधान भोग भोगवता हुवा विचरता देखकर शीघ्र क्रोध में धम धमाय मान हुवा, रौद्राकार धारन किया, तीन भृकुटी (तीन रेखा) नीला ऊपर चढाइ, उज्झित, बालक को अन्य पुरुष पास पकडाकर आज्ञादी कि-इसे हड्डी मुष्टि घुटनने खुनीयों कर खूब प्रहार करो-मारो, दहीकी परे मथन करो,

सूत्र

संभग्गमहियमत्तं करेइ२त्ता अवउडगबंधणं करेइ२त्ता एएणं विहाणेणं बज्झं आणवेइ ॥ ५८ ॥ एवं खलु गोयमा ! उज्झियए दारए पुरापोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥ ५९ ॥ उज्झएणं भंते ! दारए इओकालमासे कालंकिच्चा कहिं गच्छहिंति कहिं उववज्जिहिंति ? एवं खलु गोयमा ? उज्झियतेदारए पणवीसं वासाइं परमाऊं पालइ२त्ता अज्जेवत इभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णकए समाणे कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जिहिंति सेणं तओ अणंतरं उवट्टित्ता इहेव जंबूदीवे २ भारहेवासे वेयड्ढगिरिपायमूले वाणरकूलंसि वाणरत्ताए उववज्जिहिंति,

अर्थ

उलटी मुसकों से बन्धन बन्धो इस प्रकार राजाकी आज्ञा मान्यकर चाकर पुरुषोंने उस ही प्रकार उसका किया. ॥५८॥ यों निश्चय हे गौतम ! उज्झित बालक पुराना पूर्वजन्मोपार्जित कर्मों को भोगवता विचर रहा है॥५९॥ अहो भगवन् ! उज्झित कुमार यहां से काल के अवसर काल करके कहां जायगा कहां उत्पन्न होगा ? यों निश्चय हे गौतम ! उज्झित बालक पच्चीस वर्ष का उत्कृष्ट आयुष्य पालकर आज ही दिन के तीसरे प्रहर में शूली से शरीर भेदाया हुवा काल के अवसर काल पूर्ण करके इस ही रत्नप्रभा पृथ्वी में नेरीयेपने उत्पन्न होगा. वहां से अन्तर रहित निकलकर, इस ही जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र में वैताढ्य पर्वत के पास बन्दर के कुल में बन्दरपने उत्पन्न होगा, वहां बाल्यावस्था से मुक्त हो यौवन अवस्था को प्राप्त हो तिर्यंच

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तिसेणं तत्थ उम्मुक्क बालभावे तिरियभोए सुमुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे जाव वाणर-
पल्लेए वहेइ एयकम्मे ४ कालेमासं कालंकिच्चा, इहेव जंबूद्दीवे भारहवासे इंदपुरेणयरे गणियाकु
लंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिंति॥ ६०॥तएणं तं दारगं अम्मापियरो जायमेत्तक वद्धोहिंति॥ ६१॥
तएणं तस्स दारगस्सअम्मापियरो णिव्वत्तवारसाहेदिवसे, इमं एयारूवेणं णामधेज्जं करेहिंति,
होउणं पियसेणेनपुंसए॥ ६२॥तएणं से पियसेणे णपुंसए उमुक्कबाल भावे जोव्वणुगमणुपत्ते
विण्णाय परिणय मित्तेरूवेणय जोवणेणय लवण्णेणय उक्किट्ठे उक्किट्ठे सरीरा भविस्सइ। ६३।

अर्थ

के भोग में मूर्च्छित हुवा गृद्ध हुवा अत्यन्त आसक्त हुवा जो दूसरी वन्दरीयों पुत्र जन्मेंगी उनाका वध कर मारकर महापापकर्म उपार्जन कर काल के अवसर काल पूर्ण कर इस ही जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, इन्द्रपुर नगर में गनिका के कुल में पुत्रपने उत्पन्न होगा ॥ ६० ॥ तब उस के मातापिता उस का बाल्यावस्था में ही पुरुष चिन्ह [लिंग] का छेदन कर उस को नपुंसक बनावेंगे और नपुंसक की चेष्टा रूप कुकर्म उस को पढावेंगे ॥ ६१ ॥ तब फिर उस के मातापिता अनुक्रम से बारह दिन गुण निष्पन्न 'प्रियसेन नपुंसक' ऐसा नाम स्थापन करेंगे ॥ ६२ ॥ तब फिर वह प्रियसेन नपुंसक बाल्यावस्था से मुक्त हो यौवन अवस्था को प्राप्त होगा. तब विज्ञान की प्राप्ति होगी. तब रूप कर यौवन कर लावण्यता कर बोलने चलने

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तएणं से पियसेणे णपुंसए इंदपुर णयरे बहवे राईसर जाव पभियओ बहुहिय विज्जा पउगेहिय मंत चुण्णेहिय उड्डावणेहिय णिहुवणेहिय पण्हवणेहिय वसीकरणेहिय अभिओगेहिय अभियोगित्ता उरालाइं माणुस्सए भोग भोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ ॥ ६४॥ तएणं से पियसेण णपुंसए एयकम्मे ४ सु बहु पावकम्मं समाज्जिणित्ता इक्कवीसं वास सयं परमाउ पालइत्ता कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइएत्ताए उववज्जिहिंति, तओ सिरिसिवेसु, संसारो तहेव जाव पढमो जाव पुढविसेणं तओ

अर्थ

की चतुरता कर उत्कृष्ट शरीर का धारक बनेगा ॥ ६२ ॥ तब फिर प्रियसेन नपुंसक इन्द्र पुर नगर में बहुत से राजा ईश्वर यावत् प्रभृत प्रमुख को बहुत प्रकार से विद्या के प्रयोग कर, मंत्र के प्रयोग कर, चूर्ण के प्रयोग कर, हृदय को उड़ावनहार अर्थात् चित्त का शून्यपना करेगा, यद्यापि उस को बहुत लोगों द्रव्य देंगे तो भी वह किसी को पूछने से कहेगा नहीं, यों बहुत अदत्तादान ग्रहण कर बहुत कृपणता धारन कर उक्त विद्यादि प्रयोगसे बहुत लोगोंको अपने वश में कर उनको किंकर-चाकरकी माफक प्रवर्तावेगा, उदार मनुष्य संबंधी भोग भोगवता हुवा विचरेगा ॥ ६३ ॥ तब फिर वह प्रियसेन नपुंसक इस प्रकार कर्म करतूत कर बहुत पाप कर्म की उपार्जना कर, एक सो इक्कीस (१२१) वर्ष का उत्कृष्ट आयुष्य पालन कर, काल के अवसर में काल पूर्ण कर इस ही रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होगा, तहां से निकल गौ तथा नकुल होगा,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अणंतरं उवट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवेदीवे भारहेवासे चंपाए णयरीए महिसत्ताए पच्चाया-हिंति, सेणं तत्थ अण्णयाकयाइ गोट्ठिल्लएहिं जीवियःओविवरोविसमाणे तत्थेव चंपाए णयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिं, तिसेणं तत्थ उमुक्कबालभावे तहारूवाणं थेर णं अंतिए केवलंबोहिय अणगारे, सोहम्मेकप्पे जहा पढमो जाव अंतंकरेहिंति ॥ णिक्खेवोविइयं अज्झयणस्स ॥ दुहविवागस्स विइयं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ २ ॥

अर्थ

वहां से निकलकर मृगापुत्र की परे संसार परिभ्रमण करेगा यावत् पृथव्यादि में उत्पन्न होगा, वहां से अन्तर रहित निकलकर, इसही जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की चम्पा नगरी में भैंसापने उत्पन्न होगा, वहां उसे अन्यदा गोष्ठिले (मित्र) पुरुष जीवितव्य रहित करेंगे, वहां से मरकर उस ही चम्पा नगरी में सेठ के कुल में पुत्रपने उत्पन्न होगा, वहां बाल्यावस्था से मुक्त हो यौवनावस्था प्राप्त हो तथा रूप स्थविर के पास सम्यक्त्व की प्राप्ती कर साधु होवेगा, फिर चारित्र पालकर सौधर्म देवलोक में देवतापने उत्पन्न होगा; वहां से प्रथम अध्ययन में कहे माफिक महा विदेह क्षेत्र में जन्म लेकर सिद्ध बुद्ध मुक्त हो सर्व दुःख का क्षय करेगा ॥ इति दुःख विपाक का दूसरा उज्झित कुमार का अध्ययन संपूर्ण ॥ २ ॥ ० ०

* तृतीय-अध्ययणम् *

सूत्र तच्चस्स उक्खेवो-एवं खलु जंबू ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं पुरिमताल णामे णयरे होत्था रिद्धत्थिमिथ ॥ १ ॥ तस्सणं पुरिमतालस्स णयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं अमोहदंसी उज्जाणे, तत्थणं अमोहदंसीस्स जक्खस्स जक्खायणे होत्था ॥२॥ तत्थणं पुरिमताले णयरे महब्बले णामं राया होत्था ॥ ३ ॥ तत्थणं पुरिमतालस्स णयरस्स उत्तरपुरित्थिम दिसीभाए देसप्पंते अडवीसंसया, एत्थणं सालाडवी णामं

अर्थ तीसरा अध्याय का उत्क्षेप-यों निश्चय हे जम्बू! उस काल उस समय में पुरिमताल नाम का नगर था वह ऋद्धि समृद्ध सहित था ॥ १ ॥ उस पुरिमताल नगर के ईशान कौन में अमोघदर्श उद्यान था, उस अमोघदर्श उद्यान में अमोघदर्श नामक यक्ष का यक्षायतन [देवालय] था ॥ २ ॥ तहां पुरिमताल नगर का महाबल नाम का राजा था ॥ ३ ॥ उस पुरिमताल नगर के उत्तर पूर्व दिशा के बीच-ईशान कौन में देशादि-देशमंडल के अन्त में अटवी में यहां 'सालाटवी' नाम की चोरपल्ली चोरों के रहने का स्थान था, वह विषम गिरी पर्वत का कुहर (मध्य) उस की कंदरा-गुफा के प्रान्त-पार तहां पल्ली [ग्राम] बसी हुई थी, इस के वंस बाडका कोट चारों तरफ फिरता हुवा उस पल्ली को घेरा हुवा था, छेदित किया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चोरपल्ली होत्था, विसम गिरिकंदर कोलंबलाणिविट्ठा वंसीकलंकपागारपरिक्खित्ता, छिण्णसेल विसमप्पवाय फरिहोवगुढा, अब्भितर पाणीयासदुल्लभ जलपेरंता अणेगखंडी विदितजण दिण्ण निग्गमप्पवेसा सुबहुयस्स विकूवियस्स जणस्स दुप्पवेसायावि होत्था ॥ ४ ॥ तत्थणं सालाडवीए चोरपल्लीए विजय णामं चोरसेणावइ परिवसइ, अहम्मिए जाव लोहियपाणी बहुणयरणिग्गयजसे सूरदढप्पहारे, साहस्सिए, सद्दवेही,

अर्थ

हुवा पर्वत उस के मध्य विषम प्रायातगर्त-खड्डा वही उस की खाइ थी, उस पल्लीको प्रगूढ-वेष्टित थी, वह पल्ली अन्दर तो सुलभ सुखदाई परन्तु बाहिर से बडी दुर्लभ थी, अन्य को उस में प्रवेश करने का पंथ ढूंडते हुवे भी न मिले ऐसी थी, उस पल्ली में भगने के छिपने के स्थान बहुत थे, भगजाने के गुप्त द्वार भी बहुत थे, उन रास्तों से पेछानते मनुष्य को ही निकलने प्रवेश करने देते थे. अन्य को आने जाने नहीं देते थे, अत्यन्त कोपायमान हुवा मनुष्य भी अंदर प्रवेश नहीं कर सके इस प्रकार की वह सालाटवी चोर पल्ली थी ॥ ४ ॥ उस सालाटवी चोर पल्ली में विजय नाम का चोरों का सेनापति [राजा] रहता था, वह बडा अधर्मी यावत् जीवों का वध करने से जिसके हाथ रक्तसे भरे रहते थे, उसे अधर्म ही इष्टकारी था, वह सब लोगों के आगे अधर्मकी ही बातों करता था तथा लोकों भी उसके आगे अधर्मकी ही बातों करते थे, वह अधर्म को ही देखता था, अधर्म का ही व्यापारी था, अधर्म का ही आचारी थी, अध'

सूत्र

अभिलाहुं पढम मल्लेसेणं, तत्थणं सालाडवी चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं जाव विहरइ ॥ ५ ॥ तएणं से विजए चोर सेणावइ बहुणं चोराणय, पारदारियाणय, गंठि भेयाणय, संधि छेयाणय, खंडप्पट्ठाणय. अण्णेसिंच बहुणं छिणभिण्ण वाहिरा- हियाणं कुडंगेयावि होत्था ॥ ६ ॥ तएणं से विजए चोर सेणावइ पुरिमतालस्स

अर्थ

करकेही अपनी आजीविका करता था, बहुत से नगरों में विस्तार पाया था जिस का नाम, सूर वीर दृढ प्रहार का करनेवाला, अकार्य करने में साहसीक-निडर, शब्दभेदी-शब्दानुसार निशान मारनेवाला, खड्ग लाठिकादि आयुध का धारक. प्रथमही घाव में मारनेवाला, ऐसा वह विजय चोर सेनापति था. उस सालाटवी चोर पल्ली में रहते हुवे पांच सो चोरों का अधिपतिपना करता उन को पालता, पोषता हुवा विचरता था ॥ ५ ॥ तब फिर विजय चोर सेना का नायक बहुत चोरों को, पर स्त्री ग्राही को, गंठी छेदक को, घुघरादि से घर की सन्धी भेदक को (खात देनेवाले को) पांव की पट्टेबन्धन कर लंगडे का ढोंग कर लोकों को ठगनेवाले धूर्त को, राजाने जिस के हात छेदे हों नाक काटा हो इत्यादि अपचिन्ह कर नगर से निकाल दिया हो उन को इत्यादि को अपने यहां रखकर वंश जल समान रक्षा करता था ॥ ६ ॥ तब फिर विजय चोर सेनापति पुरिमताल नगर से ईशान कौन के जनपद देश के बहुत से ग्रामों की नगरों की घात करता हुवा, गयादि पशुओं का हरण करता हुवा, बंधन से बंध पकडकर लाता हुवा,

सूत्र

णयरस्स उत्तर पुरत्थिमिल्लं जणवयं बहुहिं गामघाएहिय, णयरघाएहिय, गोग्गहणेहिय; बंदिग्गहणेहिय, पंथकोट्टेहिय, खत्तखणणेहिय, उवीलेमाणे २, विद्धंसेमाणे २, तज्जेमाणे २ तालेमाणे २, णित्थाणे णिद्धणे णिक्काणे करेमाणे विहरइ, महब्बलस्सरण्णो अभि॰ क्खणं २ कप्पाइं गिण्हइ ॥ ७ ॥ तत्थणं विजयस्स चोरसेणावइस्स खंधसिरिणामं भारिया होत्था, अहीणं ॥ ८ ॥ तत्थणं विजय चोर सेणावइस्स पुत्ते खंधसिरीए

अर्थ

रास्ता लूंट करता हुवा, साथ वाह-बहुत लोगों मिलकर जावे उन को लूंटता हुवा, खातर दे चोरी करता हुवा, इत्यादि अनेक उपद्रव कर लोगों को दुःख से पीडित करता हुवा, लोगों का धन का विध्वंस करता हुवा, लोगों की प्यारी वस्तु का हरण करता हुवा, लोगों को धर्म कर्म रहित करता हुवा, तर्जना ताडना करता, भय उत्पन्न करता, कम-चाबूकादि का प्रहार करता-मारता, लोगों को स्थान भ्रष्ट करता-स्थान छोडता अर्थात् ग्राम को उजाड करता हुवा, लोगों को निर्धन करता हुवा, गवादि पशू रहित करता हुवा, शाल्यादि धान्य रहित करता हुवा, इस प्रकार दुःख देता हुवा विचरता था. और महाबल राजा से भी द्रव्य का भाग लेता था॥ ७॥ तहां विजय चोर सेनापति के खंधश्री नाम की भार्या थी, वह प्रतिपूर्ण इन्द्रिय की धारक यावत् सुरुपा थी ॥ ८ ॥ तहां विजय चोर सेनापति का पुत्र खंधश्री भार्या का आत्मज

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

भारियाए अत्तए अभग्गसेणं णामं दारए होत्था अहीणं ॥ ९ ॥ तेणंकालेणं तेणं-समएणं समणे भगवं महावीरे पुरिमतालणामं णयरे जेणेव अमोहदंसी उज्जाणे तेणेव समोसढे, परिसा राया णिग्गओ, धम्मोकहिओ परिसा राया पडिगओ ॥ १० ॥ तेणं कालेणं तेणंसमएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी गोयमे जाव राय-मग्गं समोवगाढे, तत्थणं बहवे हत्थी पासइ बहवे आसे पुरिसे सन्नद्धबद्ध कवए तेसिणं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ अवउडय जाव उग्घोसिमाणा ॥ ११ ॥ तएणं तं पुरिसं राया पुरिसा पढमंसि चच्चरंसि णिसियाविंति २ त्ता अट्ठचुल्लपिउए

अर्थ

अभग्गसेन नाम का बालक था वह भी सर्वेन्द्रिय पूर्ण था ॥ ९ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पुरिमताल नगर का जहां अमोघदर्शी उद्यान था उस में पधारे, परिषदा दर्शनार्थ आई, धर्मकथा सुनाई परिषदा राजा पीछा गया ॥ १० ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के बडे शिष्य गौतम स्वामी भगवन्त की आज्ञा ले पुरिमताल नगर में गौचरी गये, तहां राज्यपन्थ में बहुत हस्ति सन्नद्धबद्ध-पाखर युक्त यावत् दूसरे अध्ययन में कहे मुजब देखा ॥ ११ ॥ तहां सब के मध्य में एक पुरुष बन्धन से बन्धा हुवा उसे राज्य पुरुष प्रथम चौवट के मध्य में बैठाकर उस के सन्मुख आठ पीतारिये-काका (बाप के छोटे भाई) को मारते हैं, कस-चाबुक के प्रहार कर मारते हैं, वे उसे मार

सूत्र

अग्गउघाएइ, कसप्पहारेहिं तालेमाणे २ कलुणं काकणिमंसाइं खावेइ २ त्ता रुहिर पाणिंच पायति; तयाणं तरंचणं दोच्चंपि चच्चरंसि अट्ठलहु माउयाओ अग्गयोघाए- यति एवं तच्चे अट्ठमहापिउए, चउत्थे अट्ठमहामाउय, पंचमेपुत्ता, छट्ठे सुण्हा, सतमेजामाउय, अट्ठमेधूयाओ, णवमेणत्तुया, दसमेणातुयओ, एक्कारसे णांतुयावई, बारसमेणओ, तेरसमे उरिसय पतिया, चउद्दसमे पिउस्सियाओ, पण्णरसमे मासियाओ

अर्थ

से पीडित हुवे करूणा मय शब्द करते, उन के मांस के कागुनी जितने छोटे २ टुकडे करके उस को खिलाते थे; उस का रुधीर (रक्त) निकाल कर पानी के स्थान पिलाते थे, तब फिर दूसरे चौरास्ते में लेजाकर उक्त प्रकार आठ छोटी पितराणी (काकी) को उन के सन्मुख मारी उस के मांस के काकनी जितने टुकडे करके उसे खिलाये, रक्त पाया. इस प्रकार ही-तीसरे चौरास्ते में आठ बडे पिता (बाड-बाबा) मारे, पांचवे चौरस्ते में आठ बडीपितरीयाणी (बडीमा-बडे बाप की स्त्री) को मारी, पांचवे चौरास्ते में उस के आठ पुत्रको मारे,छठे चौरास्ते में आठ पुत्रवधु को मारी.सातवे चौरास्ते में आठ जवाइ मारे, आठवे में आठ बेटी को मारी, नववे चौरास्ते में दोहीतों (बेटी के बेटे) को मारे, दशवे चौरास्ते में पुत्र के बेटा बेटी मारे, इग्यारवे चौरास्ते मे-आठ दोहित्री के भरतार को मारे, बारवे चौरास्ते में आठ दोहित्र की भार्या को मारी तेरवे चौरास्तेमें आठ भूआ-फुफा (बापकी बेन के भरतार) को मारे, चौदवे चौरास्तेमें आठ भूआ-फुंफी (बापकी बेन) को

सूत्र

पइया, सोलसमे मासिओ, सत्तरसमे मासियाओ, अट्ठारसमे अवसेसं मित्तणाइ णियग सयण संबंधि परिजणं अग्गओ घायंति २त्ता कसप्पहारेहिं तालेमाणे २ कलुणं काकणिमंसाइं खावेइं रुहिर पाणंच पाएइ ॥ १२ ॥ तएणं से भगवं गोयमे तं पुरिसं पासइ २ त्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पण्णे-जाव तहेव णिग्गए एवं वयासी-एवं खलु अहं भंते ! सेणं पुरिसे पुव्वभवे केआसी जाव विहरइ ॥ १३ ॥ एवं खलु

अर्थ

री, पंदरवे चौरास्ते में आठ मासे (माकी बेनके भरतार) को मारे, सोलवे चौरास्ते में आठ मासी (माकी बेन) को मारी, सतरवे चौरास्ते मे आठ मामा (माके भाइ) को मारे, और अठारवे चौरास्ते में बाकी रहा शेष चोरका परिवार मित्र पुत्र न्याती गोत्री स्वजन माता पिता विवाही दास दासी प्रमुख सब को उस के आगे मार डाले. वे करूणा मय शब्द करते तडफडते हुवे का कांगुनी २ जितने मांस के टुकडे कर उस चोर को खिलाये और पानी के स्थान उन का रुधिर पाया ॥ १२ ॥ तब फिर भगवंत गौतम स्वामी उस पुरुष को देखा, देखकर इस प्रकार अध्यवासाय उत्पन्न हुवा-यह प्रत्यक्ष नरक जैसे दुःखानुभव करता है, इत्यादि विचार कर अहार पानी ग्रहण कर नगर से निकलकर जहा भगवंत महावीर स्वामी थे तहां आये, आकर यों कहने लगे-यों निश्चय हे भगवान ! तुमारी आज्ञा लेकर मैं गोचरी गया था यावत् देखा हुवा व्यतिक्रम सब कह सुनाया और पूछने लगे की की अहो भगवान! इस जीवने पूर्व भवमें ऐसे क्या पापकर्म उपार्जन किये हैं जिसके फल यह प्रत्यक्ष भोगवता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

गोयमा ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं इहेव जंबूद्दीवेदीवे भारहेवासे पुरिमतालेणामं णयरे होत्था रिद्धत्थिमिए ॥ १४ ॥ तत्थणं पुरिमताले उदयेणामं राया होत्था, महया ॥ १५ ॥ तत्थणं पुरिमताले निन्नयणामं अंड वाणिए होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ॥ १६ ॥ तस्सणं णिण्णियस्स अंडय वाणियस्स बहवे पुरिसा दिण्णभत्ति भत्तवेयणा कल्लाकल्लिं कोद्दालियाओय पत्थियाए पडिए गेण्हइ पुरिमतालस्स णयरस्स परिपेरंतेसु बहुकाकअंडएय, घूतिअंडएय, पारेवइअंडएय, टिट्टि-

अर्थ

विचरता है ॥ १३ ॥ तब भगवंत कहने लगे यों निश्चय हे गौतम ! उस काल उस समय में इस ही जंबूद्वीप के भरत क्षेत्रमें पुरिमताल नाम का नगर ऋद्धि समृद्धिकर युक्त था ॥ १४ ॥ उस पुरिमताल नगर में उदायन नाम का राजा राज्य करता था, वह महाहिमवंत पर्वत समान था ॥ १५ ॥ उस पुरिमताल नगर में निन्हव नाम का अंडवाणिया कुटिल रहता था, वह अधर्मी था यावत् दूसरे का खराबा कर आनन्द मानने वाला था ॥ १६ ॥ उस निन्हव श्रेष्ठि के बहुत पुरुष नोकर थे उनको वह खान पान मजूरी के दाम देता था, वे नोकर पुरुषों सदैव वक्तो वक्त भुरीबे इनकी कुद्दालियों बांस के टोपले छोटी टोपलीयों को ग्रहणकर चारों तरफ दिशा विदिशामें बहुतसे काग के अण्डे, घूघू के अण्डे, परेवे-कबूतर के अण्डे, टींटोडी के

सूत्र

भिक्खगि-मयूरि- कुकुडि अंडएय, अण्णेसिंच बहुणं जलयर थलयर खहयर माईणं अंडाइं गेण्हइ २ त्ता पत्थिय पाडिगाइं भरे २ त्ता, जणेव निण्णए अंडवाणियए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता णिण्णयस्स अंडवाणियस्स उवणेइ ॥ १७ ॥ तएणं तस्स णिण्णयस्स अंडवाणियस्स बहवे पुरिसा दिण्णभए बहवेकाय अंडएय जाव कुकुडअंडएय अण्णेसिंच बहुणं जल-थल-खेचरमाईणं अंडए तवएसुय कंदुसुय भज्जणाएसुय इंगालेसुय तलिंति भज्जंति सोल्लिंति तल्लिता भज्जिता सोल्लिताय रायमग्गं अंतरावणंसि अंडय पाणियणं वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ ॥ १८ ॥ अप्पणोवियणं सेणिण्णए अंडवाणियए

अर्थ

अण्डे, मयूरी के अण्डे, बदक के अण्डे, कूकडी मूर्गी के अण्डे, और भी बहुत प्रकार मच्छादि जलचर के स्थलचर के खेचर के अण्डों को लेकर छोटे बडे बांस के टोपलोंमें भरकर जहां निन्नव अंडवानिया था तहां आकर निन्नव वनिये को देते थे ॥ १७ ॥ तब फिर वह निन्नव अंड वनिया उन बहुत पुरुषों को मजूरी देता हुवा उन कउवे के अण्डे यावत् मूर्गी के अंडे आदि बहुत से जलचर थलचर खेचर के अंडे ग्रहण कर लोह की तावडीमें वडी कडाइमें डालकर अंगार पर चडाकर भूंजता तैलादि में तलता भूंजकर तलकर उन के सोले-टुकडे करके मशाला से संस्कार छाबडी में भरकर राजमार्गमें उनको बेंचता हुवा अपनी आजीविका करता हुवा विचरता था ॥ १८ ॥ और वह अण्डवानीया आप स्वयं भी उन बहुत कउवे के

सूत्र

तेसिं बहुहिं काइं अंडएहिय जाव कुक्कुडि अंडएहिय सोल्लेहिं तलिंभुज्जे सुरंच ४ आसाए ४ विहरइ ॥ १९ ॥ तएणं से णिण्णए अंडए एयकम्मे ४ सुबहुपावं समज्जिणित्ता एगंवास सहस्सं परमाउपालइ २ त्ता कालमासे कालंकिच्चा तच्चाए पुढवीए उक्कोसेणं सत्तसागरोवम ट्ठितीएसु णेरइएसु णेरइंयत्ताए उववण्णे ॥ २० ॥सेणं ताओ अणंतरं उवट्टित्ता इहेव सालाडवीए चोरपल्लीए विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदासिरीए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥ २१ ॥ तएणं से खंदसिरी भारियाए अण्णयाकयाइ तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं, इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए धण्णाउणं ताओ

अर्थ

यावत् मुर्गी के अण्डे के सूके कर तल भूंज कर मदिरा के साथ खाता हुवा खिलाता हुवा विचरता था ॥ १९ ॥ तब वह निन्नत्र अण्डवाणिक इस प्रकार महा पाप कर्म का उपार्जन कर एक हजार वर्ष का उत्कृष्ट आयुष्य को पालकर काल के अवसर में काल कर तीसरी नरक में उत्कृष्ट सात सागरोपम की स्थितिपने उत्पन्न हुवा ॥ २० ॥ वहां से अन्तर रहित निकलकर यहां सालाटवी चोर पल्ली में विजय चोर सेनापति के खंधश्री भार्या की कुक्ष में पुत्रपने उत्पन्न हुवा ॥ २१ ॥ फिर खंधश्री भार्या को एकदा प्रस्तावे तीन महीने व्यतिक्रान्त हुवे बाद इसप्रकार दोहला उत्पन्नहुवा. धन्य उसमाता को है कि जो माता बहुत

सूत्र

अम्माथाओ ४ जाणं बहुहिं मित्तणाइ णियग सयणसंबंधि परियण महिलाएहिं अण्णे-
हिय चोर महिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकार भूसिया
विउलं असण पाणं खाइमं साइमं सुरंच ५ आसाएमाणे ४ विहरइ, जिमियभुत्तुत्त-
रागयाओ पुरिसणेवत्थिया सण्णद्ध जाव पहरणावरणा भरिएहिय फलएहिं णिक्किट्ठाहिं
असीहिंअं सागएहिं तोणाहिं सजीवेहिं धणुहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लासियाहिय
दामाहिं लंबियाहिं उसारियाहिं उरुघंटाहिं छिप्पतूरेणं विज्जमाणं २ महया २ उक्किट्ठ

अर्थ

मित्रज्ञाति महजाति अपने पुत्र पौत्रादि गोत्री स्वजन की स्त्रियों दास दासी प्रमुख की स्त्रियों के साथ और
भी चोर की स्त्रीयों के साथ परिवरी हुई स्नान मंजन करके प्रायःश्चित्त कर शुद्ध हो सर्व अलंकार से विभूषित
होकर बहुत अन्न पानी खादिम स्वादिम चार प्रकार का आहार निपजाकर मदिरा के साथ अस्वादन करती
हुई विचरती है, इस प्रकार भोजन पान कर तृप्त होकर पुरुष भेष धारन कर पुरुष के वस्त्राभूषण से
सज्ज होकर हथियार-शस्त्र धारन कर सन्नद्धबद्ध होकर खड्गादि म्यान के बाहिर निकाल हाथ में धारन कर
स्कन्धपर स्थापन कर तीरों का भराहुवा भाथा पृष्ट पर लटकाती हुइ बान युक्त धनुष्य चढाया हुवा,
आकर्षित कर जंघा को छोटी २ घुघरीयों की माला बंध कर अनेक वाजित्र बजते हुवे महा २ शब्द से
समुद्र के ज्यों गर्जारव करती हुई जिस प्रकार समुद्र की पानी की वेल चलती है उस प्रकार शीघ्रता से

सूत्र

जाव समुद्दरवभूयं पिवकरेमाणीओ सालाटवीए चोरपल्लीए सव्वओ समंताओ लोए माणीओ २, अहिंडमाणीओ २, दोहलं विणंति, तंजइ अहं अहंपिव हुहिंणाइ णियग सयण संबंधि परियणमहिलाइं अण्णेहिं सालाडवीए चोरपल्लीए सव्वओ समंताओ लोएमाणीओ २ आहिंडमाणीओ २, दोहलंविणिज्जामि? तिकट्टु, तंसि दोहलंसि अव-णिज्जमाणंसि जाव झियामि ॥ २२ ॥ तएणं से विजय चोरसेणवइ खंदसिरीभा-रियं उहय जाव पासइ एवं वयासी-किण्हं तुम्हं देवाणुप्पिए ! उहय जाव झियासि? ॥ २३ ॥ तएणं सा खंदसिरी भारिया विजयं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया !

अर्थ

से चलती हुई सालावटी चोर पल्ली के सर्व दिशी विदिशी में देखती हुई गमन करती हुई दोहला-मनोर्थ पूरण करती है, उसमाता को धन्य है. मैं भी कभी बहुत ज्ञाती गौत्रीयों की स्त्रीयों दास दासीयों था अन्य स्त्रीयों के साथ सालाटवी चोर पल्ली के सर्व दिशी विदिशी में देखती हुई गमन करती हुइ विचरूंगी. दोहला पूर्ण करूंगी? इस प्रकार विचार करती हुई उक्त दोहला अपना पूर्ण होता हुआ नहीं देखकर यावत् आर्त ध्यान ध्याने लगी ॥ २२ ॥ तब वह विजय चोर सेनापति खंदश्री भार्या को आर्त ध्यान ध्याती हुई देखकर यों कहने लगा—हे देवानुप्रिय ! तुम किस कारन आर्त ध्यान ध्यारही हो ? ॥ २३ ॥ तब वह खंदश्री विजय चोर सेनापति से यों कहने लगी—यों निश्चय अहो देवानुप्रिय ! मेरे गर्भ को

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

ममं तिण्हं मासाणं जाव ज्झियामि ॥ २४ ॥ तएणं से विजये चोरसेणावइ खंदसिरी भारियाए अंतियं एयमट्ठं सोच्चाणिसम्म खंदसिरी भारियं एवं वयासी-अहासुहं देवाणुप्पियेइ, एयमट्ठं पडिसुणेइ २ ॥ २५ ॥ तएणं सा खंदसिरी भारिया विजएणं चोरसेणावइणा अब्भणुण्णायासमाणी हट्ठतुट्ठ बहुहिं मित्त जाव अण्णेहिय बहुहिं चोर महिलाहिं सद्धिं परिवुडा ण्हाया जाव विभूसिया, विपुलं असणं पाणं खाइयं साइमं सुरंच ५ आसाएमाणी ४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागया पुरिसणेवत्था सण्णद्धबद्ध

अर्थ

तीनमहीने व्यतीत होने से उक्त प्रकार का दोहला उत्पन्न हुवा है जिस से मैं आर्त ध्यान ध्यारही हूं॥२४॥ तब वह विजय चोर सेनापति खंदश्री भार्या के मुख से उक्त कथन श्रवन कर हृदय में धारन कर खंदश्री भार्या से कहने लगा कि-तुमारे को सुख उत्पन्न हो तैसा कार्य करो, तुमारा मनोर्थ पूर्ण करो ॥ २५ ॥ तब खंदश्री भार्या विजय चोर सेनापति की आज्ञा प्राप्त कर हृष्ट तुष्ट हुई, बहुत से मित्र ज्ञातीयोंकी स्त्रीयों के के साथ परिवरि स्नानादि करके यावत् आभरण अलंकार से विभूषित होकर अशनादि चारों प्रकार का आहार निष्पन्न करा मदिरा के साथ अस्वादथी खाती खिलाती विचरनेलगी, खा पी तृप्त हुवे बाद शुद्ध हो पुरुष वेष धारनकर वस्त्र आभरण से अलंकृतहो हाथियार धारन कर सनबद्ध हो वक्त रादि पहनकर गमन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

जाव आहिंडमाणी दोहलं विणिंति ॥ २६ ॥ तएणं सा खंदसिरी भारिया संपुण्ण दोहला समाणिय दोहला विणिय दोहला वोच्छिण्ण दोहला संपुण्ण दोहला तं गब्भं सुहं सुहेणं परिवहइ ॥ २७ ॥ तएणं सा खंदसिरी चोरसेणावइणी णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारयं पयाया ॥ २८ ॥ तएणं से विजय चोर सेणावइ तस्स दारगस्स इड्ढीसक्कारसमुदएणं दसरत्तट्ठिइ वडियं करेइ ॥ २९ ॥ तएणं से विजय चोर सेणावइ तस्स दारगस्स एक्कारसमेदिवसे विपुलं असणं४ उवक्खडावेइ२त्ता मित्तणाइ आमंतएइ२त्ता जाव तस्सेव मित्तणाइ पुरओ एवं वयासी-जम्हाणं अम्हं इमंसि दारगं-

अर्थ

करती सिंहनाद से समुद्र की तरह गर्जारव करती दोहला—मनोरथ पूरन करती हुइ विचरने लगी॥ २६॥ तब फिर वह खंदश्री भार्या समस्त वांच्छितार्थ पूर्ण करती हुई दोहला पार पहोंचाती हुई वांच्छा से निवर्तती हुई विविक्षितार्थ वांच्छा कारण वह विच्छेद होने से संपूर्ण दोहला होने से गर्भ की सुख २ से वृद्धि करती हुइ विचरने लगी ॥ २७ ॥ तब फिर खंदश्री चोर सेनापत्नि नव महीने पूर्ण हुवे बालक का जन्म दिया ॥ २८ ॥ तब फिर विजय चोर सेनापति उस बालक का महा मंडान से ऋद्धि आदि कर समुदाय कर दश दिन तक जन्मोत्सव किया ॥ २९ ॥ तब फिर विजय चोर सेनापति उस बालक का इग्यारवे दिन बहुत प्रकार का-अशनादि निष्पन्न कराकर मित्र ज्ञातियोंको बोलाकर जेमनदिया,जेमनदेकर उन मित्र

सूत्र

सि गब्भगयंसि समाणंसि इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए, तम्हाणं होउअम्हं दारए अभ-
ग्गसेण णामेणं ॥३०॥ तएणं से अभग्गसेण कुमारे पंचधाई जाव परिधावई ॥३१॥
तएणं से अभग्गसेणे णामं कुमारे उमुक्कबाल भावेयावि होत्था, अट्ठदारियाओ जाव
अट्ठओदाओ उप्पिं भुंजइ ॥ ३२ ॥ तएणं से विजए चोर सेणावइ अण्णयाकयाइ
कालधम्मुणासंजुत्ते ॥ ३३ ॥ तएणं से अभग्गसेणकुमारे पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं
संपरिवुडे रोयमाणे विजयस्स चोरसेणावइस्स महयाइड्ढी सक्कारसमुदएणं णीहरणं

अर्थ

ज्ञाती के सन्मुख यों कहने लगा. जिस वक्त हमारा यह बालक गर्भावस्था में था तब इस प्रकार दोहला
उत्पन्न हुवा था इसलिये होवो हमारे इस पुत्र का नाम अभग्गसेन कुमार ॥ ३० ॥ तब फिर वह अभग्ग-
सेन कुमार पांच धाइयों के परिवार से वृद्धि पाने लगा, पर्वतकी आड में चम्पक लता की तरह वृद्धि पाने
लगा ॥ ३१ ॥ तब फिर वह अभग्गसेन कुमार बाल्यावस्था से मुक्त हुवा यौवन अवस्थाको प्राप्त हुवा, तब
उसका आठ कन्याके साथ पानी ग्रहण कराया यावत् आठ२दाति दायचमें दी,सार२वस्तुको ग्रहणकर प्रसाद
के ऊपर सुख भोगवता सुख से रहने लगा ॥ ३२ ॥ तब वह विजय चोर सेनापति एकदा प्रस्तावे काल
धर्मको प्राप्त हुवा-मरगया. ॥३३॥तब फिर वह अभग्गसेन कुमार पांचसो चोर के साथ परिवरा हुवा रूदन करता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

करेइ २ त्ता बहुहिं लोइयाइं मयाकिच्चाइं करेइ २ त्ता कालेणं अप्पए जाएयावि होत्था ॥ ३४ ॥ तएणं से अभग्गसेणकुमारे चोरसेणावइजाए, अहम्मिए जाव कप्पाइं गेण्हइ २ ॥ ३५ ॥ तएणं ते जाणवया पुरिसा अभग्गसेण चोरसेणावइणा बहुग्गा-मघायावणाहिं ताविया समाणा अण्णमण्ण सदावेइ २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणु-प्पिया ! अभग्गसेण चोरसेणावइया पुरिमताले णयरे पुरिमताले णयरस्स उत्तरिल्लं जणवयं बहुहिं गामघाएहिं जाव णिद्धणं करेमाणे विहरइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया !

अर्थ

हुवा विजय चोर सेनापति का महा ऋद्धि सत्कार समुदाय कर निहारन किया, निहारन करके बहुत से लोकीक कार्य किये, कालन्तर में सोगरहित हुवा॥ ३४॥ तब फिर वह अभग्गसेन कुमार चोर सेनापति हुवा, महा अधर्मी-पापी यावत् महाबल राजा के माल में से मालका भाग लेनेवाला, तथा भोग आते हुवेको बीच से लेनेवाला हुवा ॥ ३५ ॥ तब फिर उस जनपद देश के लोगों अभग्गसेन चोर सेनापतिने बहुत गामो की घातकर धनादि लुंटकर तपित किये हुवे, दुःख से पीडित हुवे परस्पर बोलाकर यों कहने लगे-यों निश्चय हे देवानुप्रिया ! अभग्गसेन चोर सेनापति पुरिमताल नगर में पुरिमताल नगर से ईशान कौन में रहे हुवे जनपद देश के बहुत से ग्रामों को लुटता निर्धन बनाता विचर रहा है, इसलिये श्रेय है अपने को कि-महाबल राजा को यह

सूत्र

महब्बलसरण्णो एयमट्ठं विण्णवित्तए ॥ ३६ ॥ तएणं जणवया पुरिसा एयमट्ठं अण्ण मण्ण पडिसुणेइ २ त्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुडं गिण्हइ २ त्ता जेणेव पुरिमताले णयरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जेणेव महब्बलेराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता महाब्बलरण्णो महत्थं जाव पाहुडं उवण्णेइ, करयल अंजलींकट्टु महब्बलंरायं एवं वयासी-तुब्भं बाहुछाया परिग्गहिया निब्भया णिरुव्विग्गा सुहं सुहेणं परिवसित्तए, सालाडवी चोरपल्लीए अभग्गसेणे चोरसेणावइ अम्हं बहुहिं गामघायहिय जाव णिद्धणे करेमाणे विहरइ, तं इच्छामिणं सामी ! तुब्भं बाहुछाया परिग्गहिया णिब्भया णिरु-

अर्थ

सर्व वृतान्त निवेदन करें॥ ३६॥ तब फिर जनपद देश के लोगों परस्पर उक्त कथन सुनकर-मान्यकर महाप्रयोजनवाला बहुमूल्य राज्ययोग भेटना [निजराना] ग्रहनकर, जहां पुरिमताल नगरथा तहां आये, आकर जहां महाबल राजा था तहां आये, वह महा प्रयोजन रूप महामूल्य भेटना (निजराना) अर्पन कर हाथ जोडकर मस्तकावर्तन कर यों कहने लगे-हम सब आपकी बांहकी छांहमें आपके बांहके आधारसे भय रहित हुवे उद्वेग रहित हुवे रहते हैं. परंतु सालाटवी चोरपल्ली में अभग्गसेन चोरसेनापति हमारे बहुत से ग्रामोकी घात करताहुवा यावत् निर्धन करता हुवा विचरता है, इस लिये चहाते हैं अहो स्वामी ! आपकी बांहकी छांह में इतना भी भय रहित द्वेष रहित सुख सुख से काल

सूत्र

विग्गा सुहं सुहेणं परिवसित्तए त्तिकट्टु, पायवडिया पंजलिउडा महब्बलरायं एयमट्ठं विण्णवंति ॥ ३७ ॥ तएणं से महब्बलेराया, तेसिं जणवयाणं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म असुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणं तिवलियं भिउडिं णिलाडे साहट्टु दंडं सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया! सालाडविए चोरपल्लिं विलुंपाहिं अभग्गसेण चोरसेणावइ जीवग्गाहं गिण्हाहिं २त्ता मम उवणेहिं ॥ ३८ ॥ तएणं से दंडे तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ २ ॥ ३९ ॥ तएणं से दंड बहुहिं पुरिसेहिं सण्णद्ध जाव पहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे मगइएहिं फलएहिं जाव छिप्पत्तरेहिं वज्जमाणेणं महया

अर्थ

व्यतीत करना, यों कह कर पांव पडकर हाथ जोड कर महबल राजा से विनंती करी ॥ ३७ ॥ तब फिर महाबल राजा उन जनपद देशके पुरुषों के मुख से उक्त कथन सुनकर अवधार कर शीघ्रही कोपायमान हुवा यावत् मिसमिसायमान होता सर्प के ज्यों फुंफाट करता तीन शलय निलाडपर चडाकर दंडसेनापति को बोलाकर यों कहने लगा-आवो तुम हे देवानुप्रिया ! लालाटवी चोरपल्ली को लुंटो, उसका विनाशकरो और अभग्गसेन चोर सेनापति को जिन्दा पकडकर मेरे सुपरत करो॥ ३८ ॥ तब उस दंड सेनापतिने राजा की आज्ञा तहति प्रमाणकी॥३९॥ तब वह दंड सेनापति बहुत सुभटों साथ सन्नद्धबद्धहो सन्नहाव कर शस्त्र धारन कर यावत् हथीयार धारनकर उन सुभटों के में परिवार से परिवरा हुवा हाथों में खांडा खड्गादि ग्रहण किये

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

उक्किट्ठ णायं करेमाणे पुरिमतालं णयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ२त्ता जेणेव सालाडवि चोरपल्ली तेणेव पहारत्थगमणाए ॥ ४० ॥ तएणं तस्स अभग्गसेणावइस्स चोरपुरिसे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव अभग्गसेणावइ तेणेव उवा-गया, करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले णयरे महब्बलेणं रण्णा महया भडचडगरेणं परिवारेणं दंड आणए गच्छहणं, तुमं देवाणुप्पिया ! सालाडवि चोरपल्लिं विलुंपाहिं अभग्गसेण चोरसेणावइ जीवग्गाहिं गिणहेहिं २त्ता ममं उवणेहिं, तएणंसे

अर्थ

हुवे वादित्र वाजते हुवे महा गर्जारव करते पुरिमताल नगर के मध्य मध्य में होकर निकलकर जहां सालाटवी चोरपल्ली है उसके रास्ते में गमन करने लगे॥४०॥ तब फिर वह अभग्गसेन चोरसेनापति के गुप्त समाचार लाने वाले चोर पुरुष को उक्त प्रकार की कथा वारता प्राप्त होने से जहां सालाटवी चोरपल्ली जहां अभग्गसेन चोरसेनापति था तहां आया, आकर हाथ जोडकर यावत् यों कहने लगा-यों निश्चय हे देवानुप्रिया ! पुरिमताल नगर का महब्बल राजा महा सूभटों के वृन्द सहित दंड सेनापति को आज्ञादी है कि-जावो तुम हे देवानुप्रिया! सालाटवी चोरपल्ली को लूटों विध्वंसकरो अभग्गसेन चोरसेनापतिको जिन्दा पकड कर लाकर मेरे सुपरत करो. तब फिर वह दंड सेनापति महा सुभटों के वृन्द से परिवरा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

दंडे महया भडचडगरेणं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥४१॥तएणं से अभग्गसेण चोरसेणावई तेसिं चोपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म पंचचोरसयाइं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-एयं खलु देवाणुप्पिया! पुरिमताले णयरे महब्बले जाव तेणेव पहारेत्थ गमणाए आगए ॥४२॥ तएणं से अभग्गसेणे ताइं पंचचोरसयाइं एवं वयासी-तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं तं दंडं सालाडविं चोरपल्लिं असंपत्तं अंतराचेव पडिसेहित्तए॥४३॥ तएणं ताइं पंचचोरसयाइं अभग्गसेणस्स तहत्ति जाव पडिसुणेइ २ ॥४४॥ तएणं से

अर्थ

हुवा यहां सालाटवी चोर पल्ली में आरहा है ॥ ४१ ॥ तब फिर वह अभग्गसेन चोर सेनापति उस हेरू चोर के पास उक्त अर्थ श्रवण करके हृदय में अवधार कर पांच सो चोरोंको बोलाये, बोलाकर यों कहने लगा-यों निश्चय हे देवानुप्रिय ! पुरिमताल नगर का महा बलराजाका दंड सेनापति कटक(सेना) लेकर यहां अपनी चोर पल्ली लूंटने आरहा है,ऐसा हेरूका कहना है ॥४२॥ फिर अभग्गसेन चोर उन पांचसो चोरों को यों कहने लगा—हे देवानुप्रिय ! उस सेनापति का कटक सालाटवी चोर पल्ली को आ नहीं पहुंचे तहां तक सन्मुख जाकर उस को बीच रास्ते में से मारकर पीछा फिराना अपन को उचित है ॥ ४३ ॥ तब उन पांच सो चोरोंने सेनापति का वचन तहति प्रमाण किया-मान्य किया ॥ ४४ ॥ तब फिर वह अभग्ग-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अभग्गसेण चोर सेणावइ विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ त्ता पंचहिं चोर सएहिं सद्धिं ण्हाए जाव पायाच्छित्ते भोयण मंडवंसि तं विपुलं असणं ४ सुरंच ५ आसाए माणे ४ विहरइ, जिमिय भुतुत्तरागए वियणं समाणे आयंते चोक्खे परमसूइ भूए पंचहिं चोर सएहिं सद्धिं अल्लं चम्मं दुरुहइ २ त्ता सण्णद्धं जाव पहरणे मग्गइतेहिं जाव रवेणं पच्चावरण्ह काल समयंसि सालाडवी चोरपल्लीयाओ णिगच्छइ २ त्ता विसम दुग्ग गहणं ठिएगहिय भत्तपाणीए तं दंडं पडिवाले माणेचिट्ठइ ॥ ४५ ॥ तएणं से दंडे जेणेव अभग्गेसण चोर सेणावइए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अभग्गसेणेणं चोर

अर्थ

सेन सेनापति अशनादि चारों प्रकार का आहार बहुत निष्पन्न कराकर मदिरा के साथ अस्वादता खाता खिलाता बिचरने लगा, जीमकर चुलु आदि कर पवित्र हुवे, तृप्त हुवे फिर पांच सो चोर साथ सन्नह-जीव रक्षी [बक्तर] पहन कर टोपी लगाकर, हथियारों लेकर वासों ग्रहण कर खांडा खड्गादि यावत् वार्दित्र वाजते दिन के चौथे पहर में सन्ध्या समय सालाटवी चोर पल्ली से निकले, निकलकर जहां अन्य को प्रवेश करना दुष्कर ऐसे दुर्गमस्थान पर्वतके कडखे में छिपकर आहार पानी ग्रहण कर उस दंडसेन सेनापति की मार्ग प्रतिक्षा करते-रास्तादेखते रहे हैं ॥४५॥ तब फिर वह दंड सेनापति जहां अभग्गसेन चोर सेनापति है तहां

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सेणावइणा सद्धिं संपलग्गेयावि होत्था ॥ ४६ ॥ तएणं से अभग्गसेण चोर सेणावइ तं दंडं खिप्पामेव हय महिय जाव पडिसेहंति ॥ ४७ ॥ तएणं से दंडे अभग्गसेण चोर सेणावइ हय जाव पडिसेएसमाणे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकार परक्कमे अधारणिज्जेमितिकट्टु, जेणेव पुरिमताले णयरे जेणेव महव्वलराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु सामी ! अभग्गसेणं चोर सेणावइ विसम दुग्गगहणंट्ठिए गहिय भतपाणिए णो खलु से सक्का केणइसु बहु-

आया, आकर अभग्गसेन चोर सेनापति के साथ एकत्रहो संग्राम करने लगा, परस्पर लडने लगे ॥४६॥तब फिर वह अभग्गसेन चोर सेनापति उस दंड सेनापति को शीघ्रही हराया, दहीकी तरह मान मथन किया यावत् दिशोदिश में उस का लस्कर भगाया॥ ४७ ॥ तब फिर दंड सेनापति मनोबल रहित किया काया केबल रहित किया पुरुष का जो अभिमान पराक्रम उस से भृष्ट किया, अभग्गसेन चोर सेनापति का तेज धारन करने समर्थ नहीं रहा, तब वहां से पिछा हटकर पलटकर जहां पुरिमताल नगर जहां महाब्बल राजा तहां आया, आकर हाथ जोडकर यों कहने लगा-यों निश्चय है स्वामी ! अभग्गसेन चोर सेनापति विषम दुर्गस्थानक पर्वत की कडख में बृक्षोंकर वैष्टित गहन स्थान में तहां आहार पानी ग्रहण कर रहा है इसलिये निश्चय कोइ अतीही अश्वके बलकर हाथी के बलकर, जोधे सुभटों के बलकर, स्थके बलकर

सूत्र

एणावि आसवलेण वा हात्थिबलेणवा जोहबलेणवा, रहबलेणवा, चाउरंगिणं पिउरं उरेणं गिण्हत्तए, ताहे सामेणय भेदेणय उवप्पदाणेणय, वीसंभमाणे उपत्तेयावि होत्था, जेदंडेणयविषसे अब्भितरगासी सगसभामितणाइ णियग सयण संबंधि परियणंच विपुलं धणकणगरयण संतसारसावए जेणं भिंदइ अभग्गसेणस्सथ चोरसे अभिक्खण २ महत्थाइं महग्घाइं महरिहाइं पाहुडाइं पेसेइ अभग्गसेणंच चोरसे वीसंभमाणेइ ॥ ४८ ॥ तएणं से महब्बलेराया अण्णयाकयाइ पुरिमताले णयरे एगंमहं महइ महालियं कुडा॰

अर्थ

चतुरंगनी सेना के बलकर ऊपरा ऊपर आता हुवा लष्करभी उसे ग्रहण करने समर्थ नहीं होसकता है, परन्तु वचनादि से सन्तोष के वश्य में कर परस्पर भेद पडाकर वश्य में कर, तथा धनादि देकर वश्य में कर विश्वास प्राप्त कर, प्रतीत उत्पन्न कर, उस के आभ्यन्तर के शिष्यसमान मित्र गौत्री स्वयं के स्वजनादि दास दासी प्रमुख को बहुत धन सुवर्ण रत्नादि होती हुई सार वस्तु देकर तत्काल उस का भेद उपावकर और अभग्गसेन चोर सेनापति को बारम्बार भेट प्रमुख भेज कर महा अर्थवाला बहुत मूल्यवाला उत्तम पुरुष के योग्य इस प्रकार भेटना (निजराना) भेजा कर अभग्गसेन चोर सेनापतिको विश्वास उत्पन्नकर पकडोतो भलांइ पकड सकोगे ॥ ४८ ॥ तब फिर महा बलराजा उस वचन को ध्यान में रख अन्यदा किसी वक्त रिमताल नगर में एक बडी जंगी बहुत ही लम्बी विस्तीर्ण चौडी कुंट के आकारवाली-तथा कूडपास रूप

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

गारसालं करेइ, अणेग खंभसय पासादिय ४ ॥४१॥ तएणं महब्बलेराया अण्णया-कयाइ पुरिमताले णयरे उस्सुक्कं जाव दसरत्तं पमोयं उग्घोसावेइ २ त्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी- गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया! सालाडवीए चोर-पल्लीए, तत्थणं तुब्भे अभग्गसेणं चोरसेणावइस्स करयल जाव वयह-एवं खलु देवा-णुप्पिया! पुरिमताल णयरे महाब्बलस्स रण्णो उसुक्के जाव दसरत्ते पमोद उग्घोसिए तं किण्णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असणं ४ पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेय इहं हव्व-

अर्थ

शाला बनवाई, वह अनेक स्थम्भोंकर वेष्टित चित्तको प्रश्न कारी देखने योग्य अभीरूप प्रतिरूप बनी थी॥४१॥ तब महा बलराजा उस शाला के उत्सव के लिये अन्यदा किसी वक्त दश दिनका दान माफ किया यावत् दश दिनतक प्रमोद उत्सव शुरू किया उस उत्सवका निर्घोष कराया—पडह बजवाया और कुटुम्बिक पुरुष को बोलाकर यों कहने लगा— हे देवानुप्रिय ! तुम सालाटवी चोर पल्ली में जावो वहां तुम अभग्गसेन चोर सेनापति को हाथ जोड वधाकर ऐसा कहना—यों निश्चय हे देवानुप्रिय ! पुरिमताल नगर में महा बलराजाने प्रमोद महोत्सव मंडा है, दश दिन दान लेना भी बन्ध किया है, यावत् दश दिन तक प्रमोदोत्सव का निर्घोष पडह बजाया है, इस लिये आप कहो तो आपको विस्तीर्ण अशनादि चारों प्रकार का आहार पुष्प गंध माला अलंकारादि यहां लाकर अर्पण करूं और जो आप की इच्छा हो तो आप

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

माणिज्ज उदाहु सयमेवगच्छित्ता॥५०॥तएणं कोडुंबिय पुरिसे महब्बलस्स रण्णो करयल जाव पडिसुणेइ २त्ता पुरिमतालाओ णयराओ पडिनिक्खमइ २त्ता णाइविकिट्ठेहिं अद्धा णेहिं सुहेहिं पातरासेहिं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ २त्ता अभग्गसेण चोरसेणावइस्स करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताल णयरे महब्बलस्स रण्णो उस्सुक्के जाव उदाहु सयमेवगच्छित्ता ? ॥५१॥ तएणं से अभग्ग- सेणे ते कोडुंबिय पुरिसं एवं वयासी-अहण्णं देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे सय-

अर्थ

स्वयंमेव वहां पधारो ॥ ५० ॥ तब फिर कौटुम्बिक पुरुष महा बलराजा का वचन हाथ जोड शिरसावर्त अंजली कर विनय सहित श्रवण किया. श्रवण कर पुरिमताल नगर से निकलकर धीरे २ रास्ते में सुख सुख से मुकाम करता हुवा, जिमन सिरावन कलेवा आदि करता हुवा, जहां सालाटवी चोर पल्ली थी तहां आया, आकर अभग्गसेन चोर सेनापति को जय विजय कर बधाया, बधाकर यों कहने लगा—यों निश्चय हे देवानुप्रिय ! पुरिमताल नगर में महा बलराजाने प्रमोद उत्सव मंडा है, दश दिन दाण [हांसल] भी बन्ध किया है, इसलिये कहीये आपको अशनादि यहां लाकर अर्पण करूं कि आपस्वयमेव वहां पधारते हो ? ॥ ५१ ॥ तब फिर वह अभग्गसेन चोर सेनापति उस कौटुम्बिक पुरुष को यों कहने लगा— हे देवानुप्रिय ! पुरिमताल नगर में मैं स्वयं ही अपना सब परिवार लेकर आताहूं. यों कहकर उस

सूत्र

मेवगच्छामिए, कोडुंबिय पुरिसे सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ ॥ ५२ ॥ तएणं से अभग्गसेण चोरसेणावइ बहूहिं मित्त जाव परिवुडे ण्हाए जाव पायच्छित्ते सव्वालंकार विभूसिए, सालाडवी चोरपल्लीओ पडिणिक्खमइ जेणेव पुरिमताल णयरे जेणेव महब्बलराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल परिग्गहियं महब्बलं रायं जएणं विजएणं बद्धावेइ बद्धावेइत्ता महत्थं जाव पाहुडं उवणेइ॥५३॥तएणं से महब्बलराया अभग्गसेणस्स चोरस्स त महत्थं जाव पडिच्छइ, अभग्गसेण चोरसे सक्कारेइ समाणेइ विसज्जेइ, कुडागार सालवसे आवसएहिं दलयइ ॥ ५४ ॥ तएणं से अभग्गसेण चोरसेणावइ

अर्थ

कौटुम्बिक पुरुष को वस्त्र ताम्बुलादि से सत्कार सन्मान कर पीछा विदा किया ॥ ५२ ॥ तब फिर अभग्गसेन चोर सेनापति बहुत मित्र ज्ञातीयों के परिवार से परिवरा हुवा स्नान कर शुद्ध हो सर्व अलंकार वस्त्राभरण पहनकर सालाटवी चोर पल्ली से निकला, निकलकर जहां पुरिमताल नगर जहां महा बलराजा तहां आया, तहां आकर दोनों हाथ जोड जय हो विजय हो इस प्रकार बधाकर महा मूल्य राज्य योग भेटना (निजराना) अर्पण किया ॥ ५३ ॥ तब फिर वह महा बलराजा अभग्गसेन चोर सेनापति का वह महा मूल्य भेटना ग्रहण किया, अभग्गसेन चोर सेनापति को सत्कार सम्मान दिया और उस कूटाकार शाला में उस का उतारा कराया. रहने का स्थान दिया ॥ ५४ ॥ तब फिर वह अभग्गसेन चोर सेनापति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

महब्बलेणं रण्णा विसज्जिए समाणे जेणेव कुडागारसाला; तेणेव उवागच्छइ २ || ५५ || तएणं से महब्बलराया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया! विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ त्ता तं विपुलं असणं ४ सुरंच ५ सुबहु पुप्फगंधमल्लालंकारंच अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स कुडागार सालाए उवणेह || ५६ || तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा करयल जाव उवणेइ || ५७ || तएणं से अभग्गसेण बहुहिं मित्तणाइ जाव सद्धिं परिबुडे ण्हाए जाव सव्वालंकार विभूसिए, तं विपुलं असणं ४ सुरंच ५ आसाएमाणे ४ पमत्ते विहरइ || ५८ ||

अर्थ

महा बलराजा का भेजा हुवा जहां कूडागार शाला थी तहां आया, आकर उस में रहने लगा || ५५ || तब फिर महा बलराजा कौटुम्बिक पुरुष को बोलाकर यों कहने लगा-जावो तुम हे देवानुप्रिय ! विस्तीर्ण अशनादि चारों आहार तैयार कराकर मदिरा के साथ बहुत फल फूल सुगन्धमाला अलंकार अभग्गसेन चोर सेनापति के लिये कूडागार साला में भेजो || ५६ || तब फिर वह कौटुम्बिक पुरुप हाथ जोड आज्ञा प्रमान कर पूर्ववत् अशनादि चारों आहार नशा युक्त तैयार कर अभग्गसेन चोर सेनापति को अर्पन किया || ५७ || तब फिर अभग्गसेन चोर सेनापति बहुत मित्रों के साथ परिवरा हुवा स्नान करके पूर्ववत् सर्व अलंकार से विभूषित हो वह बहुत अशनादि चारों आहार मदिरा के साथ अस्वादता खाता खिलाता,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तएणं से महब्बलराया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ२त्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरिमतालस्स णयरस्स दुवाराइं पिहिंति२त्ता अभग्गसेण चोरसेणावइ जीवग्गाहं गेण्हंति२त्ता ममं उवणेह, तं तविउवणेति॥५९॥तएणं महब्बलराया अभग्गसेण चोराए तेणं विहाणेणं वज्झ आणवेए ॥ ६० ॥ एवं खलु गोयमा ! अभग्गसेण चोरसेणावइ पुरा जाव विहरइ ॥६१॥ अभग्गसेणेणं भंते ! चोरसेणावइ कालमासे कालंकिच्चा कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! अभग्गसेण चोरसेणावइ सत्तावीसं वासाइं परमाउपालित्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूली भिण्णकए समाणे

अर्थ

प्रमादी(बेहोश) बनकर विचरने लगा ॥५८॥ तब फिर महा बलराजा कौटुम्बिक पुरुष को बोलाकर यों कहने लगा जाओ तुम हे देवानुप्रिय! पुरिमताल नगर के द्वार बन्ध करो, अभग्गसेन को जिन्दा पकड मेरे सुपरत करो; कौटुम्बिक पुरुषने तैसा ही किया, ॥५९॥तब फिर महा बलराजा अभग्गसेनको बन्धाकर. हे गौतम ! तुम देख आये इसप्रकार मारने की आज्ञा दी है ॥६०॥ यों निश्चय हे गौतम ! अभग्गसेन पूर्व काल में किये कर्म के फल भोगवता विचरता है ॥ ६१ ॥ अहो भगवन् ! यह अभग्गसेन काल के अवसर काल कर यहांसे कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? हे गौतम ! अभग्गसेन चोर सेनापति सत्तावीस (२७) वर्ष का पूर्ण आयुष्य भोग कर आज तीसरे प्रहर में शूली से शरीर भेदाया हुवा आयुष्य पूर्ण कर इस ही रत्नप्रभा नरक में

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए उक्कोसेणं णेरइएसु उववज्जिहिंति, सेणं ताओ अणंतरं उवट्टिता एवं संसारो जहा पढमे जाव पुढवी तओ उवट्टित्ता वाणारसीए णयरीए सुयरत्ताए पच्चायाहिंति, सेणंमच्छसोयरिएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव वाणारसीए णयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चाहिंति, सेणं तत्थ उमुक्कबालभावे एवं जहा पढमे जाव अंतं काहिंति॥ ६२॥ निक्खेवो॥ दुहविवागाणं तइयं अज्झयणस्स सम्मत्तं॥

अर्थ

उत्कृष्ट एक सागरोपम के आयुष्यमें नेरियेपने उत्पन्न होगा, वहां अंतर रहित निकलकर मृगापुत्रकी तरह संसार परिभ्रमण करेगा यावत् पृथव्यादि के भव करके वहांसे निकलकर बनारसी नगरीमें शूकरपने उत्पन्न होगा, वहां सूयरका पालनेवाला उसे मारेगा, वहां से निकलकर बनारसी नगरीमें शेठ कुलमें पुत्रपने उत्पन्न होगा, वहां बाल्यावस्थासे मुक्त हो दीक्षा ग्रहणकर मृगापुत्र की तरह सिद्ध होगा यावत् सर्व दुःखका अन्त करेगा ॥ इति दुःख विपाक का तीसरा अभग्गसेन चोर का अध्ययन संपूर्ण ॥ ३ ॥ × ×

* चतुर्थ-अध्ययनम् *

सूत्र

जइणं भंते ! चउत्थस्स उक्खेवो-तेणंकालेणं तेणंसमएणं सोहंजणीणामं णयरी होत्था, रिद्धात्थिमिय ॥ १॥ तीसेणं सोहंजणीणयरी बाहिया उत्तरपुरत्थिम दिसीभाए देवरमणेणामं उज्जाणे होत्था,तत्थणं अमोहस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था,पुराणे॥ २॥ तत्थणं सोहंजणीणयरीए महच्चंदेरायाहोत्था महया ॥ ३ ॥ तत्थणं महचंदस्स रण्णो सुसेसेणेणामं अमच्चे होत्था, सामभेयदंड णिग्गह कुसले॥ ४ ॥ तत्थणं सोहंजणिए णयरीए सुदंसणा णामं गणिया होत्था वण्णओ ॥ ५ ॥ तत्थणं सोहंजणी णयरीए

अर्थ

चौथा अध्ययन—उस काल उस समय में सोहंजनी-नामकी नगरी ऋद्धि समृद्धिकर संयुक्त थी ॥ १ ॥ उस सोहंजनी नगरी के बाहिर ईशान कौन में देवरमन नाम का उध्यान था, तहां अमोघ नामे यक्ष का यक्षायतन (देवालयथा) वह बहुत काल का जीर्ण हुवा था ॥ २ ॥ तहां सोहंजनी नगरी में महाचंद नाम का राजा राज करता था. वह महा हिमवंत पर्वत समान था ॥ ३ ॥ उस महाचंद राजा के सुसेन नाम का प्रधान था. वह प्रधान शाम-वचनादि से सन्तोषकर, भेद-परस्पर भेद पडाकर, दंड-निग्रह करके इत्यादि राजनीति के शास्त्र में कुशल था ॥ ४ ॥ तहां सोहंजनी नगरी में सुदर्शना नामकी गणिका रहती थी, उस का वर्णन कामद्धज गणिका जैसा जानना ॥ ५ ॥ उस सोहंजणी नगरी मे सुभद्र नामका सार्थ

सुभद्दे णामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे ॥ ६ ॥ तस्सणं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा णामं भारीया होत्था अहीण॥७॥तस्सणं सुभद्दस्ससत्थवाहस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सगडे णामं दारए होत्था अहीण ॥ ८ ॥ तेणंकालणं तेणंसमएणं समणे भगवं महावीरे समोसरणं. परिसा राया णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसाराया पडिगओ ॥९॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव रायमग्गे उग्गाढे. तत्थणं हत्थी आसी पुरिसे तेसिणं पुरिसाणं मज्झगयं पासइ, एगं स इत्थियं

अर्थ

वाही रहता था वह ऋद्धिवंत था ॥ ६ ॥ उस सुभद्र सार्थ वाही के भद्रा नाम की भार्या थी वह संपूर्ण अंगवाली सुरूप थी ॥ ७ ॥ उस सुभद्र सार्थवाही का पुत्र भद्रा भार्या का आत्मज शकट नामका कुमार था वह भी सर्वांग पूर्ण सुरूप था ॥ ८ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषद तथा राजा आये, धर्मकथा सुनाइ, परिषदा राजा पीछे गये॥९॥उस वक्त श्रमण भगवंत के जेष्ट शिष्य गौतम स्वामी छठ-बेलाका पारनालेने श्रमण भगवंतकी आज्ञा लेकर सोहंजनी नगरीमें गौचरीगये, फिरते हुवे राज्यपथं में पूर्वोक्त प्रकार ही बहुत हाथी घोडे सुभटों के मध्य में एक स्त्री पुरुष का जोडा उलटी मुस्को से बन्धा हुवा, जिनके कान नाक छेदन किये, पूर्वोक्त प्रकार फूटा ढोल बजाते उद्घोषना करते देखा, तैसे ही भगवंत के पास आये आहार बताया व्यतीत कर नीवेदनकर पूछने लगे-अहो भगवन्! ये स्त्री पुरुष कौन है और पूर्व जन्म

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

पुरिसं अवउडगबंधणं उक्खत्तं जाव उघोसणाचित्ता; तहेव जाव ॥१०॥ भगवं वागरेइ एवं खलु गोयमा ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं ईहेव जंबूद्दीवेदीवे भारहेवासे छगलपुरे णयरे होत्था, तत्थ सिंहगिरीणामं राया होत्था महया ॥११॥ तत्थणं छगलपुरे णयरे छण्णिए णामं छगलिए परिवसइ, अड्ढे, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे॥१२॥तत्थणं छण्णिगय-छागलियस्स बहवे-अजाणय, एलाणय, रोज्झाणय, वसभाणय, ससयाणय, पसयाणय सूयराणय, सिंघाणय, हरीणाणय, मयुराणिय, महिसाणिय, सहस्सबद्धाणिय, जुहा-

अर्थ

में क्या पाप का संचय किया है जिससे नरकके जैसे दुःख का प्रत्यक्षानुभव कर रहा है॥१०॥भगवंत बोले यों निश्चय हे गौतम ! उस काल उस समय में इस ही जंबूद्वीप के भारत वर्ष में छगलपुर नाम का नगर था, तहां सिंहगीरी नामका राजा राज्य करता था, वह महा हेमवंत पर्वत समान था ॥ ११ ॥ उस छागल पूर नगर में छन्निक नामका खाटकी (कसाइ) रहता था, व ऋद्धिवंत था और अधर्मी यावत् कुकर्म कर के आनन्द पाता था ॥ १२ ॥ उस छन्निक खाटकी के बहुत से छाला-बकरे, एलक-मेंढे, रोझ, बेल, सुसले सुवर, सिंह, हिरन, मयुर, भेंसे, इत्यादि हजारो पशूओं का युथ वाडे के विषे पूरा हुवा-भराहुवा निरुंधन किया हुवा रक्खा था ॥ १३ ॥ और भी तहां बहुत पुरुषो जिन को आहार पानी तनखा देता था, वे

सूत्र

णिय बाडगंसि सण्णिरुद्धाइं चिट्ठइ ॥ १३ ॥ अण्णेय तत्थ बहवे पुरिसा दिण्णभइ भत्त वेयणा बहवे अए जाव महिसेय सारक्खमाणा संगोवेमाणा चिट्ठइ॥ १४॥ अण्णेय से बहवे पुरिसा अयाणय जाव गिहंसिणिरुद्धा चिट्ठंति ॥१५॥ अण्णेय से बहवे पुरिसा दिण्णभइभत्त वेयणा बहवे अएय जाव महिसेय जीवियाओ ववरोविंति २त्ता मंसाइं कप्पणी कप्पियाइं करेइ २त्ता छाण्णियस्स उवणेइ।१६। अण्णेय से बहवे पुरिसा दिण्णभत्त वेयणा ताइं बहुयाइं अयमंसाइयं जाव महिसमंसाइयं, तवएसुय कवल्लीसुय

अर्थ

बकरे यावत् भैंसों का संरक्षण करते दाना घांस पानी की संभाल लेते चोरादि उपद्रव से बचाते हुवे विचर रहे थे ॥ १४ ॥ और भी बहुत से मनुष्यों को वह खान पान नहीं देता था वे उन बकरे यावत् भैंसे को घरों में बाडे में गोपकर छिपाकर संरक्षण कर रखे थे ॥ १५ ॥ और भी बहुत पुरुषों को वह खान पान नहीं देता था, वे बहुत से बकरे यावत् भैंसे का जीवित से रहित कर मारकर, उन के मांस के छुरा आदिकर टुकडे २ कर उस छणिक खटीक को देते थे ॥ १६ ॥ और भी बहुतसे पुरुषों उस बहुतसे बकरे के मांस को यावत् भैंस के मांस को, तावणी में कडाह में कुंभ (घडे) में भूंजने के लिये अग्निपर चडाकर तलते थे मूला-टुकडा करते थे, सेक-भूंजकर सोला कर, उस को राज मार्ग में बेचते हुवे आजीविका

सूत्र

कंदूसुय भज्जणाएसुय,इंगालेसुय,तलेंतिय, सोलिंतिय,तलिंताय सोलिंताय राय मग्गंसि वित्तिकप्पेमाणा विहरति॥१७॥अप्पणांवियणं से छण्णिए छागलिए ॥१८॥ एय कम्मे एविसेसं बहुपावकम्मं कलिकलुसं सम्मज्जिणित्ता, सत्तवास सयाइं परमाउपालिता काल-मासे कालंकिच्चा चउत्थीए पुढवीए उक्कोसेणं दस सागरोवम ट्ठिइएसु णरएसु णेरइयत्ताए उववण्णा॥१९॥ तएणं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारिया जावणिदुयायावि होत्था, जाता दारगा विणिहायमावज्जइ॥२०॥तएणं से छण्णिए छागलीए चउत्थीए पुढवीए अणं-तरंउवट्टित्ता इहव सोहंजणीए णयरीए सुभद्दस्स सत्थवाहस्स, भद्दाए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥२१॥तएणं सा सुभद्दासत्थवाहीणी अण्णयाकयाइ णवण्हं मासाणं

अर्थ

करते हुवे विचरते थे ॥ १७ ॥ वह छन्निक खाटिक आप स्वयं भी उन बहुत से बकरे का यावत् भैंसे का मांस खाता हुवा विचरता था ॥ १८ ॥ इस प्रकार वह छन्नीक कसाइ प्रधान अशुभ कर्मों का उपार्जन कर बहुत पापकर्मों का के कारण का संचयकर सातसो वर्ष का उत्कृष्ट आयुष्य का पालन कर,काल के अवसर में काल पूर्णकर चौथी नरकमें उत्कृष्ट दशसागरोपम की स्थितिपने नरक में नेरीयेपने उत्पन्न हुवा ॥१९॥ तब वह सुभद्र सार्थवाहीनी मृतवांझ थी उसके बालक जाते रहते नहीं थे॥२०॥तब फिर वह छन्निक खाटकी चौथी नरक से निकलकर सोहंजनी नगरी में सुभद्र सार्थवाही की भद्रा भार्या के कुक्षीमें पुत्रपने उत्पन्न हुवा॥२१॥ तब फिर

बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया ॥ २२ ॥ तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो जायमे तंचेव सगडस्स हेट्ठओ ठवेइ २ त्ता दोच्चंपि गिण्हावेइ २ त्ता अणुपुव्वेणं सारक्खइ, संगोवेइ संवुड्ढेइ,जहा उज्झियए॥सुभद्दे लवणे कालगया से विगिहाओ णिछूडे॥२३॥ तएणं से सगडेदारए साओ गिहाओ णिछूडे समाणे, सिंघाडगं तहेव जाव सुदंसणाए गणिए सद्धिं संपलग्गेयावि होत्था॥ २४ ॥ तएणं से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारगं अण्णयाकयाइ सुदरसिणाए गणियाए गिहाए णिछूभावेइ २ त्ता सुदरिसणं गणियं

अर्थ

भद्रा सार्थवाहीनी एकदा प्रस्तावे नव महीने प्रतिपूर्ण होने से बालक का जन्म दिया॥ २२ ॥ तब उस बालक के माता पिता जन्मते ही बालक को गाडे के नीचे रखा, कर रख तुर्त उठा लिया, अनुक्रमसे रक्षण करती हुई-गोपवती हुई दुग्धादि पानकरा बृद्धि करती हुई इत्यादि सब अधिकार दूसरे अध्ययन में उज्झित कुमारका कहा तैसा इसका भी सब जानना. विशेष में गाडे के नीचे रख उठालिया, इसगुण निष्पन्न इस का नाम शकट कुमार दिया यावत् सुभद्र सार्थवाही समुद्र में काल प्राप्त हुवे, अनुक्रमसे वह पतिके शोग से भद्रा सार्थवाहीनी भी मृत्युपाई, कोतवालने करजदारको घर सुपरतकर शकट बालकको घरसे निकालदिया,॥२३॥ तब वह शकट कुमार निराधार निरंकुश हुवा भटकता फिरता सुदर्शना गणिका से लुब्ध बना॥२४॥ तब वह सुसेन नामे प्रधान अन्यदाकिसी वक्त उस शकट कुमारको सुदर्शना वैश्या के घरसे निकाल कर, सुदर्शना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ

सूत्र

अभिंतरए ठवेइ २ त्ता ॥ २५ ॥ तएणं से सगडेदारए सुदरिसणाओ गिहाओ णिछुभेसमाणे अण्णत्थ कत्थइ सूइंवा खूइंवा अलभ, अण्णयाकयाइ रहस्सियं सुंदरिसणागिहंसि अणुप्पाविसइ, सुदरिसणाए सद्धिं उदालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥ २६ ॥ इमंचणं सुसेणं अमच्चे ण्हाए जाव विभूसिए मणुस्स वग्गुराए जेणेव सुदरिसणाए गणिया गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पासइ सगडंदारयं सुदरिसणाएसद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे पासइ, आसुरुते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडि णिडाले साहट्टु सगडंदारयं पुरिसेहिं गिण्हावेइ २ त्ता अट्ठि जाव महियं करेइ, अवउडग-

को अपनी स्त्री बनाइ अभ्यन्तर घरमें स्थापनकी ॥ २५ ॥ तब वह शकट कुमार सुदर्शन गणिकाके घरसे निकाला हुवा अन्य किसी भी स्थान रति-सुख प्राप्त कर सका नहीं. अन्यदा किसी वक्त गुप्तपने सुदर्शना गणिका के घर में प्रवेश कर सुदर्शना गणिका के साथ उदार प्रधान मनुष्य सम्बन्धी काम भोग भोगवता विचरने लगा ॥ २६ ॥ उस वक्त सुसेन प्रधान भी स्नान कर वस्त्रभूषणादि से अलंकृत हो मनुष्यों के परिवार से परिवरा हुवा जहां सुदर्शन गणिका का घर था तहां आया, आकर सुदर्शना गणिका के साथ शकट बालक को उदार प्रधान भोग भोगवता देखकर, शीघ्र ही क्रोधातुर हुवा सर्प के ज्यों फूंफाटे करता हुवा तीनशल्य निलाडपर चराकर शकट बालकको अन्य पुरुषके पास पकडाया, पकडाकर ईटों पथरों लातों घुटने

सूत्र

बंधणं करेइ, जेणेव महचंदेराया तेणेव उवागच्छइ२त्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु सामी ! सगडेदारए ममं अंतपुरियंसि अवरद्धे ॥ २७ ॥ तएणं से महचंदे-राया सुसेणं अमच्चं एवं वयासी-तुमं चेवणं देवाणुप्पिया ! सागडस्स दारगस्स दंड-निवत्तेहिं ॥ २८ ॥ तएणं से सुसेण अमच्चे महच्चंदेणं रण्णा अब्भणुण्णाए समाणे सगडं दारयं सुदरिसणं च गणियं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥ २९ ॥ तं एवं खलु गोयमा ! सगडेदारयं तं पुरापोराणाणं दुच्चिण्णाणं जाव विहरइ ॥ ३० ॥ सगडेणं भंते ! दारए कालगए कहिं गच्छहिंति कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा !

अर्थ

खुनीकर खूबमराया, उस की हडीयों तोड डाली, दही के ज्यों मथन किया, उल्टी मुसकों से बन्धा, जहां महाचंदराजा था तहां लाया, लाकर महाचंदराजासे हाथ जोडकर यों कहने लगा—यों निश्चय हे स्वामी! इस शकट कुमारने मेरे अन्ते पुर में अत्याचार किया है ॥ २७ ॥ तब महाचंद राजाने सुसेन प्रधानसे कहा, हे देवानु-प्रिय ! तुम ही तुमारी इच्छा प्रमाने शकट कुमार को जैसा जानो वैसा दंडकरो ॥ २८ ॥ तब फिर वह सुसेन प्रधान महाचंद राजाकी आज्ञाहुवे शकट कुमारको और सुदर्शन गणिकाको हे गौतम तुमने देखा उस प्रकार बन्धन में बन्धकर मारने की आज्ञा दी है ॥ २९ ॥ इसलिये हे गौतम ! शकट कुमार पूर्वोपार्जन किये बहुत काल के पाप के फल भोगवता हुवा विचर रहा है ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! शकट कुमार

सूत्र

सगडेणं दारए सत्तावण्णं वासाइं परमाउपालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे एगं महं अउमयं तत्तं समजोइ भूयं इत्थी पडिमं अवतासाविए समाणे कालमासे कालं-किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जिहिं ॥ ३१ ॥ सेण तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता रायगिहे णयरे मातंगकुलंसि जमलत्ताए पच्चायाहिं ॥ ३२ ॥ तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णिवत्तबारसमस्स दिवसस्स इमं एयारूवं णामधेज्जं करिस्संति, होउणं दारए सगडेणामेणं होउणं दारिए सुदरिसणा णामेणं ॥ ३३ ॥ तएणं सेसगडे दारए उमुक्कबाल भावे जोव्वणगमणुपत्ते भविस्सइ ॥ ३४ ॥ तएणं सा सुदरिसणा

अर्थ

काल के अवसर काल करके कहां जावेगा. कहां उत्पन्न होवेगा ? हे गौतम ! शकट कुमार सत्तावन वर्ष का उत्कृष्ट आयुष्य भोगव कर आज दिन के तीसरे भागमें एकबडी लोह-पोलाद की स्त्री की प्रतिमा (पुतली) अग्निसे ऊष्णकी हुई अग्नि वर्ण समान उसका का शकटकुमार को द्रढालिंगन कराने से कालके अवसर काल करके इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नेरीयेपने उत्पन्न होगा ॥ ३१ ॥ तहां से अंतर रहित निकलकर राजग्रही नगरी में चांडाल के कुल में युगल—जोडेपने उत्पन्न होंगे ॥ ३२ ॥ तब फिर बालक के मातापिता इग्यारवे दिन अतिक्रमे बारवे दिन इस प्रकार नाम स्थापन करेंगे—पुत्र का शकट नाम और पुत्री का सुदर्शना नाम देंगे ॥ ३३ ॥ तब फिर शकट बालक बाल्यावस्था से मुक्त हो यौवन अवस्थाको प्राप्त होवेगा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

त्ति दारिया उमुक्कबालभावा विण्णाय जोव्वणगमणुपत्ता रूवेणय जोव्वणेणय लवण्णेणय उक्किट्ठा उक्किट्ठ सरीरया भविस्सइ ॥ ३५ ॥ तएणं से सगडेदारए सुदरिसणाए रूवेणय लावण्णेणय जोव्वणेणय समुच्छिए ४ सुदरिसणाए भगिणीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ ॥ ३६ ॥ तएणं से सगडेदारए अण्णया कयाइ सयमेव कुडग्गाहत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सइ ॥ ३७ ॥ तएणं से सगडदारए कूडग्गाहे भविस्सइ अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ॥ ३८ ॥ एयकम्मेसु बहुपावं जाव समज्जिणित्ता कालमासं कालंकिच्चा इमीसे रयण-

अर्थ

॥ ३४ ॥ तब फिर वह सुदर्शना कुमारी भी बाल्यावस्था से मुक्त हो यौवनावस्था को प्राप्त होगी, शरीर की क्रान्ति आकार उस का संयुक्त यौबन वय विशेष कर लावण्यता—स्त्री की चेष्टा कर प्रधान स्त्री के लक्षण कर प्रधान इस प्रकार होगी ॥ ३५ ॥ तब फिर वह शकट बालक उस सुदर्शना के रूप में यौवन में लावण्यता में मूर्च्छित हुवा अपनी बहिन के साथ उदार प्रधान मनुष्य सम्बन्धी काम भोग भोगवता विचरेगा ॥ ३६ ॥ तब शकट बालक एकदा प्रस्तावे कूडग्राही—चुगलखोरका होदा प्राप्त करेगा ॥ ३७ ॥ तब फिर वह शकट बालक कूडग्राही अधर्मी यावत् कूकर्म कर आणन्द प्राप्त करेगा ॥ ३८ ॥ यों महा पाप का

सूत्र

प्पभाए पुढवीए णेरइएत्ताए उववण्णे, संसारो तहेव जाव पुढवीसेणं, तओ अणंतरं उवट्टित्ता वाणारसीए णयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिं, तिसेणं तत्थणं मच्छ मच्छ बंधिएहिं वहिए, तत्थेव वाणारसीए णयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिंति, बोहिं पव्वज्जा सोहम्मेकप्पे. महाविदेह वासे सिज्झिहिंति ॥ ३९ ॥ णिक्खेवो दुहविवागस्स चउत्थं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ४ ॥ *

अर्थ

उपार्जन कर काल के अवसर में काल पूर्ण कर इस ही रत्नप्रभा पृथ्वी में नेरीयेपने उत्पन्न होगा, तहां से अन्तर रहित निकलकर वनारसी नगरी में मच्छपने उत्पन्न होगा, तहां मच्छ वधक के मारने से उस ही वनारसी नगरी में शेठ का पुत्र हो दीक्षा धारन करेगा, वहां से आयुष्य पूर्ण कर सौधर्म देवलोक में देवता होगा, वहां से महा विदेह क्षेत्र में जन्म ले संयम ले मोक्ष प्राप्त करेगा ॥ ३९ ॥ निक्षेप ॥ इति दुःख विपाक का शकटकुमार का चौथा अध्ययन संपूर्णम् ॥ ४ ॥ × ×

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पञ्चम-अध्ययनम् ॥

सूत्र

जइणं भंते ! पंचयस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ—एवं खलु जंबू ! तेणंकालेणं तेणं-समएणं कोसंबी णामं णयरी होत्था, रिद्धित्थमिय, बाहिं चंदोतरणे उज्जाणे, सेयभद्दे जक्खे, ॥ १ ॥ तत्थणं कोसंबीय णयरीए सयाणिए णामंराया होत्था, महयाहिमवंत ॥ २ ॥ तस्सणं सयाणिस्स रण्णो मियावती णामं देवी होत्था, अहीण जाव सुरूवा ॥ ३ ॥ तस्सणं सयाणिस्स रण्णो पुत्ता मियावतीए देवीए अत्तए उदयणे णामं कुमारे होत्था, अहीण जाव जुवराया ॥ ४ ॥ तस्सणं उदयणस्स कुमारस्स पउमावइणामं

अर्थ

पांचवा अध्ययन-यों निश्चय हे जम्बू ! उस काल उस समय में कोसंबी नाम की नगरी ऋद्धि समृद्धि कर संयुक्त थी. कोसंबी नगरी के बाहिर ईशान कौन में चन्द्रोतर नामका उध्यान था, उस मे श्वेतभद्र यक्ष का यक्षायतन था ॥ १ ॥ तहां कोसंबी नगरी में सतानीक नाम का राजा राज्य करता था, वह बडाहिमवंत पर्वत समान था ॥ २ ॥ सतानिक राजा के मृगावती नामकी रानी संपूर्ण अंगवाली सुरूपाथी ॥ ३ ॥ सतानीक राजा का पुत्र मृगावती रानी का अंगजात उदयन नाम कुमार था, वह समस्त इन्द्रियकरा सहित था उसे युव राजपद पर स्थापन किया था ॥ ४ ॥ उदयन कुमार के पद्मावती नामकी देवीथी ॥५॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ

देवी होत्था ॥५॥ तत्थणं सयाणियस्स सोमदत्ते णामं पुरोहिए होत्था, रिउव्वेदयजुव्वेदे जाव बंमणयेसु कुसले ॥६॥ तस्सणं सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ता णाम भारिया होत्था ॥ ७ ॥ तस्सण सोमदत्तपुत्ते वसुदत्ताए अत्तए वहस्सईदत्ते णामं दारए होत्था अहीण॥८॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणं भगवं महावीरे समोसरिए॥९॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं भगवं गोयमे तहेव जाव रायमग्गं उग्गाढे तहेव पासइ हत्थी आसे पुरिसे मज्झेपुरिसं, चिंत्ता तहेव पुच्छइ—पुव्वं भवं॥१०॥ भगवं वागरेइ एवं खलु गोयमा! तेणंकालेणं तेणंसमएणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहेवासे सव्वओभद्दे णामं णयरी होत्था

सूत्र

उस संतानिक राजा के सोमदत्त नामका पुरोहित था, वह ऋजुवेद यजुरवेद शामवेद अथर्वनवेद चारोवेंद आदि बहुत शस्त्र का ज्ञान था ब्राह्मण विद्या में कुशल था ॥ ६ ॥ सोमदत्त पुरोहित के वसुदत्ता नामकी भार्या थी ॥ ७ ॥ उस सोमदत्त का पुत्र वसुदत्ता का आत्मज बृहस्पतिदत्त नाम का पुत्र वह पांचों इन्द्रिय कर पूर्ण था ॥ ८ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी समोसर ॥ ९ ॥ उस काल उस समय में भगवंत गौतम स्वामी पूर्वोक्त रीति प्रमाणे गौचरी पधारे. फिरते हुवे राजपंथ में पूर्वोक्त प्रमाने हाथी घोडे पुरुषों के वृन्द में एक पुरुष बन्धन में बन्धा देखकर चिन्ता उत्पन्न हुई. पूर्वोक्त प्रकार भगवंत से पूर्वभव पूछा ॥ १० ॥ भगवंतने कहा-यों निश्चय हे गौतम! उस काल उस समय में इस ही

सूत्र

रिद्धित्थमिय ॥ ११ ॥ तत्थणं सव्वओभद्दे णयरे जियसत्तू णामं राया होत्था ॥ १२ ॥ तत्थणं जियसत्तुस्स रण्णो महेसरदत्तेणामं पुरोहिए होत्था, रिउबेय ४ जाव अत्थव्वण कुसलेयावि होत्था ॥ १३ ॥ तएणं से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तुस्स रण्णो रज्जबल विवड्ढण ट्ठयाए कल्लाकल्लिं एगमेगं माहण दारगं एगमेगं खत्तिय दारगं, एगमेगं, वइस्स दारगं, एगमेगंसुद्द दारगं गिण्हावेइ २ त्ता तेसिं जीवतगाणं चेव हियउडए गिण्हावेइ २ त्ता जियसत्तुस्स रण्णो संति होमं करेइ २ ॥ १४ ॥ तएणं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमी चउद्दसीसु दुवे २ माहण खत्तिय वइस्स सुद्दे,

अर्थ

जंबुद्वीप के भरत क्षेत्र में सर्वतो भद्र नाम की नगरी ऋद्धिस्मृद्धि युक्त थी ॥ ११. उस सर्वतो भद्र नगरी में जितशत्रु राजा राज्य करता था ॥ १२ ॥ जितशत्रु राजा के महेश्वरदत्त नाम का पुरोहित था, वह ऋजु आदि यावत् अथर्वनवेद में कुशल था ॥१३॥ तब फिर वह महेश्वरदत्त पुरोहित जितशत्रु राजा के राज्यबल की बृद्धि के लिये सदैव (दिन २ परते) एकेक ब्राह्मन का पुत्र, एकेक क्षत्रीका पुत्र, एकेक वैश्य का पुत्र और एकेक शूद्रका पुत्र यों चार लडको को पकडकर उन के जीवते का हृदय का मांसपिंड निकाल कर जितशत्रु राजा के सुख शान्ति के लिये होम करता था, ॥ १४ ॥ तब फिर वह महेसरदत्त पुरोहित अष्टमी चतुर्दशी के दिन-दो ब्राह्मण के, दो क्षत्री के, दो वैश्य के, और दो शूद्र के यों ८ बालको को

सूत्र

चउण्णं मासाणं चत्तारि २, छण्हं मासाणं अट्ठ २, संवच्छरस्स सोलस्स २, जाहे २ त्रियणं जियसत्तूणं राया परबलेणं अभिभुज्जइ ताहे तहिं त्रियणं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसयं माहणं दारगाणं, अट्ठसयं खत्तिय दारगाणं, अट्ठसयं वइस्स दारगाणं, अट्ठसयं सुद्दारगाणं, पुरिसेहिं गिण्हावेइ २ त्ता तेसिं जीवंताणं चेव हय उडियाओ गिण्हावे २ त्ता जियसत्तुस्स रण्णो संतिहोमं करेइ ॥ १५ ॥ तएणं से परबले खिप्पामेव विद्दंसइ वा पडिसेहिज्जइवा ॥ १६ ॥ तएणं से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे ४ सुबहु पावं जाव समज्जिणित्ता तीसंवास सयाइं परमाउपालिता, कालमासे कालं

अर्थ

पकडाकर उक्त प्रकार मारता था, चौमासी २ (चार २ महीने) में चार ब्राह्मण के यावत् चार शूद्र के यों १६ बालको को मारता था, छे छे महीने में आठ ब्राह्मण के यावत् आठ शूद्र के यों ३२ लडको को मारता था, और वर्षों वर्ष सोला ब्राह्मण के बालक यावत् सोला शूद्रके बालक यों ६४ बालकों को मारता था, और जिस २ वक्त जितशत्रु राजा पर शत्रु के कटक का भय तथा ओचाट उत्पन्न होता था तब १०८ ब्राह्मण के पुत्र, १०८ क्षत्री के पुत्र, १०८ वैश्य के पुत्र और १०८ शूद्र के पुत्र, यों ४३२ लडको को आपके पास पकडाकर मंगाता उनका जीवतेका कलेजेका मांस पिंड निकालकर जितशत्रु राजा के सुख शान्ति के लिये होम करता था ॥१५॥ इस प्रकार करने से अन्यका कटक कितनाही प्रबल्प होतो पीछा फिर जाता था, दिशोदिश भगजाता था, या विंद्धश पाता था ॥ १६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

किच्चा, पंचामए पुढवीए उक्कोसेणं सत्तर सागरोवमट्ठिई णरएसु उववण्णे, सेणं तओ अणंतरं उवट्टित्ता इहेव कोसंबीए णयरीए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ताए भारियाए पुत्तत्ताए उववण्णे ॥१७॥ तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णिवत्त बारमाहस्सदिवसे इमं एयारूवं णामधिज्जं करेइ, जम्हाणं अह्मं इमे दारए सोमदत्तस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए तम्हाणं होउ अह्मदारए दारए वहस्सइं दत्तेणामेणं॥१८॥तएणं से वहस्सइदत्ते दारए पंचधाई परिग्गहिए जाव परिवड्ढइ॥१९॥तएणं से वहस्सइदत्त दारए उमुक्कबाल

अर्थ

तब फिर वह महेसरदत्त पुरोहित इस प्रकार के कर्म कर अतिपाप का उपार्जन किया, वो तीन हजार वर्ष का प्रतिपूर्ण आयुष्य भोगवा जिसमें ऐसा महापाप उपार्जन कर आयुष्य पूर्णकर पांचवी नरक में उत्कृष्ट सतरा सागरोपम के आयुष्यपने उत्पन्न हुवा. तहां से अन्तर रहित निकलकर इस ही कोसंबी नगरी में सोमदत्त पुरोहित की वसुदत्ता भार्या की कूक्षी में पुत्रपने उत्पन्न हुवा ॥ १७ ॥ तब फिर उस बालक के मातापिताने बारे दिन गुण निष्पन्न उस बालक का नाम स्थापन किया, जिस लिये हमारा यह बालक सोमदत्त का पुत्र वसुदत्ता का आत्मजत है इसलिये हमारे इस पुत्र का नाम बृहस्पातिदत्त होवो ॥ १८ ॥ तब वह बृहस्पतिदत्त बालक पांच धाय से परिवरा हुवा वृद्धि पाने लगा ॥ १९ ॥

सूत्र

भावे जोवण विण्णाय होत्था, उदयणस्स कुमारस्स पिय बाल वयस्स. पयावि होत्था, सहजायए सहवड्डियए सहपंसु कीलियए ॥ २० ॥ तएणं से सयाणिए राया अण्णया कयाइ काल धम्मुणा संजत्ते॥ २१ ॥तएणंसे उदयणे कुमारे बहुहिं राईसर जाव संपरिवुडे-रोयमाणे कंदमाण विलवमाणे सयाणियस्स रण्णो महयाइ इड्डीसकार समुदएणं णीहरणं करेइ २ त्ता बहुइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ ॥ २२ ॥ तएणं से बहवे राईसर जाव सत्थवाहे उदयणं कुमारं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचइ ॥ २३ ॥ तएणं से उदयणे कुमारे रायाजाए महया हिमवंते ॥ २४ ॥ तएणं से

अर्थ

तब फिर वह बृहस्पतिदत्त बालक बल्यावस्था से मुक्त हुवा यौवन अवस्थाको प्राप्त हुवा, तब उदयन कुमारका प्रियकारी बाल मित्र हुवा, साथ में जन्मे साथ में वृद्धि पाये साथ में रजु (धूल) क्रीडा की ॥ २० ॥ तब वह संतानीक राजा एकदा प्रस्तावे काल धर्म प्राप्त हुवा ॥ २१ ॥ तब फिर उदयन कुमार बहुत राजा प्रधान प्रमुख यावत् सार्थवाही आदि साथ परिवरा रूदन करता अक्रन्द करता विलाप करता संतानिक राजा के शरीर का महा ऋद्धि सत्कार समुदाय कर निहारन किया, फिर लोकीक सम्बन्धी बहुत से मृत्यु कार्य किये ॥ २२ ॥ तब फि बहुत से राजा प्रधान शेठ सेनापति सार्थवाह मिलकर उदयन कुमार का महा मंडान से राज्याभिषेक किया॥२३॥तब फिर उदयन कुमार राजा हुवा महा हिमवंत पर्वत समान॥२४॥

सूत्र

वहस्सइदत्ते दारए उदयणस्सरण्णो पुरोहिए उदयणस्स रण्णो अंतेउरे वेलासुय अवेलासुय कालेसुय अकालेसुय राउय वियालेय पविसमाणे, अण्णयाकयाइ पउमावइदेवीए सद्धिं संपलग्गेयावि होत्था, पउमावइ देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥ २५ ॥ इमंचणं उदयणे राया ण्हाए जाव विभूसिए जेणेव पउमावईदेवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वहसाइदत्तं पुरोहियं पउमावईए सद्धिं उरालाइ भोगभोगाइं भुंजमाणे पासइ २ त्ता आसुरुत्ते तिबलियं भिउडिं णिलाडे साहट्टु, वहस्सइदत्तं पुरोहियं पुरिसेहिं गिण्हावेइ २ त्ता जाव एएणं विहाणेणं वज्झ आणवइ ॥ २६ ॥

अर्थ

तब फिर बृहस्पतिदत्त बालक उदयन राजा का पुरोहित हुवा, उदयन राजा के अंतेपुर में, वक्त में वे वक्त में भोजन के काल, शयन के काल, तीसरे प्रहर प्रथम प्रहर रात्रि को सन्ध्या को प्रवेश करता हुवा, एकदा प्रस्तावे पद्मावती देवी के के साथ आसक्त हुवा लुब्ध बना, यावत् पद्मावती रानी के साथ उदार प्रधान मनुष्य सम्बन्धी भोगोपभोग भोगवता विचरने लगा ॥ २५ ॥ इस वक्त उदयन राजा स्नान करके यावत् वस्त्र भूषण से भूषित हो जहां पद्मावती देवी थी तहां आया, तहां आकर बृहस्पतिदत्त पुरोहित को पद्मावती रानी के साथ उदार प्रधान भोग भोगवता हुवा देखा, देखकर शीघ्र क्रोधातुर होकर त्रीवली निलाड पर चडाकर बृहस्पति को सुभटों के पास पकडकर हे गौतम ! तुमने देख आये इस

सूत्र

एवं खलु गोयमा ! वहस्सइदत्ते पुरोहिए पुरापोराणाणं जाव विहरइ ॥ २७ ॥ वहस्सइदत्तेणं भंते ! दारए इओकालगए कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! वहस्सइदत्तेणं दारए पुरोहिए चउसट्ठिं वासाइं परमाऊपालिता, अज्जेव तिभागावसेसेदिवसे सूलीभिणकए समाणे कालमासे कालंकिच्चा, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, संसारो तहेव पुढवीए, तओ हत्थिणाउरे णयरे मियत्ताए पच्चाइस्सइ, सेणं वत्थवाउरिएहिं वहिए समाणे तत्थेव हत्थिणाउरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए, बोहिं सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे सिज्झिहिंति. णिक्खेवो ॥ २८ ॥ पंचमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ५ ॥

अर्थ

प्रकार बन्ध करने की मारने की आज्ञा दी है ॥ २६ ॥ यों निश्चय है हे गौतम ! बृहस्पति पुरोहित पूर्वजन्म में जन्मान्तर में बहुत काल के संचित कर्मों के फल भोगवता हुवा विचरता है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! यह बृहस्पतिदत्त यहां से आयुष्य पूर्ण कर कहां जायगा कहां उत्पन्न होगा ? हे गौतम ! बृहस्पतिदत्त पुरोहित चौसट वर्ष का उत्कृष्ट आयुष्य भोगव कर आज दिन के तीसरे भाग में शूली से भिन्न शरीर किये काल के अवसर काल पूर्ण करके प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होगा, फिर मृगा पुत्र की तरह बहुत काल संसार में परिभ्रमण कर यावत् पृथ्वी से निकलकर हस्तिनापुर नगर में मृगपने उत्पन्न होगा, वह मृग वागरी के हाथ से मृत्यु पाकर उस ही हस्तिनापुर नगर में सेठ के कुल में पुत्रपने उत्पन्न होगा समकित युक्त चारित्र अंगीकारकर सौधर्म देवलोकमें देवताहोगा. वहांसे महाविदेह क्षेत्र में जन्मे ले दीक्षा ले, मुक्ती जावेगा॥२८॥ निक्षेप, दुःख विपाक सूत्रका बृहस्पतिदत्तका पांचवा अध्ययन संपूर्ण॥५॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

* षष्टम-अध्ययनम् *

सूत्र

जइणं भंते ! छट्ठा उक्खेवो-एवं खलु जंबू ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं महुरा णयरी, भंडीरे उज्जाणे, सुदरिसणे जक्खे, सिरिदामेराया, बंधुसिरी भारिया, पुत्ते णंदिसेणे णामं कुमारे, अहीण जाव जुवराया ॥ १ ॥ तस्सणं सिरिदामस्स सुबंधुणामं अमच्चे होत्था, साम दंडे भेय ॥ तस्सणं सुबंधुस्स अमच्चस्स बहुमित्ता णामं भारिया होत्था ॥ २ ॥ तस्सणं सुबंधुस्स अमच्चस्स बहुमित्तीपुत्ते णामं दारए होत्था अहीण ॥ ३ ॥ तस्सणं सिरिदामस्स रण्णो चित्तेणामं अलंकारिए होत्था, सिरिदामस्स रण्णो चित्तिं बहुविहं अलंकारिय कम्मं करेइमाणे सव्वट्ठाणेसु सव्व-

अर्थ

अहो भगवन् ! छठा अध्ययन का आधिकार कहिये—यों निश्चय हे जम्बू ! उस काल उस समय में मथुरा नामे नगरी थी, बाहिर भंडीर नाम का उद्यान था, उस में सुदर्शन यक्ष का यक्षालय था, श्रीदाम नामे राजा था, उस की बंधुश्री नाम की भार्या थी, उन का पुत्र नन्दीसेन नाम का कुमार था, वह संपूर्ण इन्द्रिय धारक यावत् युवराज्यपद पर स्थापन किया हुवा था॥१॥ श्रीदाम राजा के सुबन्धु नाम का प्रधानथा. वह साम-वचनादि कर संतोषना, दंडनादेना, और भेद-परस्परफुटपडाना इत्यादि राज्य नीतिका जानथा उस सुबन्धु आमत्य-प्रधान के बहुमित्रा नाम की स्त्री थी ॥ २ ॥ उन के बहुमित्रा नाम का पुत्र था वह सर्व इन्द्रिय कर पूर्ण था ॥ ३ ॥ श्रीदाम राजा के चित्र नाम का अलंकारी (नापिक)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

भूमियासु अंतेउरेय दिण्णवियारेयावि होत्था ॥ ४ ॥ तेणंकालेणं तेणसमएणं सामी समोसड्ढे परिसारायाय णिग्गओ जाव पडिगया ॥ ५ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणस्स जेट्ठे जाव रायमग्ग उगाढे तहेव हत्थी आसे पुरिसे, तेसिंचणं पुरिसाणं मज्झगयं एगंपुरिसं पासइ २ त्ता जाव णरणारीसंपरिवुडं, तएणं तं पुरिसं रायपुरिसा चच्चरंसि तत्तंसि अउमयंसि समजोइयंसि सिंहासणंसि णिवेसावेइ, तयाणं तरंचणं पुरिसाणं मज्झगयं बहुहिं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइ भूएहिं अप्पे गइयाणं तंबभ-

अर्थ

अलंकार (मुडन) का करनेवाला था, वह श्रीदाम राजा का आश्चर्यकारी विचित्र प्रकार बहुत धीधिकर अलंकार कर्म [नापितपना] करता था उसको सर्व प्रकारसे शैय्या भोजनादि सर्व स्थानों में सर्व भूमि का प्रसाद कोठारादि में अन्ते पुर में प्रवेश करने की राजाने-आज्ञा रजा दी थी ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंधन करने गई, धर्म कथा श्रवण कर परिषदा पीछी गई ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के जेष्ट शिष्य पूर्वोक्त प्रकार भिक्षार्थ नगरमें फिरते हाथी घोडे सुभटों के बृन्दमें एक पुरुषको देखा-वह बहुत स्त्री पुरुषों के परिवारसे परिवार हुवा है, उस पुरुष को बहुत राज्य पुरुषों चौरास्ते में तप्त किया लोहा का अग्नि समान सिंहासनपर बैठाया है, फिर उस पुरुष को लोह के कलश अग्नि समान तप्तकिये उन में से कितनेक कलश में ताम्बे का

सूत्र

रिएहिं, अप्पेतउयभरिएहिं, अप्पेसीसग भरिएहिं, अप्पेकल २ भरिएहिं, अप्पेखारतेल्ल-भरिएहिं, महया २ रायाभिसेएणं, अभिसिंचइ ॥ तयाणं तरंचणं तत्तअउमयं सम-जोइ भूयं अउमय सडासगं गहाय हारंपिणद्धइ, तयाणं तरंचणं हारं अद्धहारं जाव पट्टं मउडं, चिंता तहेव पुच्छा जाव वागरेइ ॥ ६ ॥ एवं खलु गोयमा! तेणंकालेणं तेणंसमएणं इहेव जंबूद्वीवे २ भारहेवासे सीहपुर णामं णयरे होत्था रिद्धत्थमिय ॥ तत्थणं सीहपुरे णयरे सीहरहे णामं रायाहोत्था ॥ ७ ॥ तस्सणं

अर्थ

गरम किया हुवा रसभरा है कितने कलशमें तरूआ (कथीर) का तप्त रसभरा है, कितनेकमें सीसाका तप्तरस भराहै, कितनेक कलशमें तीक्षण चूर्णादि मिश्रीत गरमपानी भरा है कितनेक कलसमें क्षार भरा है, उनकलशों को उसके शरीर परसींचन कराते उसे स्नान कराते हुवे महामंडाण-आडम्बर करके राज्याभिषेककर रहे हैं. तब फिर उस पुरुष को तप्त किये अग्नि समान लोहे के अठारासरेहार, अर्धहार नवसर यावत् मस्तक का टोप-मुकट धारन करा रहे हैं-पहना रहे हैं. इस प्रकार उस पुरुष को देख कर गौतम स्वामी को पूर्वोक्त विचार हुवा यावत् भगवंत पास आये सर्व वृत्तान्त सुनाया, और पूछा कि इस पुरुषने पूर्व जन्म में ऐसा क्या कर्म किया हैकि जिससे यहप्रत्यक्ष नरक जैसे दुःखका प्रत्याक्षानुभवकर रहा है?॥८॥तब भगवंत बोले-यों निश्चय हे गौतम! उस काल उस समय में इस ही जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में सींहपुर नाम का नगर ऋद्धि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सीहरहस्स रण्णो दुज्जोहणे णामं चारगपालए होत्था, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ॥ ८ ॥ तस्तणं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स इमेयरूवे चारगभंडे होत्था-तस्सणं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे अयकुंडीणो-अप्पेगइयाओ तंबभरियाओ, अप्पेगइयाओ, तउभरियाओ, अप्पेगइया सीसगभरियाओ, अप्पेगइया कलकल भरियाओ, अप्पेगइया खारतेल्ल भरियाओ; अगिणीकायंसि अद्दहियाओ चिट्ठंति ॥ ९ ॥ तस्सणं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे उट्टियाओ आसमुत्त भरियाओ, अप्पेगइयाहत्थीमुत्त भरियाओ,

अर्थ

समृद्धि कर युक्त था. तहां सिंहपुर नगर में सिंहरथ नाम का राजा राज्य करता था ॥ ७ ॥ उस सिंहरथ राजा के दुर्योधन नाम का चोर का रक्षपाल (जेलर) था, वह अधर्मी पापिष्ट यावत् कुकर्म कर आनन्द प्राप्त करताथा ॥८॥ उस दुर्योधन जेलर के चोरोंको सजा देने के इस प्रकार के उपकरणों का संग्रह किया था.-उस दुर्योधन जेलर के बहुतसी लोह के कुंडे थे उस में से किसी में तांबे का उकाला हुवा रस भरा था, किसी में तरू-वेका तप्तरस भराथा, किसीमें सीसेका उष्णरस भराथा, किसीमें तीक्षण चूर्ण मिश्रित गरमा गरम पानी भराथा, कितने में अति तीक्षण तेजापादि क्षार भरा था, कितनेक में में उष्ण तेल भराथा, यह सब अग्निपर उकलते२ रक्खे हुवे थे ॥ ९ ॥ उस दुर्योधन जेलर के बहुत से मट्टी के कुंडे थे. उन मे से कितनेक में अश्व-घोडे का मूत भर रक्खा था, कितनेक में हाथी का मूत भरा था, कितनेक में ऊंटका मूत भरा था, कितनेक में

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अप्पेगइया उट्टसुमुत्त भारियाओ, अप्पेगइया गोसुमुत्त भारियाओ, अप्पेगइया एलय-सुमुत्त भारियाओ, अप्पेगइया महिससुमुत्त भारियाओ बहुपडिपुण्णाओ चिट्ठइ॥१०॥ तस्सणं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे- हत्थंडुयाणय, पायंडुयाणय, हडीणयया, णियलाणय संकलाणय पुंजाय णिगराय सणिखित्ता चिट्ठंति ॥ ११ ॥ तस्सणं दुज्जो-हणस्स चारगपालस्स बहवे बेणुलयाणय, चिचा छिबाणं कसाणय वायरासीणय पुंजा-णिगराचिट्ठंति ॥ १२ ॥ तस्सणं दुज्जोहण चारगपालस्स बहवे सिलाणय, लउडाणय, मोग्गराणय, कण्णगराय पुंजाणिगरा चिट्ठइ ॥ १३ ॥तस्सणं दुज्जोहण चारगपालस्स

अर्थ

गौका मूत भरा था, कितनेक बकरे का मूत भरा था, कितनेक में भेंसों का मूत भरा था, इत्यादि कर प्रतिपूर्ण भर कर वे कूंडे घडे रक्खे थे, ॥ १० ॥ उस दुर्योधन जेलर के बहुत से हाथ के बन्धन-हथकडी, पांव के बंधन-बेडी, खोडा बेडी सयुक्त, सांकलो, बडी बेडीयों इत्यादिकों का ढगकिया हुवा रक्खाथा॥११॥ उस दुर्योधन जेलर के बहुतसी बांसकी लता (छडीयों) बेंतकी लता, काष्टकी लता, अम्बलीकी कांबा (छडी) चमडेकी लता-चाबुक, बांक-सनकी डोरीयों, ताडन करनेको मारनेको ढगकर रक्खी थी ॥१२॥ उस दुर्योधन जेलर के, बहुतसी पत्थरकी छोटी सिला, बडी लठीयों-मुद्गर तथा मोगरीयों, नागर-हलों इत्यादिका मारने के लिये संग्रह कर रक्खा था ॥ १३ ॥ उस दुर्योधन जेलर के बहुतसी तांत समान मजबूत अतीपतली (बन्ध से

सूत्र

वरताणय, वागरज्जुणय, बालसुत्तरज्जुणय, पुंजाणिगरासंचिट्ठइ ।। १४ ।। तस्सणं दुज्जोहण चरगपालस्स बहवे असिपत्ताणय करपत्ताणय, खुरपत्ताणय, कलंबचीर पत्ताणय पुंजाणिगरा संचिट्ठइ ॥१५॥ तस्सण दुज्जोयण चरगपालस्स बहवे लोहखीलणाय कडसक्कराणय, अलिपत्ताणय पुंजाणिगरा संचिट्ठइ॥ १६ ॥ तस्सणं दुज्जोयण चरगपालस्स बहवे सुच्चीणय मंडणाणय कोट्टिलाणय पुंजाणिगरा संचिट्ठइ ॥ १७ ॥ तस्सणं दुज्जोहण चारगपालस्स बहवे सत्थाणय पिप्पलाणय कुहाडाणय, णहच्छेयणाणय, दब्भाणय, पुंजाणिगरा संचिट्ठइ ॥ १८ ॥ तस्सणं से दुज्जोहण चारगपालस्स

अर्थ

चमडी कटे ऐसी) बडी २ लम्बी तथा छोटी रस्सीयों बन्धन करने ढग करके रक्खी थी ॥ १४ ॥ उस दुर्योधन, जेलर के बहुत करवत खङ्ग छूरी पाछने इत्यादि चीर फाड करने के शस्त्र के ढगकर रक्खे थे ॥ १५ ॥ उस दूर्योधन जेलर के बहुत से लोहके खीले, बांस की शलाइयों. विछूदंक के आकार वाले इत्यादिं का ढगकर रक्खाथा ॥१६॥ उस दुर्योधन जेलर के बहुत से सूई सोथे फाल (डाम देने-दागने) के शस्त्र, इत्यादि का ढगकर रक्खा था, ॥ १७ ॥ दूर्योधन जेलर के बहुत से गुप्ति उस्तरे कतरनी कैंची कुहाड नख छेदने की नेरनी फाडने के शस्त्र जिनके समूह रक्खे थे, ॥ १८ ॥ तब फिर वह दूर्योधन

सूत्र

सींहरहस्स रण्णो बहवे चोरेय, परिदारिय, गंठीभेदेयरायाव कारायअण्णधारतेय, बाल-घातेय वीसंभघातेय जूइकरेय, खंडपट्टेय पुरिसेहिं गिण्हवेइ २ त्ता उत्ताणएयाडेइ, लोहदंडेण मुहं विहाडेइ, अप्पेगएए ततं तंबं पज्जेइ, अप्पेगए तओयं पज्जेइ, अप्पेगएए सीसगं पज्जेइ, अप्पेगएए कलकलं पज्जेइ, अप्पेगएए खारतिल्लं पज्जेइ, अप्पेगएए तेणंचेव अभि-सेगं करेइ, अप्पेगए उत्ताणएपाडेइ, आसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगए हत्थिमुत्तं पज्जेइ, जाव एलमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगएए हिट्ठामुहं पाडेइ, बलस्सवम्मावेइ, अप्पेगए एणंचेव उवीलं

अर्थ

जेलर सिंहरथ राजा के बहुत से चोरों को, परस्त्री के लम्पट को, गठडी छेदने वाले को, राजा के अपराधी को, बहुत ऋण वाले को, बालक के घातक को, जुगारी को, धूर्तठगारे को, इत्यादि जुलम करने वाले को अन्य सूभटों के पास से पकडाकर, चित्ते सुलाकर लोहके संडासी से मुह फडाकर, किसी के मुह मे तप्त किया अग्नि समान ताम्बेका रस पिलाता था, कटुक चूरन घोला हुवा उष्ण पानी पीलाता था, कितनेक को क्षार पिलाता था, कितनेक के शरीर पर उक्त वस्तुओं सींचन करता-स्नान कराता हुवा, कितनेक को चित्तासूलाकर उनके मुख में—घोडे का मूत, हाथी का मूत यावत् बकरे का मूत पिलाता था, कितनेक को उलटे मूह पटक कर लता-छडीयों के सडा के मारता था, कितनेक के सिरपर बहुत सिलाओं रखकर खडा रखता था, कितनेकको हथकडी पहनाता, कितनेक को बेडी पहनाता, कितनेकका खोडेमें पांव डालता,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

दयइ, अप्पेगएए हत्थंडुयाहिं बंधावेइ, अप्पेगएए पायंडुयाणं बंधावेइ, अप्पेगएए हडिबंधणं करेइ, अप्पेगएए णियलबंधण करेइ, अप्पेगएए संकोडिय करेइ, अप्पेगएए संकलबंधणं करेइ, अप्पेगएए हत्थच्छिण्णए करेइ, जाव सत्थोवाडिए करेइ, अप्पेगएए वेणुलयाहिय जाव वायरासीहिय हणावेइ, अप्पेगएए उत्ताणए करेइ २त्ता उरेसिलं दलावेइ २त्ता लउलं वुभावेइ, पुरिसेहिं उकंपावेइ, अप्पगएए तंतीहिय जाव सुत्तरज्जुहिय हत्थेसुय पादेसुय बंधावेइ, अगडंमिउ चूलंपाणगं पज्जेइ, अप्पेगएए असिपत्तेहिय जाव कलंबचीरपत्तेहिय

अर्थ

कितनेक को बडी सांकलों से छोटी सांकलों से दृढ बन्धन बन्धता, कितनेक के अंग संकोच कर दृढबन्ध कर रखता, कितनेक के अंग मरोडकर तोडता, कितनेक के हस्त छेदन करता, कितनेक के यावत् शब्दसे प्रत्येक अंगोपांग का छेदन करता, खड्गादि कर गर्दन मारता, कितनेक को बांस की लता-(छडी) कर मारता, कितनेक को यावत् रस्सी-चाबुक कर मारता, कितनेक को चित्ता सुलाकर हृदय पर सिला रखाता, ऊपर लकडे धराता दोनों तरफ पुरुषों के पास दबाता, कितनेक को तांत से यावत् सूत की डोरी कर हाथ पांव बन्धनकर कूवे में उलटा लटकाता, ऊपर नीचे उस को सरकाता हुवा इस प्रकार पानी में डूबता, कितनेक को खड्गादिशस्त्र कर छेदता, यावत् करवत शस्त्र विशेष उस से तराछकर-छीलकर

सूत्र

पच्छावेइ खारतेल्लेणं अब्भंगावेइ, अप्पेगएए णिलाडेसुय अवट्टुसुय कोप्परेसुय जाणुसुय खलुएसुय लोहकीलएसुय कडसक्करासुय दलावेइ, अलए भंजावेइ, अप्पेगएए सूतीउय दंभणाणिय, हत्थंगुलियासुय पायंगुलियासुय कुट्टिलएहिं आउडावेइ २ त्ता भूमिकंडुयावेइ, अप्पेगएए सत्थिएहिय जाव णहच्छेदणएहिय अंगं पच्छावेइ, दब्भेहिय कुसेहिय उल्ल-दब्भेहिय वेढावेइ, आयंवंसि दलयइ, सुक्कसमाणे चडचडस्स उप्पाडेइ ॥ १९ ॥ तएणं से दुज्जोहण चरगपालए एएयकम्मे ४ सु बहुपावं समज्जिणित्ता एगतीसंवासा सयाइं

अर्थ

ऊपर तेल क्षार चोपडता, कितनेक के निलाड में घुटने में खुंनी में पगतले में लोहकेखीले ठोकता, शरीर में प्रक्षेप कराता, तीक्षण कंकर शरीर में ठोकाता, डाभकी सलाइ हरेवांसकी सलाइ आंखो में नाकमें ठोकाता, कितनेक को लोहे की सूई हस्तकी अंगुलीयों में चुबाता पावोंकी अंगुलीयों में चुबाता ऊपर मोगरी मुद्गला आदिसे कुटाता, फिर उन हाथ पांवोंकी अंगलीसे जमीन खोदाता, कितनेक का शरीर शस्त्रसे छेदन भेदन करता, नेरनीकर छुरीकर अङ्गोपांग छेदता, डाभमूल युक्त कुशमूल युक्त मस्तक को बन्धकर धूप में सूकाता चरड चरड चमडा उखाड डालता, इस प्रकार जीवों को सताताथा ॥ १९ ॥ तब फिर वह दुर्योधन कोटवाल इस प्रकार कर्म करतून करके अतिही पाप का उपार्जनकर एकतीससो (३१००) वर्ष का

सूत्र

परमाउपालइता कालमासे कालंकिच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसं बावीसं सागरोवमाइं ट्ठिईएसु णेरइएसु उववण्णे॥ २०॥सेणं तओ अणंतरं ऊव्वट्टित्ता इहेव महुराए णयरीए सिरिदामस्स रण्णो बंधुसिरीए देवीए कुच्छिसि पुत्तताए उववण्णे॥ २१ ॥ तएणं बंधुसिरी णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारगं पयाया ॥ २२ ॥ तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णिवत्त बारसाहे इमं एयारूवं णामधेज्जं करेइ, होउणं अम्हं दारगे णंदिसेणे णामेणं ॥ २३ ॥ तएणं से णंदिसेण कुमारे पंचधाई परिबुडे जाव परिवड्ढइ ॥२४॥ तएणं से णंदिसेण कुमारे उमुक्कबाल भावे जाव विहरई, जाव जुवरायाजाए

अर्थ

पूर्ण आयुष्य पालकर, काल के अवसर काल करके, छठी नरक पृथ्वी में उत्कृष्ट बावीस सागरोपम की स्थिति में नेरीयेपने उत्पन्न हुवा ॥२०॥ तहां से अन्तर रहित निकलकर इस मथुरा नगरी में श्रीदाम राजा की बन्धुश्रीदेवी रानी की कूंक्षी में पुत्र पने उत्पन्न हुवा ॥ २१ ॥ तब फिर बन्धुश्री नव महिने पूर्ण हुवे पुत्र का जन्म दिया ॥ २२ ॥ तब फिर उसबालक के माता पिताने बारवे दिन इसप्रकार नाम स्थापा-हमारे बालक होने से हम को आनन्द हुवा जिस से इस का नाम नंदीसेन कुमार होवो ॥ २३ ॥ तब फिर नंदीसेन कुमार पांच धाय से वृद्धि पाता बाल्यावस्था से मुक्त हो यौवन अवस्था प्राप्त होते युवराजपद पर स्थापन हुवा ॥ २४ ॥ तब फिर नंदीसेन कुमार राज्य सुख में यावत् अन्तेपुर में मूर्च्छित हुवा श्रीदाम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यात्रिहोत्था ॥ २५ ॥ तएणं से णंदिसेण कुमारे रज्जेय जाव अंते उरेसुय मुच्छिए४ इच्छइसिरिदामंरायं जीविया विवरोवित्ता, सयमेव रज्जसिरि कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥ २४ ॥ तएणं से णंदिसेण कुमारे सिरिदामस्स रण्णो अंतरं अलभमाणे अण्णयाकयाइ चित्तं अलंकारियं सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी-तुमणं देवाणुप्पिया ! सिरिदाम रायं सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासुय अंतउरेय दिण्णवियारे सिरिदामरायं अभिक्खणं २ अलंकारिय कम्मं करमाणे विहरइ, तण्हं तुमं देवाणुप्पिया ! सिरिदाम रायं अलंकारियं करेमाणे गीवाए खुरंणिवेसेहिं, ताणं अहं तुम्मं अद्धरज्जियं करेस्समि,

अर्थ

राजा को जीवित रहित कर-मारकर आपस्वयं राज्यलक्ष्मी का भोगोपभोग भोगवने की इच्छा करने लगा ॥ २५ ॥ तब फिर नंदीसेन कुमार श्रीदाम राजा को मारने का अवसर-मौका प्राप्त नहीं करता हुवा, अन्यदा उस चित्र नामक अलंकारी [नापिक] को बोलाया, बोलाकर एकान्त में लेकर उस से यों कहने लगा—हे देवानुप्रिय ! तुम श्रीदाम राजा के शैय्या स्थान में भोजन स्थान में प्रसाद में अंतेपुर में प्रवेश करते हो, श्रीदाम राजा का वारम्वार अलंकार (मुंडनादि) करते हो इस लिये हे देवानुप्रिय ! तुम श्रीदाम राजा का अलंकार-क्षोर कर्म (हिजामत) करते गले में क्षुरा-पासन-उस्तरा लगाकर मारडालो, तब फिर मैं तुमारे को मेरा आधा राज्य देवूंगा, तुमारा कहा करूंगा. और तुम हम दोनों प्रधान राज्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तुम्हं अम्हेहिंसर्द्धि उराले भोग भोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सइ ॥ २७ ॥ तएणं से चित्ते अलंकारिए णंदिसेणस्स कुमारस्स वयणं एयमट्ठं पडिसुणेइ २ ॥ २८ ॥ तएणं तस्स चित्तस्स अलंकारियस्स इमेयारूवे जाव समुप्पज्जिथा-जइणं ममं सिरिदामराया एयमट्ठं आगमेइ, तएणं ममं णणज्जइ केणइ असुभेणं कुमरेणंणं मारिस्सत्ति त्तिकट्टु भीए ४, जेणेव सिरिदामेराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सिरिदामरायं रहस्सिएगं करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु सामी ! णंदिसेणेकुमार रज्जेय जाव मुच्छिए४ इच्छइ तुब्भे जीवियाओ ववरोवित्ता सयमेव रज्जेसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥२९॥ तएणं से सिरिदामेराया चित्तस्स अलंकारीयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चाणिसम्म

अर्थ

सम्बंधी भोग भोगवते विचरेंगे॥२७॥ तब फिर उस चित्र नामक अलंकारी [नापिक] ने नंदीसेन कुमार का उक्त कथन प्रमान किया ॥ २८ ॥ तब फिर वह चित्र नापिक को इस प्रकार अध्यवसाय उत्पन्न हुवा—जो श्रीदाम राजा मेरी यह बात जान जावे तो नमालुम मुझ को किस कु मृत्युकर मारें, ऐसा विचार कर वह भय भ्रांत हुवा त्रास पाया, जहां श्रीदामराजा था तहां आया, आकर श्रीदामराजा को गुप्त एकान्त में हाथ जोड यावत् यों कहने लगा-यों निश्चय हे स्वामी ! नन्दीसेन कुमार राज्य में मूर्च्छित हो तुमारे को मारकर आप स्वयं राज्य करना चहाता है ॥ २९ ॥ तब फिर श्रीदाम राजा चित्र नापिक के मुखसे उक्त

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आसुरुत्ते ४ जाव साहट्टु णंदिसेणं कुमारं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥ ३० ॥ तं एवं खलु गोयमा ! णंदिसेण कुमारे जाव विहरइ, ॥ ३१ ॥ णंदिसेणं कुमारे इओ चुओ कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! णंदिसेणं कुमारे सट्ठिंवासाइं परमाउपालेता कालमासं कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, संसारो तहेव, ततो हत्थिणापुरे णयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिंति, सेणं तत्थमच्छिएहिं वधिए समाणे तत्थेवसेट्ठिकुले बोहिं सोहम्मेकप्पे महाविदेह वासे सिज्झिहिंति ॥ ३२ ॥ एवं खलु णिक्खेवो ॥ छट्ठस्स अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥

कथन श्रवन कर अवधार कर शीघ्रही कोपायमान हुवा यावत् त्रिवली भृगुटी चडाकर नंदीसेण कुमार को सूभट के पास पकडाकर हे गौतम ! तुम देख आये वैसा हाल कर रहा है. ॥ ३० ॥ हे गौतम ! नंदीसेण कुमारने पूर्व भव में इस प्रकार कर्म किये जिसके फल भोगवता हुवा विचर रहा है ॥ २१ ॥ अहो भगवान ! नन्दीसेन यहां से मर कर कहां जायगा ? हे गौतम ! नन्दीसेन कुमार साठ[६०] वर्ष का आयुष्य पूर्ण भोगकर काल के अवसर काल करके इस रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होगा यावत् मृगापुत्र के ज्यों संसार भ्रमण कर वहां से निकल हस्तनापुर में मच्छ होगा, वहां मच्छीमार के हाथ से मरकर वहां ही नगर में सेठके कुल में पुत्र हो संयमले सौधर्म देवलोक में जावेगा. वहां से महाविदेह क्षेत्र में जन्मले सिद्ध होवेगा ॥ इति दुःख विपक का नंदीसेन कुमार का छठा अध्ययन समाप्तम् ॥ ६ ॥

॥ सप्तम-अध्ययनम् ॥

सूत्र

जइणं भंते ! उक्खेवो सत्तमस्स—एवं खलु जंबू ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं पाडलिसंडे णयरे, वणसंडेउज्जाणे, उंबरदत्तेयक्खे ॥ १ ॥ तत्थणं पाडलिसंडे णयरे सिद्धत्थ राया ॥ २ ॥ तत्थणं पाडलिसंडे णयरे सागरदत्त सत्थवाहे होत्था अड्ढे, गंगदत्ता भारिया ॥ ३ ॥ तस्सणं सागवत्तस्स पुत्ते गंगदत्ता भारियाए अत्तए उंबरदत्ते णामं दारए होत्था, अहीण ॥ ४ ॥तेणंकालेणं तेणंसमएणं समोसरणं जाव परिसा पडिगया

अर्थ

यदि अहो भगवान ! सातवा अध्ययन का क्या अर्थ कहा है. ? यों निश्चय हे जंबू ! उस काल उस समय में पाडली खंड नाम का नगर था, वनखंड नाम का उध्यान था, उम्बरदत्त यक्ष का यक्षायतन था, ॥ १ ॥ उस पाडलीखंड नगर में सिद्धार्थ राजा राज करता था ॥२॥ उस पाडलीखंड नगर में सागरदत्त नाम का सार्थवाही ऋद्धिवंत था, उस की गङ्गदत्ता नामकी भार्या थी ॥ ३ ॥ उस सागरदत्त का पुत्र गङ्गदत्ता भार्या का आत्मजत उम्बदत्त नाम का कुमार था, वह सर्व अंग पूर्ण था ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी समोसरे, परिषदा वंदने आइ, धर्म कथासुनाइ, परिषदा पीछी गइ, ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में भगवंत गौतम स्वामी पूर्वोक्त प्रमाण जहां पाडलीखंड नगर था तहां

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

॥ ५ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं भगवं गोयम तहेवए जेणेव पाडलिसंडे णयरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पाडलिसंडे णयरे पुरत्थिमेण दुवारेणं अणुप्पविसत्ति, तत्थणं पासइ एगं पुरिसं कच्छूल्लं कोढियं दोउयरियं भगदलियं अरिसिल्लं कासिल्लु सासिल्लं सूयमूहं सूयहत्थं सूयपायं सडिय हत्थंगुलियं, सडिय पायंगुलियं, सडिय कण्णाणासियं, रसिया एय पूएणय थिविथिवित्तं वणमुहं किमिउण्णुयंतपगलंत पूयरुहिरं लालापगलंत कण्णणासं अभिक्खणं २ पूयकवलेय रुहिरकवलेय किमियकवलेय वममाइं कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं कूवमाणं मच्छिया चडगरपहगरेणं अणिज्जमाणमग्गं फुट्टहडाहडसीसं

अर्थ

भीक्षार्थ आये, पाडलीखंड नगर के पूर्वके द्वार से प्रवेश किया, तहां एक पुरुष को देखा वह पुरुष खुजली के रोग युक्त, कोडके रोगयुक्त, जालोंदर के रोगयुक्त, भगंदर के रोग युक्त, रस रोग युक्त, जिस के खांसी चलती थी, श्वास उठता था, पांव हाथ की अंगुलीयों पर सोजन चडा हुवा था, हाथ पांव की अंगुलियों सडगाइ थी, कान नाक भी सडगये थे, पीप (रस्सी) रक्त शरीर से झर रहा था, क्रीमी (कीडे) कल बल कर रहे थे, गूमडे हुवे थे, मुह मे से कृमी सहित पीप की लाल उगल रहा था, वारम्वार रक्त के कुल्ले कृमीके कुल्ले का वमन करता था, क्रोशित करूणा जनक वचन बोलता था, अव्यक्त शब्द से अक्रदंन करता था, मक्षीकाओं के समूह उसपर बैठे हुवे थे, बहुतसी मक्षीकाओं उस के पीछे परिभ्रमण कर रहीथे,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ

दंडं खंडवसणं खंडमल्ल खंडहत्थगयं गिहे २ देहं बलियाए वित्तिकप्पेमाणे पासइ २ ॥ ६ ॥ तएणं भगवं गोयमे उच्चणिय जाव अडइ अहापज्जत्तं गिण्हइ २ त्ता पाडलीसंडाओ णयराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ २ त्ता समणेणं अब्भणुण्णाए जाव बिलमिव पण्णगभूए अप्पाणेणं आहार माहारेइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ७ ॥ तएणं से

सूत्र

मस्तक के बाल बिखर रहे थे, दंड खंडित-फटे टूटे वस्त्र से शरीर का कुछ २ विभाग अच्छादन किया था, फूटा हंडा हाथ में ग्रहण कर द्वारा द्वार परिभ्रमण करता था, अपने पांवों के बलकर भिक्षावृत्ति से उपजीविका करता हुवा फिरता हुवा भगवंत गौतम स्वामीने देखा, ॥ ६ ॥ तब भगवंत गौतम ऊंच नीच मध्यम कूल में यावत् परिभ्रमण करके यथा पर्याप्त—चाहिये था उतना आहार पानी आदि ग्रहण किया, ग्रहण कर पाडलीखंड नगर से निकलकर जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी थे तहां आये, आकर आहार पानी बताया, श्रमण भगवंत की आज्ञा प्राप्त करके जिस प्रकार बिल में सर्प प्रवेश करता है उस प्रकार ममत्व रहित कवल को मुख में नहीं फिराते हुवे अपने पेटरूप कोठार में वह आहार पानी आदि प्रक्षेप किया, फिर संयम तपकर अपनी आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ ७ ॥ तब भगवंत गौतम स्वामी दूसरे छठ खमन—बेले के पारने को प्रथम पहरसी में स्वध्याय की, दूसरी में ध्यान किया, तीसरी में भगवंत की

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

भगवं गोयमे दोच्चंपि छट्ठखमण पारणगंसि पढमाए पोरसीए सज्झाई जाव पाडलिसंडे णयरं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविस्सइ तंचेव पुरिसं पासइ२त्ता कच्छूलं तहेव जाव संजमेणं विहरइ ॥ ८ ॥ तएणं से गोयमे ! तच्चं छट्ठं तहेव जाव पच्चत्थिमल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसमाणे तंचेव पुरिसं कच्छूल्लं पासइ २ त्ता चउत्थं छट्ठं उत्तरेणं इमे अज्झत्थिए समुप्पण्णे- अहोणं इमे पुरिसे पुरापोराणाणं जाव एवं वयासी-एवं खलु अहं भंते! छट्ठस्स जाव रियंते जेणेव पाडलिसंडे णयरे तेणेव उवागच्छइ २त्ता पाडलिपुरे पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविट्ठे, तत्थणं एगं पुरिसं पासइ कच्छूलं जाव

अर्थ

आज्ञा ग्रहण कर यावत् पाडलीखंड नगर के दक्षिण के द्वार से प्रवेश किया, तहां भी वह पुरुष देखा खुजली सहित यावत् आहार आदि ग्रहण कर पीछे आये संयम तपकर आत्मा भावते विचरने लगे ॥८॥ तब गौतम ! तीसरे छठ खमन—बेल के पारने में पाडलीखंड नगर में पश्चिम के द्वारकर से प्रवेश किया वहां उस ही पुरुष को देखा और चउथे बेल के पारने उत्तर के द्वारसे प्रवेश करते उसही पुरुष को देखा. तब गौतम स्वामी के इस प्रकार का अध्यवसाय उत्पन्न हुवा-अहो यह पुरुष पुर्व के पुराने संचित कर्म के फल का नरक के समान दुःख का प्रत्याक्षानुभव करता विचरता है यावत् भगवंत के पास आकर यों कहनेलगे-यों निश्चय अहो भगवान मैं बेले के पारने का इर्यासमिती युक्त पाडलीखंड नगर के पूर्व के द्वार से प्रवेश

सूत्र

कप्पेमाणे तं जहा अहं दोच्चं छट्ठपारणए दाहिणिल्लेदारए तहेव तच्चं छट्ठं पच्चत्थिमेणं तहेव. ते अहं चउत्थं छट्ठपारणए पाडलिउत्तर दारेअणुप्पविट्ठे तंचेव पुरिसं पासामि कच्छूल्लं जाव वित्तिकप्पेमाणे विहरइ, चिंता, पुव्वभवे पुच्छा वागरेइ ॥ ९ ॥ एवं खलु गोयमा ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं इहेव जंबुद्दीवेदीवे भारहेवासे विजयपुरे णामं णयरे होत्था, कणगरहे णामंराया होत्था॥ १०॥तस्सणं कणगरहस्स रण्णो धण्णं

अर्थ

किया, तहां एक पुरुष को देखा खुजली युक्त यावत् द्वार २ फिर उपजीविका करता विचरता हुवा जब मैं दूसरे छठ खमन के पारने को दक्षिण के द्वार से प्रवेश किया तो भी उस ही पुरुष को देखा, तीसरे बेले के पारने केदिन पश्चिम के द्वार से प्रवेश करते उसी पुरुषको देखा और चौथे बेले के पारने उत्तर के द्वार से प्रवेश करते उस ही पुरुष को देखा, खुजलीयुक्त यावत भिक्षा वृत्तिकरता विचरता हुवा, तब मुझे विचार हुवा कि यह किस पुराकृत कर्मोदया से नरक समान दुःख का प्रत्यक्षानुभव करता विचरता है अहो भगवन् ! यह पूर्वजन्म में कौन था ? ॥ ९ ॥ भगवंत ने कहा—यों निश्चय हे गौतम ! उस काल उस समय में इस ही जंबुद्वीप के भरत क्षेत्र में विजयपुर नाम का नगर था, वहां कनकरथ राजा राज्य करता था, ॥ १० ॥ उस कनकरथ राजा का धनंतरी नाम का वैद्य था, वह आठ प्रकार आयुर्वेद के

सूत्र तरीणामे वेजेहोत्था, अट्ठंगाओवेदे पाढए तंजहा-कोमारभिच्चं, सालीगे, सल्लकहते, कायतिगिच्छा, जंगोले, भूयवेज्जे, रसायणे, वाजीकरणे; सिवहत्थे सुहहत्थे लहुहत्थे ॥ ११ ॥ तएणं धण्णंतरीवेज्जे विजयपुरे णयरे कणग रहस्स रण्णो अंतेउरे अण्णेसिंच बहुणं राईसर जाव सत्थवाहणं अण्णेसिंच बहुणं

अर्थ शास्त्र का ज्ञान था—उन के नाम-१ कुमार की चिकित्सा-बालक का क्षीरपानादि मे पोषन करते जो शुन्यचित्तादि दोष उत्पन्न होते हैं उस की विशुद्धी का करना, २ शलाका-जो कान में नाक में आंख में इत्यादि प्रकार के स्थानों में रोग होवे उसे औषधमय शलाका फेरकर रोग दूरकरे, ३ शाल्यकृत-खड्ग तीरादि शस्त्र के शल्य कंकर कांचादि गुप्त रहा हो उस का उद्धार करे, ४ कायतिगच्छा-ज्वरादि रोग ग्रहस्त शरीर से उसरोग का उपशमन करे,५ जंगोल-सर्प विच्छू आदि जंगम विष तालकुटादि स्थावर विष का उपशम करे, ६ भूतविद्या-भूत गंधर्वादि देवता शरीर प्रविष्ट हो उनका उपशमन करे, ७ रसामृत-शरीर को दृढकर वृद्धावस्था का अभाव करे, तथा रोगादि की उत्पत्ति अटकाकर आरोग्य रहे, ऐसा करे और ८ वाजीकरण—शरीर में शुक्रादि धातु की वृद्धिकर घोडे के जैसा पुष्ट पराक्रमी शरीर करे इस प्रकार के शास्त्रों का जानकर वह था, उसका हाथ रोग हरन करने में आरोग्य था. सुखोत्पादक हाथ था, अमृत तुल्य जिस का हाथ था, लघु—हलका हाथ था ॥ ११ ॥ तब फिर वह धनंतरी वैद्य विजय पुर नगर में कनक रथ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

दुब्बलणाय, गिलाणाणय, वाहियाणय, रोगीयाणय, सणाहाणय, अणाहाणय, समणाणय, माहणाणय, भिक्खुणाणय, करोडियाणय, कप्पडियाणय, आउराणय, अप्पेगइयाणं मच्छमंसाइं, उवदिसइ, अप्पेगइयाणं कच्छमंसाइं, उवदिसइ अप्पेगइयाणं गाहमंसाइ उवदिसइ, अप्पेगइयाणं, मगरमंसाइं उवदिसइ, अप्पेगइयाणं सुसमारमंसाइं उवदिसइ, अप्पेगइयाणं अयमंसाइं, उवदिसइ एवं-एला-रोज्झा-सूयर-मिगससय- गोमंसाइं महिसमंसा अप्पेगइयाणं तित्तिरमंसा, अप्पेगइयाणं वटक-लवककवोत-कुक्कुड-मयुर- अण्णेसिंच बहुणं जलयर थलयर खहयरामाईणं मंसाइ

अर्थ

राजा के अन्तेपुर में और भी बहुत युवराज प्रधान सेनापति यावत् सार्थवाही के घरोंमें तथा बहुत से दुर्बल रोगीयों व्याधी यो-सनाथ अनाथसाधु ब्राह्मण अनेक भिक्षाचारों कापडी आदि रोगीयों जो की चिकित्साके अजान थे उन की चिकित्सा औषध करता हुवा, उनको पथ्य के लिये कितनेक को मच्छ का मांस खाने का उपदेशदेता, कितनेक को काछबे के मांस खाने का उपदेश देता, कितनेक को ग्राहाका मांसखाने का उपदेश देता, कितनेक को मगर का मांस खाने का उपदेशदेता, कितनेक को सुसमार का मांसखाने का उपदेशदेता, ऐसे ही कितनेकों-मेंढका-रोज्झका-सूवर का-मृगका-सूसले (खरगोश) का गायका-भैंसका-कितनेक को तीतर का-बटेर का-लवे का-परेवे का- मुर्गे का- मयुर का-इत्यादि अनेक प्रकार के जलचर का

सूत्र

उवदिसइ ॥ १२ ॥ अप्पाणं वियणं सेधण्णंतरीवेज्जे तेहिं मच्छमंसेहिय जाव मयूरमंसेहिय अण्णेहिय बहुहिं जलयर थलयर खहयर मंसाइ मच्छरसएहिय जाव मयूर रसएहिय सोल्लेहिय तिल्लिएहिय भज्जिएहिय सुरंच ५ आसायमाणे४ विहरइ ॥ १३ ॥ तएणं से धण्णंतरीवेज्जे एयकम्मे४ सुबहुपावं समज्जिणित्ता बत्तीससयाइं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमसे कालंकिच्चा छट्टीए पुढवीए उक्कोसं बावीससागरोवमाइं उववण्णे ॥ १४ ॥ तएणं इहेवपाडलिसंडे णयरे सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्ते भारिया जायणिदूयावि होत्था, जाजा जाया दारगा विणिघायमावज्जंति ॥ १५ ॥ तएणं

अर्थ

स्थलचर का खेचर का मांस खाने का उपदेश देता था ॥ १२ ॥ और आप भी मच्छ का यावत् मयुरादि का मांस के सोले-टुकडे कर तलकर भूंजकर सेक कर मदिरा आदि के साथ अस्वादता था खाता खिलाता विचरता था ॥ १३ ॥ वह धनंतरी वैद्य—उक्त प्रकार के कर्मों का आचरन कर बहुत पाप का उपार्जन कर बत्तीस हजार [३२०००] वर्ष का परम उत्कृष्ट आयुष्य का पालनकर कालके अवसर में कालपूर्णकर छट्ठीतमप्रभा नरक में उत्कृष्ट बावीस सागरोपमकी स्थितिपने नेरिया पने उत्पन्न हुआ ॥ १४ ॥ तब इसही पाडली खंड नगर मे सागरदत्त सार्थवाही की गङ्गदत्ता भार्या मृतवंज्झा थी अर्थात् उस के बच्चे जीते नहीं थे जीते गर्भाशय में उत्पन्न हो जन्मकर तुर्त मरजाते थे ॥ १५ ॥

अर्थ

तीसे गंगदत्ताए सत्थवाहिए अण्णयाकयाइ पुव्वरत्ता वरत्तकाल समयंसि कुटंबजागरियं जागरमाणे अयं अज्झत्थिए४ समुप्पणे-एवं खलु अहं सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं सद्धिं बहुहिं वासाहिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, णोचेवणं अहं दारगंवा दारियंवा पयामि, तं धण्णउंताओ अम्मयाओ संपुण्णाओ कयत्थाओ कयपुण्णाओ कयलक्खणाओ सुलद्धेणं तासिं अम्मयाणं माणुस्सए जम्मजीवियफले जासिंमण्णे णियग कुच्छि संभूयगाइं थणदुद्धलुद्धगाइं ममण पयंपियाति थणमूल कक्खदेसभागं अतिसर माणगाइं मुद्धगाइं पुणोय कोमल कमलोवमेहिं हत्थेहिं

सूत्र

तब फिर वह गंगदत्ता सार्थवाहिनी अन्यदा किसी वक्त आधी रात्रि व्यतीत हुवे कुटुम्ब जागरना जागती हुई इस प्रकार अध्यवसाय उत्पन्न हुये-यों निश्चय मुझे सागरदत्त सार्थवा ही के साथ उदारप्रधान मनुष्य संबंधी भोगभोगवते बहुत वर्ष हुवे परंतु मैने आजतका एक पुत्र या पुत्री जन्म दिया नहिं, इस लिये धन्य है उस माताको संपूर्ण पुण्यात्माको कृतार्थिको कृतपुण्यको कृतलक्षणी-सुलक्षणी को, अच्छा प्राप्त हुवा उस माता का मनुष्य जन्म जीवितका फल की जिस माता ने अपनी कूंक्षी से उत्पन्न हुअे पुत्रको स्तन दूग्ध पान कराती है मुन मुने शब्द से बोलाती है स्तन के मूल कांक्षके देशविभाग मे या गोद में बैठाती है, मुग्धास्त्री (स्नेह बावली बन) बारम्बार उसे उठाती सुलाती है, सुकुमाल कमल समान उस के हाथ अप ने

सूत्र

गिण्हिउण उच्छंगं णिवेसियाइं दिति समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मंजुलप्पभाणिए, अहण्णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्ण, एतो एकतर मविणपत्ता ॥ १६ ॥ तं सेयं-खलु ममं कल्लं जाव जलंते सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छित्ता सुबहु पुप्फवत्थगंध-मल्लालंकारं गहाय, बहुहिं मित णाइ णियग सयण संबंधि परिजण महिलाइंसद्धिं पाडलिसंडाओ णयराओ पडिणिक्खमित्ता बहिया जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइत्ता२त्ता तत्थणं उंम्बरदत्तस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फ

अर्थ

हाथ में ग्रहण कर मलती है गोद में बैठाता है, कोमल-मधुर वचन कर वारम्वार स्नेह वचन कर बोलाती है उसे धन्य है, और इस ही लिये में अधन्य हुं अपुण्य हुं चुंकि आज तक एक ही पुत्र व पुत्री को प्राप्त नहीं कर सकी ॥ १६ ॥ इस लिये अब श्रेय है मुझ को कॉल प्रातःकाल होते जाज्वलमान सूर्य प्रगट होते सागरदत्त सार्थवाह को पूछकर अच्छे बहुत फूल वस्त्र सुगंध माला ग्रहण कर, बहुत मित्रज्ञाति स्वजन सम्बन्धियों परिजनकी स्त्रीयों के साथ परिवरी हुई पाडली खंड नगरसे निकल कर बाहिर जहां उम्बरदत्त यक्षका यक्षायतन (मंदिर) है वहां जाकर तहां उम्बरदत्त यक्षकी महा मूल्य फुलोंसे आर्चनाकरुं, करके दोनों घुटने जमीन को लगाकर पांव पडूं और याचना करूं कि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

चणं करेइ २ त्ता जाणुपायवडियाए उवाएत्तए, जइणं अहं देवाणुप्पिया ! दारगंवा दारियंवा पयामि, तोणं अहं जायंच दायंच भायंच अक्खयणिहिं च अणुवड्डिस्सामि, त्तिकट्टु उववाय उवाइणित्तए, एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलू अहं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं जाव णपत्ता तंइच्छामिणं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहि अब्भाणुण्णाया जाव उवाइणित्तए ॥ १७ ॥ तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्तं भारियं एवं वयासी-ममंचेव देवाणुप्पिया ! एसचेवमणोरहे कहणं तुमं दारगंवा दारीयंवा

अर्थ

यदि हे देवानुप्रिया ! मैं पुत्र या पुत्री प्रसवूंगीतो में तुमरे यहां यज्ञकर—पूजा करूंगी, तुमारी यात्रा करूंगी, हमारी द्रव्योत्पति का विभाग कर तुमारा अखूट निध्यान (भंडार) में द्रव्य की बृद्धि करूंगी; ऐसा करने से मुझे उस से इष्ट वस्तु की प्राप्ति होगी. ऐसा विचार किया, ऐसा विचार कर, प्रातःकाल होते यावत् जाज्वल मान सूर्योदय होते जहां सागरदत्त सार्थवाही था तहां आई आकर सागरदत्त सार्थवाही से ऐसा बोली—यों निश्चय हे देवानुप्रिया ! मुझे तुमारे साथ भोग भोगवते इतने वर्ष हुवे परंतु आजतक एक भी बालक प्राप्त हुवा नहीं इसलिये अहो देवानुप्रिया ! जो तुमारी आज्ञा होतो में चहाती हुं उम्बरदत्त यक्षकी पूजाकर यावत् पूत्रकी याचना करूं॥१७॥तब उस सागरदत्ते सार्थवाहीने गंगादत्ता सार्थवाहीनीसे ऐसा बोल

सूत्र

पयाए जामि, गंगदत्तं भारियं एयमट्ठं अणुजाइ॥ १८ ॥तएणं सा गंगदत्ताभारियाए एयमट्ठं अब्भणुण्णाया समाणी सुबहु जाव मित्तणाइंसद्धिं ताओगिहाओ पडिणिक्खमइत्ता २त्ता पाडलीसंड णयरं मज्झंमज्झेणं णिगच्छइ २त्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ२त्ता पुक्खरिणीएतीर सुबहु पुप्फगंध मल्लालंकारंठुवेइ २ त्ता पुक्खरिणीउगाहेइ २ त्ता जलमज्झणंकरेइ २ त्ता जलकिडंकरेइ २ त्ता ण्हाया कयकोउयमंगल्ला उल्लपडिसाडिया पुक्खरिणी पच्चुत्तरइ २ त्ता तं पुप्फं गिण्हइ २ त्ता जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता उंबरदत्तस्स जक्खस्स

अर्थ

की हे देवानुप्रिय! मेरे मनमें भी यही विचारथा कि किस कारनसे तुमारेको पुत्र पुत्री नहीं होतेहै, यों कह गङ्गदत्ताभार्या का उक्त कथन अच्छा जाना. आज्ञादी) ॥ १८ ॥ तब वह गंगदत्ता भार्या उक्त अर्थ की अज्ञा प्राप्त होते बहुत मित्रज्ञाती आदि की स्त्री यों की साथ अपने घर से निकलकर पाडलीखंड नगर के मध्य मध्य में हो निकलकर जहां पुष्करनी(बावडी) थी तहां आई, पुष्करनीके किन्नारे पर साथ लाये हुवे बहुत पुष्प गंधमाला अलंकारका स्थापन किया, पुष्करनी में उतरकरजलमंजन जलक्रिडाकी, स्नान किया कुल्ले आदि कौतुकमंगल तिलकादिकर आली [पानीकी भींजी हुइ] साडी पहने हुवे ही पुष्करनीसे बहिर निकली, बाहिर निकलकर वे पुष्पादि ग्रहणकिये. जहां उंम्बरदत्त यक्षका यक्षायतनथा तहांआइ, उम्बरदत्त यक्षकी प्रतिमा को देखते ही

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

आलोए पणामंकरेइ २ त्ता लोमहत्थं परामुसइ २ त्ता उंवरदत्तंजक्खं लोमहत्थएणं पमज्जइ २ त्ता दगधाराए अब्भुक्खेइ २ त्ता पम्हलगाइ लट्ठीओलूहेइ, सेयाइं वत्थाइं परिहेइ, महरिह पुप्फारुहाणं वत्थारूहाणं मल्लागंधाचुण्णारूहाणं करेइ २ त्ता धूवंडहइ २ त्ता जाणुपायपडिया एवंवयासी-जइणं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं दारियं पयामि तोणं जाव उवाइणइ २ त्ता जामेवदिसिं पाउब्भूया, तामेवादिसिं पडिगया ॥ १९ ॥ तएणं से धण्णंतरीवेज्जे ताओ णरगाओ अणंतरं उवट्टित्ता इहेव जंबूद्दीवे २ भारहेवासे पाडिलीसंड णयरे गंगदत्ताए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे

अर्थ

प्रणाम [नमन] किया, प्रणाम कर मोर पीछी को हाथ में ग्रहण की, उम्बरदत्त यक्षकी प्रतिमा का प्रमार्जन की (पूंजी) पूंजकर पानी की धारकर स्नान कराया, पद्म जैसे सुकुमाल वस्त्र कर यक्ष प्रतिमा का शरीर को पूंछा, उसे श्वेत वस्त्र पहनाये, महा मूल्य फुलों की माल का रोहन किया (पहनाई) वस्त्रा रोहण किया (पहनाये) माला गंध चूर्ण चडाया धूप खेया, धूप खेकर घूटने जमीन को लगा पांव में पडी हुइ-यों कहने लगी अहो देवानुप्रिया ! यदि में पुत्र या पुत्री प्रसवूंगी तो में यावत् उक्त कहे प्रमाने करूंगी ॥ यों कह कर जिसदिशा से आइ थी उस दिशा पीछी गई ॥ १९ ॥ तब वह धनंतरी वेद उस छठी नरक से निरंतर निकलकर, इस ही जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में पाडलीखंड नगर में गंगदत्ता

सूत्र

॥ २० ॥ तएणं तीसे गंगदत्ताए भारियाए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए-धण्णाओणं ताओ अम्मयाओ जाव फले जाओणं विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ त्ता बहुहिं जाव मित्त परिवुडाओ तं विपुलं असणं ४ सुरंच ६, पुप्फ जाव गहाइ पाडलिसंडं णयरं मज्झंमज्झेणं पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पुक्खरिणी उगाहेइ २ त्ता ण्हाया जाव पायच्छित्ताओ तं विपुलं असणं ४ बहुहिं मित्त णाई जाव सद्धिं आसाएइ ४ दोहलं विणेइ ॥ एवं संपेहेइ

अर्थ

सार्थवाहिनी कूक्षी में पुत्रपने उत्पन्न हुवा ॥२०॥ तब उस गंगदत्ता भारिया को तीन महीने प्रतिपूर्ण हुवे इस प्रकार का डोहला प्राप्त हुवा धन्य है उस माता को यावत् जीवित फल सफल है कि जो विस्तीर्ण अशनादि चार प्रकार का आहार तैयार कराकर स्वजन बहुत यावत् मित्रादिकी स्त्रीयोंके साथ परिवरी हुई उस विस्तीर्ण अशनादि चारों आहार को ग्रहण कर पाडलीखंड नगर के मध्य २ से निकालकर जहां पुष्करनी बावडी है तहां जाकर पुष्करनी में प्रवेश कर स्नानकर प्रायःश्चित कर शुद्ध हो उस विस्तीर्ण अशनादि चारों आहार को बहुत मित्रादि की स्त्रीयों के साथ अस्वादती खाती खिलाती डोहला पूर्ण करती है, उसे धन्य है में भी ऐसा करूं; ऐसा विचार कर प्रातःकाल होते यावत् जाज्वल्य मान सूर्योदय होते जहां सागरदत्त सार्थवाही था तहां आइ, सागरदत्त सार्थवाही से ऐसा कहने लगी-धन्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

कल्लं जाव जलंते जेणेव सागरदत्त सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ २त्ता सागरदत्त सत्थवाहं एवं वयासी-धन्नाओणं ताउ जीव विणेति तं इच्छामिणं जाव विणेतिए ॥ ततेणं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्ता भारियाए एयमट्ठं अणुजाणाति ॥ २१ ॥ तएणं सा गंगदत्तेणं सात्थवाहीणी सागरदत्त सात्थवाहि अब्भणुण्णाय समाणी विपुलं असणं ४ उवाक्खडावेइ, तं विपुलं असणं ४ सुरंचसु बहु पुप्फ परिगण्हावेइ २त्ता बहुहिं जाव ण्हाया कयबलिकम्मा जेणेव उंबरदत्त जक्खस्स जक्खायणे जाव धूवं-डहेइ २ त्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ २ ॥ २२ ॥ तएणं ताओ मित्त

अर्थ

है उस माताको यावत् उक्त प्रकार डोहला पुर्ण करती है. इसलिये अहो देवानुप्रिया! जो आपकी आज्ञाहोतो मैं चाहाती हूं डोहला पूर्ण करना. तब उन सागरदत्त सार्थवाहीने गंगदत्ता भारिया का कथन अच्छा जाना आज्ञादी ॥२१॥ तब वह गंगदत्ता सार्थवाहीनी सागरदत्त सार्थवाही की आज्ञा प्राप्त होते विस्तीर्ण अशनादि चारों आहार तैयार करा कर उस अशनादि चारों आहार को मदिरा आदि को बहुत फुलादि को ग्रहण कर पुष्करनी पर आइ, स्नान किया, पानी के कुल्ले किया जहां उम्बरदत्त यक्ष का देवालय था तहां आइ पूर्वोक्त प्रकार पूजाकर यावत् धूप खेया फिर पीछी उस पुष्करनीपर आइ॥२२॥तब वे मित्रज्ञाती आदि स्त्रीयों और गंगदत्ता सार्थवाहीनी वस्त्रालंकार कर विभूषित हुई, फिर गंगदत्ता सार्थवाहीनी मित्र

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

जाव महिलाओ गंगदत्ता सत्थवाहिंणी सव्वालंकार विभूसियं करेइ, तं सा गंगदत्ता ताहिं मित्त अण्णेहिं बहुहिं णयर महिलाहिं सद्धिं तं विपुलं असणं ४ सुरंच ६ आसाएमाणी४ दोहलं विणेइ २त्ता जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया॥ २३॥ तएणं सा गंगदत्ताभारिया पसत्थदोहला तंगब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥ २४ ॥ तएणं सा गंगदत्ता भारिया णवण्हंमासाणं जाव दारयं पयाया, ठिया जाव णामे जम्हाणं अम्हं इमेदारए उंबरदत्तस्स जक्खस्स उवाईलद्धे तं होऊणं दारए उंबरदत्तेणामेणं ॥ २५ ॥ तएणं से उंबरदत्ते दारए पंचधाई परिग्गहिए परिवड्ढई

अर्थ

ज्ञाति आदि की बहुत ग्राम की स्त्रीयों के साथ वह विस्तीर्ण अशनादि चारों आहार मदिरा आदि के साथ अस्वादती खाती खिलाती विचर कर वह दोहला पूर्ण कर जिस दिशा से आइ थी उस दिशा पीछी गइ ॥ २३ ॥ तब वह गंगदत्ता सार्थवहीनी का पूर्ण हुवा दोहला उस गर्भ की सुख२ से प्राते पालना करती वृद्धि करती विचरने लगी॥२४॥ तब वह गंगदत्ता सार्थवहीनी नवमहीने प्रतिपूर्णहुवे यावत् पुत्रका जन्मदिया जन्मोत्सव किया यावत् नाम स्थापन किया जिस लिये हमारा यह बालक उम्बरदत्त यक्ष की आराधना से हुवा इस लिये हमारे इस पुत्रका नाम उम्बरदत्त कुमर होवे ॥२५॥ तब फिर वह उम्बरदत्त पांच धाय मात

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

दारए बावत्तरिवासाइं परमाउपालित्ता कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जिहिंति, संसारो तहेव, पुढवीए, तओ हत्थिणाउरेणयरे कुकुडत्ताए पच्चाया हिंति, जायामित्तेचेव गोट्ठिल्लवहिंति, तत्थेव हत्थिणाउरेणयरे सेट्ठीकुलंसि बोही सोहम्मे कप्पे, महा विदेहे सिज्झिहिंति, निक्खेवो ॥ ३१ ॥

सत्तमं अज्झायणं सम्मत्तं ॥ ७ ॥

अर्थ

(७२) वर्षका पूर्ण आयु भोगव कर कालके अवसर आयुष्य पूर्णकर इस रत्नप्रभा नरक में उत्पन्न होगा यावत् मृगापुत्र की तरह संसार परिभ्रमण करेगा, पृथ्वीकाय से निकल कर हस्तनापुर नगर में मूर्गा होगा जन्मतेही गोठील पुरुष उसकी घात करेंगे, तब वहां ही शेठके कुलमें पुत्रपने उत्पन्न होगा, धर्म पावेंगा संयम लेकर सौधर्मा देवलोक में देवता होगा ॥ वहां से महाविदेह क्षेत्रमें जन्मले संयम धारनकर कर्म क्षयकर मोक्ष जावेगा ॥ ३१ ॥ इति दुःख विपाक सूत्रका उम्बरदत्त कुमार का सातवा अध्ययन समाप्तम् ॥ ७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

॥ २६ ॥ तत्तेणं से सागरदत्ते सत्थवाहे जहा विजयमित्ते जाव कालंमासे कालंकिच्चा, गंगादत्तावि, उंबरदत्त निछूडे, उहाउज्झियते ॥ २७ ॥ तएणं तस्स उंबरदत्तस्स दारगस्स अण्णयाकयाइ सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलसरोगायंका पाउब्भूया तंजहा-सासे खासे जावकोढे ॥ २८ ॥ तएणं से उंबरदत्ते दारए सोलस रोगायंकाहिं अभिभूए समाणे सडियहत्थं जाव विहरइ ॥ २९ ॥ एवं खलु गोयमा ! उंबरदत्ते दारए पोरापुराणाणं जाव विहरइ ॥ ३० ॥ तएणं उंबरदत्त दारए कालमासे कालंकिच्चा कहिं गच्छहिंति कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! उंबरदत्ते

अर्थ

से वृद्धि पाया ॥२६॥ तब फिर वे सागरदत्त सार्थवाह विजय मित्र सार्थवाही की तरह समुद्र में मृत्यु पाया उसके फिकरसे गंगदत्ता भी मरगई, कोत वालने कर्ज वाले को घरस्म्पति देकर उम्बरदत्त कुमारको घर से निकाल दिया, ॥२७॥ तब उस उम्बरदत्त के किसी वक्त शरीर में श्वास खांस यावत् कोड, इन सोलेराग की उत्पती हुइ ॥ २८ ॥ तब उस उम्बरदत्त का शरीर सोले राग से बिगडा यावत् सडगये हाथ पांव आदि शरीर यावत् हे गौतम! तुमने देखा वैसा विचरता है ॥२९॥ यों निश्चय हे गौतम! उम्बरदत्तने पहिले कर्मोपार्जन किये हैं यावत् जिसके फल भोगवता विचर रहा है ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! उम्बरदत्त यहां से आयुष्य पूर्ण कर कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? यों निश्चय हे गौतम ! उम्बरदत्त बालक बहत्त-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

* अष्टम-अध्ययनम् *

सूत्र

जइणं भंते ! अट्ठामस्स उक्खेवो-एवं खलुजंबू ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं सोरियपुरे णयरं, सोरियवडिंसगं उज्जाणं, सोरियजक्खो, सोरियदत्तोराया ॥ १ ॥ तस्सणं सोरियपुरस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरात्थमदिसीभाए एत्थणं एगेमच्छंधपाडए होत्था, तत्थणं समुद्दत्तेणामं मच्छंधे परिवसइ, अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ॥ २ ॥ तस्सणं समुद्दत्तस्स समुद्दत्ताणामं भारियाहोत्था अहीणा ॥ ३ ॥ तस्सण समुद्दत्तस्स मच्छंधस्स पुत्ते समुद्दत्ताए भारियाए अत्तए सोरियदत्तेणामे

अर्थ

यदि अहो भगवन् ! आठवे अध्याय का क्या अर्थ कहा है ? यों निश्चय हे जंबू उस काल उस समए में सोरीपुर नाम का नगर था, सोरीवडंसग उध्यान था, तहां सोरिय यक्षका यक्षायतन था, सोरीपुर का सोरीदत्त नामे राजा था ॥ १ ॥ उस सोरीपुर नगर के बाहिर उत्तर पूर्व दिशा के बीच ईशान कौन में यहां मच्छीपाडा [मच्छीमार लोगों के रहने का महल्ला] था, तहां समुद्रदत्त नामका मच्छी (मच्छीयों बेचने वाला)रहता था, वह अधर्मी यावत् दुष्कर्य करके आनन्द माननेवाला था ॥२॥ उस समुद्रदत्त मच्छी के समुद्रदत्ता नाम की भार्या थी वह सर्वांग पूर्ण थी ॥३॥ उस समुद्र मच्छी का पुत्र समुद्रदत्ता का आत्मज सोरीदत्त नाम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

दारएहोत्था, अहीणं ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामीसमोसडे जाव परिसा पडिगया ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी जाव सौरियपुरेणयरे उच्चणीय अहापजत्तं समुदाणंगहाय सोरियपुराओ णयराओ पडिणिक्खमइ, २त्ता तस्स मच्छंध पाडगस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे महइमहालियाए मणुस्स पुरिसाणं मज्झगयं पासइ, एगंपुरिसं सुक्कं भुक्खं णिम्मंसं अट्ठिचम्मावणद्धं किडिकिडियाभूयं णीलसामागणियत्थं मच्छकंटएणं गलएअणुलग्गेणं कट्ठाई कलुणाइं वीसाराइं कुड

अर्थ

का पुत्र था वह भी पूर्ण अङ्गवाला था ॥ ४ ॥ उस काल उस समए में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा आई, धर्मकथा सुनाई, परिषदा पीछी गई ॥ ५ ॥ उस काल उस समय में भगवंत के बडे शिष्य यावत् सोरीयपूर नगर में ऊंचनीच मध्यमकुल में बहुत घरोंकी भिक्षा ग्रहण करते सोरीपुर नगर से पीछे निकलते उस मच्छीपाडे पास से जाते हुवे महाजबर बहुत मनुष्यों की परिषदा के मध्य में एक पुरुष का शरीर काष्टभूत सूकगया है, राखभूत लूक्खा होगया है, मांस रहित हड्डी का पंजर चमडे कर वेष्टित किया हुवा शरीर है किडकिडीभूत-उठते बैठते चलते हड्डीयों का कडर अवाज होता है, पानी से भींजा हुवा वस्त्र पहने है, उस के कंठ (गले) में मच्छी का कांटालगाहुवा है जिससे वह अत्यंत क्लेशकारी यावत् दीनदयामने बचनबोल रहा है, विकराल शब्द से रूदन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कूवमाणे अभिक्खणं २-पूयकवलेय, रुहिरकवलेय, किमिकवलेहिय, वममाणंपासइ २ त्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए४ पुराणोणाणं जाव विहरइ, एवं संपेहेइ २त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पुव्वभवपुच्छा ॥ ६ ॥ जाव वागरणं-एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे २ भारहेवासे णंदिपुरेणामं णयरेहोत्था, मित्तेराया ॥ ७ ॥ तस्सणं मित्तस्स सिरीनामं महाणसिहोत्था अहम्मीए जाव दुप्पडियाणंदे ॥ ८ ॥ तस्सणं सिरियस्स महाणसियस्स वहवे मच्छियाय, वागुरियाय साउरियाय, दिण्णभत्ति, कल्लाकार्ल्लि वहवेसण्ह मच्छाय जाव पडागाइ पडागेये

कर रहा है अक्रन्दन कर रहा है,पीप(रस्सी) के कुल्ले लोहीके कुल्ले कृमी जन्तु के कुल्ले सहित वमन करता हुवा देखकर अध्यवसाय उत्पन्न हुवा, यावत् भगवंत के पास आकर पूर्व भवकी पूछा की ॥ ६ ॥ भगवंतने कहा यों निश्चय हे गौतम ! उस काल उस समय में इस ही जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में नंदीपुर नाम का नगर था, तहां मित्र नाम का राजा था. ॥ ७ ॥ उस मित्र राजा के श्रीया नाम का रसोइया था. वह अधर्मी याव कूकर्म करके आनंदपाने वाला था ॥ ८ ॥ श्रीया रसोइया ने बहुत से मछी—मच्छी मारने वाले, वागुरी—पक्षी तीतरादि के घातक, खाटकी—चौपद के घातक इत्यादि को सदैव आहार पानी नतखा मजदूरी देता था, वे मच्छी आदि मच्छीयों काछवे आदि जलचर जीवों,बकरे भेंसे आदिक चौपद, जीवों

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

अण्णे य जाव महिसातेय, तितरेय जाव मयूरेव, जीवियाओ ववरोवेति सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेइ, अण्णेयसे वहवे तित्तराय जाव मयुराय पंजरं सिसाणिरुद्धा चिट्ठति अण्णेय वहवेपुरिसा दिण्णभित्तिए वहवे तित्तरेय जाव मयूरेय जीवियए चेव णिप्पंखेइ २ त्ता सिरियस्स महाणसियस्स उववण्णेइ ॥ ९ ॥ तएणं से सिरिए महाणसिए बहुणं जलयर थलयर खइयर मंसाइं कप्पाणी कप्पियाइं करेइ २ तंजहा सण्हखंडि याणिय वट्ट दीह रहस्स हिमपक्काणिय, जम्म-घम्म-मारुय-पक्काणिय, कालाणिय, हरंगाणिय, महिट्ठाणिय, आमलरासिया णिया, मुद्दिया कविट्ठा दालिमर-

अर्थ

तीतर यावत् मयूरादि खेचर-पक्षीयों इत्यादि को जीवित रहित-कर मारकर श्रीया रसोइये को लाकर देते थे और कितनेक नोकरों पशू पक्षीयों को बाडे में पिंजरे में बंदकर रखते थे, और कितनेक नोकरों पशू पक्षी यों आदि की पांखो उखेडकर आधे मरे बनाकर श्रीयाको लाकर देते थे ॥ ९ ॥ तब फिर वह श्रीया रसोइया बहुत जलचर थलचर खेचर इत्यादि का मांस कैंची से काट कर तद्यथा-सूक्ष्म बारीक टूकडे करकर, गोल टूकडे कर, छोटे खंडकर, शीतकर पचावे, पानी कर पचावे, वायुकर पकावे, तक्र (छाछ) कर भरे हुवे तथा तक्र कर संस्कार किये हुवे, खट्टे अमली के रस भरे, खट्टेरस कर संस्कारे, इक्षु के रस से भरे, द्राक्ष के रसकर संस्कारे, कवीठ के रसकर संस्कारे, दाडिम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सिया मच्छरसतलियाणिय। भज्जिया सोल्लिया। उवक्खडावेइ २ त्ता अण्णेय बहवे मच्छरसएय एणिज्जरसएय तित्तररसएय जाव मयूरसएय, अण्णंच विउलं हरियसागं उवक्खडावेइ २ त्ता मित्तस्सरण्णो भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए उवणेइ ॥ १० ॥ अप्पाणा वियण्णं से सिरिए माहणसिए तेसिंच बहुहिं जाव जलयर थलयर खहयर मंसेहिं रसएहिय हरियसागेहिय सोल्लिहि यतल्लिय भज्जिय सुरंचवह आसायमाणे ४ विहरइ ॥ ११ ॥ तएणं से सिरिएमाणसिए एयकम्मे ५ सुबहु

अर्थ

(अनार)के रसकर संस्कारे, मच्छी के रसकर संस्कारे, तेलादिकर संस्कारे, तेलादि में तले, अग्नीकर भूंजे इस प्रकार मांस को तैयार कर, और भी बहुत से मच्छीयों का रस मच्छीयों का मांस का रस, मृगादि पशु के मांस का रस, तीतरादि पक्षीयों के मांस का रस यावत् मयूरादि को का रस, और भी बहुत हरित काय शाक भाजी तैयार करके मित्र राजा के भोजन मंडप में भोजन स्थानक में भोग (जिमन) के वक्त आगे को रखताथा॥१०॥ और आपस्वयं भी वह श्रीय रसोइया उक्त प्रकारका जलचर थलचर खेचर के मांसका सूलाकर उक्त रसों के साथ हरित शाक भाजी के साथ सेक कर भूंज कर तल कर मदिरादि के साथ अस्वादता हुवा विचारता था ॥११॥ तब फिर वह श्रीया रसोइया इस प्रकार करतूतकर कूआचरनकर तेंतीस सो [३३००]

सूत्र

जाव समज्जिणित्ता, तेत्तिसं वाससयाइं परमाउपालिता कालमासे कालंकिच्चा छट्ठीए पुढवीए उववण्णो ॥ १२ ॥ तएणं सा समुद्दत्ता भारिया णिंद्याबि होत्था जाया २ दारगा विणिघायमावज्जंति; जहा गंगदत्ताए चिंता अपुच्छणा, उवाइय, दोहला, जाव दारगं पयाया, जाव जम्हाणं अम्हं इमे दारए सोरियस्स उवातियाणद्धए तम्हाणं होउ अम्हे दारए सोरियदत्तेणामेणं ॥ १३ ॥ तएणं से सोरियदत्तेय दारए पंचधाइ जाव उमुक्कबालभावे विणाय परिणयमित्ते जोवणे होत्था ॥ १४ ॥ तएणं से

अर्थ

वर्ष का परमायुष्य पालकर काल के अमसर काल पूर्ण कर छठी नरक में उत्पन्न हुवा ॥ १२ ॥ तब वह समुद्र दत्ता भार्या मृतवज्झा थी उस के जन्मे बालक जीते रहते नहीं थे, उसे जिस प्रकार पूर्वोक्त गंगदत्ता भार्या को चिंता उपत्न हुई तैसे इस के भी चिंता उत्पन्न हुइ समुद्रदत्त को पूछ सोरीयक्ष की पूजा की मानताली ॥ फिर छठी नरक से निकलकर श्रीया रसोइया समुद्रदत्ता की कूक्षी में पुत्रपने उत्पन्न हुआ. तीसरे महीने डोहला उत्पन्न हुवा, सोरीदत्त की पूजा की नवमहीने व्यातीत हुवे, बालक जन्मा, तैसेही सोरियदत्त नाम स्थापन किया ॥१३॥ तब फिर वह सोरीदत्त बालक पांच धाय करबडा हुवा, बाल भाव से मुक्त हुवा, यौवन अवस्था प्राप्त हुवा ॥ १४ ॥ फिर समुद्रदत्त मच्छान्ध अन्यदा काल

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

समुद्दत्तस्स अण्णयाकयाइ कालधम्मुणासंजुत्ते॥ १५॥ तएणंसे सोरियदत्ते दारए बहुहिं मित्ता रोयमाणे २ समुदत्तास्स णीहरणं करेइ २ त्ता अण्णयाकायाइ सयमेव मच्छंध महत्तारंगत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ १६ ॥ तएणं से सोरियदत्ते दारए मच्छंधे जाए अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ॥ १७ ॥ तएणं तस्स सोरिय मच्छंधस्स बहवे पुरिसा दिन्न भत्ति कल्लाकल्लिं एगट्ठियाहिं जउणं महाणदिं ओगाहिंति बहुहिं दहगलणेहिय दहमलणेहिय, दहमहणेहिय, दहमहणेहिय, दहवहणेहिय, दहपवणेहिय पपच्चुलेहिय,

अर्थ

धर्म प्राप्त हुवा मृत्युपाया ॥१५॥ तब फिर वह सौर्यदत्त बहुत से मित्रादि साथ रुदन करता हुवा समुद्रदत्तका निहारन मृत्युकार्य-क्रिया, बहुत से लोकीक सम्बन्धी कार्य किये; फिर आप स्वयं मच्छी का आधिपति पना अङ्गीकार कर विचरने लगा ॥१६॥ तब फिर वह सौर्यदत्त मच्छीयों का मालक हुवा अधर्मी पापिष्ट यावत् कुकर्म कर आनंद पाने लगा ॥ १७ ॥ तब फिर सौर्यदत्त मच्छी के बहुत से पुरुष नोकर थे, वह उन को सदैव भोजन पानी नोकरी देता था, वे सदैव काष्ट की नावारुढ होकर महा नदी में प्रवेश करके द्रह-तला वादि में प्रवेश करके बहुतसी मच्छी आदि ग्रहण करने परिभ्रमण करते, पानी में से मच्छी आदि जल चर जीव को निकालते, कर्दम में मशलते, द्रह आदि को उलीच कर पानी कमी करते, पानीका मथन करते तरुशाखादिकर पानीको डोहला करते, पाल फोडकर पानी निकालते, साफ पानीनिकाल कर तडफडते मच्छादि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

पंचपुलेहिय, जंभाहिय, तिसराहिय भिसराहिय विसराहिय, हिल्लीरीहिय, जालेहिय, लल्लिरीहिय झल्लरीहिय गलेहिय कूडपासेहिय, वक्कबंधेहिय, सुत्तबंधेहिय, बालबंधेहिय, बहये सण्हामच्छेय जाव पडागाइ पडागेय गिण्हंति २ त्ता एगट्ठियाओ भरेइ २ त्ता कूलंगाहिंति २ त्ता मच्छखलएकरेइ २ त्ता आयवंसिदलयंति ॥ अण्णेयते बहवे पुरिसादिण्णभत्तिवेयणा आयवंतत्ताएहिं सत्थेहिंसोल्लेहिंय भज्जिएहिय रायमग्गांसि वित्तिंकप्पेमाणे विहरइ ॥ १८ ॥ अप्पातिणाविंयणं सेसोरिए बहुहिं सेसण्हामच्छेहिं

अर्थ

को ग्रहण करते, इत्यादि प्रकार से मच्छीयों को ग्रहण करके मच्छ बन्धन का, त्रिराजाल, भीसराजाल, हिल्लरीजाल, जलरी जाल, ललरी जाल, भलरी जाल, इत्यादि जालों के नाम जानना, मच्छ कंठ छेदन का कांटा, कूट पास बंधन, बक्कल बंधन, सूत्तबंधन, बालों के बन्धन, छाल के बन्धन, बहुत प्रकार के सन्न, शस्त्र इत्यादिं कर मच्छीयों के पडागे २ समूह के समुह ग्रहण करके नावा भर २ कर नदी के तटपर आते, मच्छीयों के ढग करते, ताप—धूप में सूकाते थे, वे बहुत से पुरुषों को देते थे. और भी बहुत से पुरुषों को आहार पानी मजूरी देता था वे उन सूके हुवे मच्छीयों के सूले करके अग्नि पर सेक भूंज तल यावत् राजमार्ग में बेचकर अपनी आजीविका करते हुवे विचरते थे ॥ १८ ॥ और वह सौरियदत्त मच्छी आप भी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

जाव पडाग सोल्लोहिए तलेहिए भज्जिएहिए सुरंचइ आसायमाणे ४ विहरइ ॥ १९ ॥ तएणं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधयस्स अण्णया कयाइ मच्छसोल्लिय तलिए भज्जिए आहारेमाणस्स मच्छकंटएगलए लग्गेयाविहोत्था, महयाए वेयणाए अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सोरियपुरे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणे १ एवं वदह- एवं खलु देवाणुप्पिया ! सोरियदत्तस्स मच्छकंटए गलएलग्गे जं जोणं इच्छइ विज्जोवा सोरिया मच्छियस्स मच्छकंटगं गलाओ णिहरित्तए तस्सणं सोरिय विपुलं अत्थसंपयाणं

अर्थ

उन बहुत मच्छ यावत् पताके के सोलेकर तलकर भूंजकर मदिरादिके साथ खाता हुवा रहता था ॥ १९ ॥ एक दा मच्छ के सूले करके तलकर भूंजकर आहार करते—खाते हुवे मच्छी का कांटा गले में लगा-चुब गया तब फिर वह सोरियदत्त मच्छी को अत्यन्त प्रबल वेदना उत्पन्न हुई, तब कोटुम्बिक पुरुष को बोलाकर कहने लगा जाओ तुम हे देवाणुप्रिय सोरी पुरके त्रीवट चौवट महा पंथमे उद्घोषना करो यों कहो कि-अहो देवाणुप्रिय सोरियदत्त मच्छी केगले में मच्छका काँटा लगा है, जो कोइवैद्य वैद्यके पुत्र सौरियदत्त मच्छीके गलेमें से काढ निकालेगा उसे सोरियदत्त मच्छी बहुत धन सम्पदादेगा तब फिर कोटुम्बिक पुरुषने तैसाही किया

दलयइ ॥ तओणं कोडुंबियपुरिसे जाव उग्घोसइ॥ २० ॥ तओ बहवे विज्जाय इमं एयारूवं उग्घोसेज्जं तंणिसामेइ २ त्ता जेणेव सोरिदत्तागिहे; जेणेव सोरियमच्छंध तेणेव उवागच्छइ २त्ता बहुहिं उप्पत्तियाहिय ४ इच्छंति सोरियमच्छंधस्स मच्छकंटगं गलाओ णीहरित्तएवा विसोहित्तएवा णोचेवणं संचाएत्ति णीहरित्तएवा विसोहिएत्तएवा ताहेसंता तंतापरितंता जामेवदिसिं पाउब्भूया तंमेवादिसिं पडिगया॥ २१ ॥ तएणंसे सोरिय मच्छंधे विज्जंपडियारणिविण्णे, तेणं दुक्खेणं महया अभिभूए सुक्के जाव विहरइ ॥ २२ ॥ एवं खलु गोयमा ! सोरिय पुरापोराणाणं जाव विहरइ॥ २३ ॥ सोरिएणं

अर्थ

॥ २० ॥ तब फिर बहुत वैद्य आदि उक्त उदघोषना श्रवन कर जहां सोरियदत्त मच्छी का घर था जहां सोरियदत्त मच्छी था तहां आये, आकर बहुतसी उत्पाती की विनीया कर्मीया परिणामीया चारों प्रकार की बुद्धीकर चहाने लगे सोरियदत्त के गले से मच्छका कांटा निकालना, परंतु अनेक उपाव करके भी कांटा निकाल ने समथन हुवे गला विशुद्ध करसके नहीं तब बहुत से वैद्यादि थकगये हारगये घबराकर जिस दिशा से आये थे उस दिशा पीछे गये ॥ २१ ॥ तब सौर्यदत्त मच्छी उन वैद्य के गये बाद उस दुःखकर अतीही पीडित हुवा सूका भूका मांस रहित हडी का पिंजर चर्म वेष्टित शरीर रहगया है ॥ २२ ॥ यों निश्चय हे गौतम ! सौरिय मच्छी पूर्व जन्ममें बहुत काल के उपार्जन किये पापकर्म के फल

सूत्र

भंते ! मच्छंधे इओ कालमासे कालंकिच्चा कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! सत्तरिवासाइं परमाउ पालेइत्ता, कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, संसारो तहेव जाव पुढवी, ततोहत्थिणाउरे णयरे मच्छत्ताए उववण्णे सेणं तओमच्छीएहिं जीवियाओ विवरोवेइ, तत्थेव सेट्ठि कुलंसि बोही, सोहम्मे, महाविदेहे सिज्झिहिंति ॥ णिक्खेवो ॥ अट्ठमं अज्झायणं सम्मत्तं ॥ ८ ॥

अर्थ

भोगवता विचरता है ॥ २१ ॥ अहो भगवान ! सौरिबदत्त मच्छी काल के अवसर काल पूर्ण कर कहां जायगा कहां उत्पन्न होगा ? हे गौतम! सित्तर [७०] वर्ष का पूर्ण आयुष्य भोगवकर मृत्यु पाकर रत्नप्रभा नरक में उत्पन्न होगा, यावत् मृगापुत्र की परे संसार परिभ्रमणकर पृथ्वी कायसे निकल हथनापुर नगर में मच्छ होगा, वहां मच्छीमार मारने से मृत्यु पाकर तहां ही हस्तनापुर नगर मे शेठ का पुत्र हो दीक्षा ले सौधर्म देवलोक में देवता होगा, वहां से महा विदेह क्षेत्र में जन्म ले दीक्षाले मोक्ष जावेगा ॥ इति विपाक सूत्र का सोरियदत्त मच्छी का आठवा अध्ययन समाप्तम् ॥ ८ ॥

* नवम-अध्ययनम् *

सूत्र

जइणं भंते ! उक्खेवो णवमस्स-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रोही-डएणामं णयरे होत्था रिद्धत्थमिय, पुढवीवडिंसए उज्जाणे, धरणे जक्खे, वेसमणदत्तेराया, सिरिदेवी, पूसणंदीकुमारे, जुवराया ॥ १ ॥ रोहीडएणयरे दत्तणामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे कण्हसिरीभारिया ॥ २ ॥ तस्सणं दत्तस्सधूया कण्हसिरिए अत्तया देवदत्ताणामं दारियाहोत्था अहीण जाव उक्किट्ठसरीरा ॥ ३ ॥ तेणं कालेणं तेणं

अर्थ

यदि अहो भगवान ! नववे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? यों निश्चय हे जम्बू ! उस काल उस समय में रोहीड नाम का नगर ऋद्धिसमृद्धि कर संयुक्त था. ईशान कौन में पृथ्वी वडिंसए नामका उद्यान था, रोहीड नगर में वेश्रमणदत्त नाम का राजा राज्य करता था, जिस की श्रीदेवी नाम की रानी थी, वेश्रमण राजाका पुत्र श्रीदेवीका आत्मज पूषानंदी नामका कुमार था, उसको जुगराजपद पर स्थापन किया था ॥ १ ॥ उस रोहीड नगर में दत्त नाम का गाथापति रहता था वह ऋद्धिवंत था, जिस के कृष्ण श्री नाम की भार्या थी ॥ २ ॥ दत्त गाथापति के पुत्री, कृष्ण श्री की आत्मज देवदत्ता नाम की पुत्री थी, वह सर्व इन्द्रियकर पूर्ण थी यावत् उत्कृष्ट प्रधान शरीर के रूपकी धारन करने वाली थी ॥ ३ ॥ उस काल

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ

समएणं सामीसमोसड्ढे, जाव परिसा पडिगया ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी छट्ठखमण तहेव जाव रायमग्गं उगाढे हत्थी आसे पुरिसे पासइ, तेसिं पुरिसाणं मज्झगयं पासइ-एगं इत्थियं अवउडगबंधणं उक्खत कण्णणासं जाव सूलभिज्जमाणं पासइ, इमे अज्झत्थिए ४ तहेव णिग्गए जाव एवं वयासी- एसिणं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे काआसी ? ॥ ५ ॥ एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवदीवे भारहेवासे सुपतिट्ठेण्णामं णयरेहोत्था, रिद्धत्थमिय महासेणराया ॥६॥ तस्सणं महासेणस्स रण्णो धारणीपामोक्खं देवीसहस्सं

सूत्र

उस समयमें श्रमन भगवंत महावीरस्वामी पधारे परिषद् वंदने आई, धर्मकथासुन परिषदा पीछीगई॥४॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत के जेष्ट शिष्य बेले के पारने पूर्वोक्त प्रकार गौचरी गये, राज्यपंथ में हस्ति घोडे प्रमुख बहुत देखे उन पुरुषों के मध्य में एक स्त्री उलटी मुस्को से बन्धी हुइ जिस के नाक कान स्तन छेदित किये हुवे शुली देने को लेजाते देखी. पीछे फिर भगवंत के पास आये, यावत् यों बोले अहो भगवान ! यह स्त्री पूर्व जन्म में कौन थी ? ॥ ५ ॥ भगवंत बोले यों निश्चय हे गौतम ! उस काल उस समय में इस ही जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सुप्रतिष्ट नाम का नगर ऋद्धिसमृद्धि युक्त था, वहां महासेन नामका राजा राज्य करता था ॥६॥ उस महासेन राजा के धारिनी प्रमुख एक हजार रानीयोंका अन्तेपुर था।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

उरोहियावि होत्था ॥ ७ ॥ तस्सणं महासेणस्सपुत्ते धारणीदेवीए अत्तए सीहसेण णामं कुमारे होत्था, अहीण जुवराया ॥ ८ ॥ तएणं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अण्णयाकयाइ पंचपासयवडिंसयाइं करेइ, अब्भूगए ॥ ९ ॥ तएणं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अन्नयाकयाइं सामापामोक्खाणं पंचण्हंरायवर कण्हगसयाणं एगंदिवसेणं पाणीगिण्हावेइ पंचसइ उदाती ॥ १० ॥ तएणं से सीहसेणस्स कुमारस्स सामापामोक्खेहिं पंचदेवीसएहिं सद्धिं उप्पिं जाव विहरइ ॥ ११ ॥ तएणं से महासेणराया अण्णयाकयाइ कालधम्मुणा संजुत्ता, णीहारणं, रायाजाए

अर्थ

॥७॥ उस महासेनराजा का पुत्र धारनी देवीका आत्मज सींहसेन नामका कुमार था, वह सर्व अंगोपांगकर पूर्ण युवराज्यपद पर स्थापन किया था, ॥ ८ ॥ तब फिर सिंहसेन कुमार के मातापिताने एक दा पांचसो प्रसाद शिखाग्रबंध कराये, वे बहुत ऊंचे यावत् शोभायमान थे, ॥९॥ तब फिर सिंहसेन कुमार को एक ही वक्त सामादेवी प्रमुख पांचसो (५००) राजा प्रधान की कुमारी का के साथ पानी ग्रहण कराया, पांच से हिरन्य क्रोड, पांचसो ग्राम आदि १९२ बोल का पांचसो २ दायचा दिया ॥१०॥ तब फिर सिंहसेनकुमार पांचसो रानीयों के साथ प्रसादो के उपर पांचों इन्द्रिय के भोगभोगवता हुवा विचरने लगा ॥ ११ ॥ तब एकदा वह महासेणराजा कालधर्म प्राप्तहुआ-मृत्युपाया. उसका

सूत्र

महया ॥ १२ ॥ तएणं से सीहसेणराया सामादेवीए मुच्छिए ४ अवसेसाओ देवीओ णोआढाहिं णोपरिजाणाहिं अणाढाइमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ ॥ १३ ॥ तएणं तासिं एगुणगाणं पंडण्हं देवीसयाइं एगुणाइ पंचमाओधाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं समाणियाए- एवं खलु सीहसेणराया सामादेवीए मुच्छिए ३ अम्हं धूयाओ णोआढाइणोपरिजाणइ, तंसेयं खलु अम्हं सामादेवीं अग्गिपओगेणवा, विसप्पओगेणवा,सत्थप्पओगेणवा,जीवियाओ ववरोवित्तए ॥ एवं संपेहेइ २त्ता सामादेवीए

अर्थ

निहारन बहुत आडम्बर से किया, फिर सिंहसेनराजा हुआ महाहिमवंत पर्वत जैसा ॥१२॥ तब वह सिंहसेनराजा अन्यदा सामादेवी से मूर्च्छित बना हुवा, दूसरी रानीयों का अनादर करता, उन का अनुमोदन भी नहीं करता उन का वचन मात्रसे भी सन्तोष नहीं उपजाता रहने लगा ॥१३॥ तब एक कम पांचसों (४९९) रानीयों और एक कम पांचसे (४९९) उन राणीयों की धाय माताओंने इस प्रकार जानाकि सिंहसेन राजा एक शामारानीही में लुब्धहुआ हमारी पुत्रीयों का अनादर करता है, वचन मात्र से भी सन्तोषता नहीं है अच्छी भी नहीं जानता है. इसलिये अपन को श्रेय है कि शामादेवी को अग्नि के प्रयोगकर, विषके प्रयोगकर, शस्त्र के प्रयोगकर जीवित रहित करके मारडाले. ऐसा विचार कर सामादेवीका

सूत्र

अंतराणिय छिद्दाणिय विरहाणिय पडिजागरमाणीओ विहरंति ॥ १४ ॥ तएणं सा सामादेवीए इमीसेकाहाए लद्धट्ठाए समाणे एवंवयासी-एवं खलू ममंपंचण्हं सवती सयाइं इमीसेकहाए लद्धट्ठे समाणे अण्णमण्णं एवं वयासी- एवं खलू सीहसेण राया जाव पडीजागरमाणीओ विहरंति, तंणणज्जातिणं ममं केणइ कुमरणेणं मारेस्सती तिकट्टु भीया, जेणेव कोवघंर तेणेव उवागच्छइ २त्ता उहय जाव झियाइ ॥१६॥ तएणं से सीहसेणराया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कोवघरे जेणेव सामादेवी तेणेव उवागच्छइ २त्ता सामादेवी उहय जाव पासइ२त्त २त्ता एवं वायसी-किण्हं तुमं देवाणुप्पिय ! उहयं जाव झियाइ ॥ १५ ॥ तएणं सा सामादेवी सीहसेणेणं रायाणं

अर्थ

अन्तर छिद्र मनुष्यों का विरह देखती हुई विचरने लगी ॥ १४ ॥ तब सामारानी को उक्त सामाचार मिले तब वह अपने मन से विचारने लगी—यों निश्चय पांचसो शोको पांचसे सोको की माताओंने ऐसा जाना और परस्पर मिलकर यों कहने लगी—कि सिंहसेन राजा शामादेवी से लुब्ध हो अपनी पुत्री का आदर नहीं करता है इसलिये शामा को किसी भी उपाव से मार डालना यावत् मुझ मारने का अन्तर छिदर देखती हुई विचर रही है. तो नमालुम मुझ को किस कुमृत्युकर मारेंगी. यों विचार कर डरपाई त्रासपाई जहां कोप घर (सूना घर) था तहां आकर चिन्ता ग्रहस्तबनी, आर्तध्यान करती हुई विचरने लगी ॥१५॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

एवंवुत्त समाणी उप्फेण उप्फेणियं सीहसेणरायं एवं वयासी-एवं खलु सामी ! ममं एकूणं पंचसवत्तीसयाइं, एकूणंपंचधाइसमाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठए सवणयाए, अण्ण मण्णं सद्दावेइ एववयासी— एवंखलु सीहसेणराया सामदेवीए मुच्छि (४ अम्हंधुयाओ णोअढाइ जाव अंतराणिय छिद्दाणिय जाव पडिजागरमाणी विहरीतए, तंणणज्जइणं

अर्थ

तब सिंहसेन राजा को यह बात मालुम होते ही जहां कोप घर था जहां शामादेवी थी तहां आया, अकार शामादेवी को चिन्ताग्रस्त यावत् आर्तध्यान ध्याती, देखकर यों कहने लगा—हे देवानुप्रिया ! किस कारन तू चिन्तग्रस्त हो आर्तध्यान ध्यारही है ? ॥ १६ ॥ तब शामादेवी सिंहसेन राजा के उक्त वचन श्रवण कर क्रोध के उफान में आविलाविलाट शब्द करती सिंहसेन राजा से यों बोली-यों निश्चय अहो स्वामी ! मेरी एक काम पांचसो शोको—और एक कम पांचसो उनकी धाय माताओं, इस प्रकार जाना और परस्पर मिलकर इस प्रकार मिसलतकी कि-यों निश्चय सिंहसेन राजा शामादेवी से मूर्छित हुवा है, हमारी पुत्री यों का आदर सत्कार नहीं करता है, इसलिये शामा को अग्नि से शास्त्र से जहर आदि प्रयोग से मारडालना, यों विचार कर मुझे मारने का अन्तर छिद्र देखती हुई विचर रही हैं, इसलिये नमालुम की वे मुझे किस कुमृत्युकर मारेगी, ऐसा जान में डरपाई त्रास पाइ चिन्ता ग्रस्तहो आर्त ध्यान

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

ममं केणइ कुमरणेणं मारेसइ त्तिकट्टु भीया ४, झियामि ॥ १७ ॥ तएणं से सीह सेणे राया सामादेविं एवंवयासी— माणं तुमं देवाणुप्पिया ! उहय जाव झियाहिंति, अहणं तववत्तीहामि जहाणं तवणत्थि कतोवि सरीरस्स आवाहेवा पवाहेवा भविस्सइ तीकट्टु,ताहिं इट्ठाहिंममासासति, तओपाडिणिक्खवमइ २ त्ता कोडवियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुपइट्ठियस्स नयरस्स बहिया एगं महं कुडागारसालं करेह अणेग खंभ पासादिय ४ करेह २ त्ता ममएयमाणंतियं पच्चप्पिणह ॥ १८ ॥ तएणं ते कोटुंबियपुरिसा करयल जाव पडिसुणेइ २ त्ता, सुप्पइट्ठियस्स

अर्थ

ध्यारही हूं ॥ १७ ॥ तब वह सिंहसेन राजा शामादेवी से यों कहने लगा-हे देवानुप्रिय ! तुम आर्त ध्यान मत करो, अब मैं ऐसा ही उपाव करूंगा जिस प्रकार तेरे शरीर को किंचित भी बाधा पीडा करने वाला कोई नहीं रहगा. यों कह कर उस को इष्टकारी प्रियकारी वचन से सन्तोषकर, वहां से निकला, निकलकर बाहिर आकर कोटुम्बिक पुरुष को बोलाकर यों कहने लगा-जाओ तुम हे देवानुप्रिया ! सुप्रतिष्ट नगर के बाहिर एक बडी कुटाकार शाला अनेक स्थम्भकर सहित चित्त को प्रसनकारी देखने योग्य अभीरूपप्रतिरूप बनवाओ, बनवाकर यह मेरी आज्ञा पीछी मेरे सुपरत करो ॥१८॥ कुटुम्बिक पुरुष हाथ जोड यावत् वचन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

णयरस्स बहिया पञ्चच्छिमेदिसीभाए एगं महं कूडागारसालं जाव करेइ, अणेग खंभ पासाइया, जेणेव सीहसेणेराया तेणेव उवागच्छइ २त्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥१९॥ तएणं से सीहसेणराया अण्णया कयाइ, एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगुणाइं पंचमाइं सयाइं आमंतेइ ॥ २० ॥ तएणं तासिं एगूणंपंचण्हंदेवीसयाणं एगूणं पंचमाइं सयाइं सीहसेणणंरण्णा आमंतियाइं समाणाइं सव्वालंकारविभूसियाइं करेइ जहा विभवेणं, जेणेव सुपइट्ठणयरे जेणेव सीहसेणराया, तेणेव उवागच्छइ २ ॥ २१ ॥ तएणं से सीहसेणराया एकूणंपंचदेवीसयाणं, एकूणंपंचण्हंमाईसयाणं कूडागारसालं

अर्थ

प्रमाण किया, सुप्रतिष्ठ नगर के बाहिर पश्चिम दिशा के विभाग में एक बडी जबर कुटाकार शाला अनेक स्थंभों से वेष्टित चित्त को प्रसन्न कारी बनवाकर जहां सिंहसेन राजा था तहां आकर वह आज्ञा पीछी सुपरत की ॥ १९ ॥ तब सिंहसेन राजा अन्यदा किसी वक्त एक कम पांचसो रानीयों को और उन की एक कम पांचसो धायमाताओं को आमंत्रण दे बोलाइ॥२०॥ तब वे एककम पांचसो देवीयों और एकम काम पांचसो उन की धाय माताओं सिंहसेन राजा का आमंत्रण श्रवनकर सर्व अलंकार कर विभूषित हुई, जिस का विभव शाक्ति जिसप्रकार थी तत्प्रमाणे सज होकर जहां सुप्रतिष्ठ नगर जहां सिंहसेन राजाथा तहां आई, ॥ २१ ॥ तब सिंहसेन राजाने एककम पांचसों रानीयों को और एक कम पांचसो उनकी धाय माताओं

सूत्र

आवसहं दलयइ ॥२२॥ तएणं से सिंहसेणेराया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउल असणं ४ उवणेह, सुबहुपुप्फवत्थगंध मल्लालंकारंच कूडागारसालं साहरइ ॥२३॥ तएणं ते कोडुंबिय तहेव जाव साहरइ ॥ २४ ॥ तएणं तासिं एगुणगाणंपचण्हंदेवीसयाणं एगुणपंचण्हंमाइसयाइं जाव सव्वालंकार विभूसियाइं, तं विउलं असणं ४ सुरंच ६, आसाएमाणी ४, गंधव्वेहिं णाडएहिय उवगीयमाणाइं विहरइ ॥ २५ ॥ तएणं से सीहसेणेराया अद्धरत्तकाल

अर्थ

को कूडागार शाल में रहने का कहा, वे उस ही प्रमाणे उस कुटाकार शाला में जाकर रही ॥ २२ ॥ तब सिंहसेन राजा कुटुम्बिक पुरुष को बोलाकर, यों कहने लगा—यों निश्चय हे देवानुप्रिया ! तुम जावो विस्तिर्ण अशनादि चारों प्रकार का आहार तैयार कर के उस कूडागार शाला में पहोंचावो बहुत वस्त्र फूल गंध माला अलंकार भी कूडागार साला में पहोंचावो॥२३॥ तब फिर कुटुम्बिक पुरुषने तैसेही चारो आहार वस्त्रादि तहां भेजे ॥ २४ ॥ तब फिर एककमपांचसो रानीयों और एक कम पांचसो धाय माताओं पूर्वोक्त किये हुवे सर्व श्रृंगार सहित वह बहुत अशनादि चारों प्रकार का आहार मदिरादि के साथ खाती खिलाती गन्धर्व-गीतगाती, नृत्यकरती, गीत नृत्य में प्रमोद पाती विचरने लगी॥२५॥ तब फिर वह सिंहसेन राजा आधीरात्रि में बहुत पुरुषों के साथ परिवरा हुवा जहां कूडागार शाला थी तहां आया,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

समयंसि वहुहिं पुरिसेहिं संपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ २त्ता कूडागारसालाए दुवाराइं पिहेइ, कूडागार सालाओ समंता अगणिकायं दलयंति ॥ २६ ॥ तएणं तासिं एगुणगाणं पंचण्हं देवीसंयाणं, एगुणगाणंपंचमाइं सयाइं, सीहरण्णो आलोवियाइं समणाइं, रोयमाणाइ ३ अत्ताणाइं असरणाइ कालधम्मुणा संजुत्ताइं ॥२५॥ तएणंसे सीहसेणेराया एयकम्मे४ सुबहु जाव समज्जिणित्ता, चउतीसंवास सयाइ परमाउपालइत्ता कालमासे कालंकिच्चा, छट्ठीए पुढीवीए उक्कोसेणं वावीसं सागरोवमाइं ट्ठिती उववण्णे, सेणं ताओ अणंतरं उव्वट्टित्ता, इहेव रोहीडए णयरे दत्तस्स सत्थ-

अर्थ

आकर कुडागार शाला के द्वार वन्ध कराये, कुडागार शाला के चारों तरफ अग्नि प्रज्वलित की अर्थात् कुडागार शाला को अं[गा]र [लगाय] लगादी॥२६॥ तब फिर वे एककम पांचसों रानीयों और एककम पांचसो उन की धायमाताओं सिंहसेन राजाने अंगार लगाये बाद रुदन करती अक्रन्दन करती, दुःख का हरन करने वाला, सुख का प्राप्त करने वाला कोइ भी नहीं मिलने से मृत्यु को प्राप्त हुई !! ॥ २७ ॥ तब फिर सिंहसेन राजा इस प्रकार कर्म करके बहुत पाप उपार्जन करके चौतीससो [३४००] वर्ष का पूर्ण आयुष्य पालकर काल के अवसर काल प्राप्त हो छठी नरक में उत्कृष्ट बावीस सागरोपम की स्थिति पने

सूत्र

घाहस्स कण्हसिरिए भारीयाए कुच्छिसि दारियात्ताए उववण्णे ॥ २८ ॥ तएणं सा कण्हसिरी णवण्हं मासाणं जाव दारियं पयाया, सुकुमाल जा। सुरूवं॥ २९॥ तएणं तीसे दारियाए अम्मापियरो णिव्वत्त बारसाहियाए विउलं असणं ४ जाव मित्त णामधेज्जं करेइ, होउणं दारिया देवदत्ता णामेणं॥ ३०॥ तएणं सा देवदत्ता पंचधाइ परिग्गाहिया जाव परिवड्ढइ ॥३१॥ तएणं सा देवदत्ता दारिया उमुक्कबालभावे जोव्वणेणय रूवेणय लावण्णेणय जाव अईव २ उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जायायाविहोत्था ॥ ३२ ॥ तएणं सा देवदत्ता

अर्थ

नेरीपा उत्पन्न हुवा ॥ २८ ॥ तहां से अन्तर रहित निकलकर इस ही रोहिडनगर के दत्त सार्थवाहि की कृष्णा श्री भार्या की कुंक्षी में पुत्रीपने उत्पन्न हुवा ॥ २९ ॥ तब फिर कृष्णश्रीने नव महीने प्रति पूर्ण हुवे बाद यावत् पुत्रीका जन्मदिया. वह पुत्री सुकुमाल यावत् सुरूपवंत थी, उस लडकी के मातापिता बारवे दिन विस्तीर्ण अशनादि चारों प्रकार का आहार तैयार कराकर मित्र ज्ञाती आदि को बोलाकर जेमनदेकर इस प्रकार नाम की स्थापना की-हमारी पुत्री का देवदत्ता नाम होवे ॥ ३० ॥ तब फिर वह देवदत्ता पांच धायकर परिवरी हुई यावत् वृद्धिपाने लगी ॥ ३१ ॥ तब वह देवदत्ता पुत्री बाल्यावस्था से मुक्त हुई यौवन अवस्था को प्राप्त हुई रूपकर यौवनकर लावण्यता कर यावत् अतीहि २ उत्कृष्ट २ सरीर की धारन करने वाली हुई ॥ ३२ ॥ तब फिर वह देवदत्ता कुमारी अन्यदा किसी वक्त स्नान करके यावत् विभूषित

सूत्र

दारिया अण्णया कयाई ण्हाया जाव विभूसिया बहुहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता उप्पिं आगासतलगंसि कणग तिंदूसएणं कीलमाणी ए विहरइ ॥ ३३ ॥ इमंचणं वेसमण दत्तेराया ण्हाया जाव विभूसिए आसंदुरुहइ बहुहिं पुरिसेहिं संपरिबुडे आसवाहणियाए णिज्जायमाणे दत्तस्सगाहावइयस्स गिहस्स अदुरसामंते वीयवयमाणेणं ॥ ३४ ॥ तएणं से वेसमणेराया जाव वीईवयमाणे देवदत्तंदारियं उप्पिंआगासतलगंसि कीलमाणी पासइ२त्ता देवदत्ताए दारियाए रुवेणय जोव्वणेय लावण्णेणय जाव विम्हए कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ२त्ता एवं वयासी-कस्सणं देवाणुप्पिया!एसादारिया किंवाणामधेज्जेणं॥३५

अर्थ

होकर बहुत से खोजा यावत् पुरुषों के परिवारकर कर परीवरी हुई अपने घर की आकाशके तले [चांदनी] में सुवर्ण की गेंद से क्रीडा करती हुई विचरने लगी ॥ ३३ ॥ इधर वैश्रमणदत्त राजा स्नान किया यावत् विभूषित हो अश्वारूढ हो। बहुत पुरुषोंके परिवारसे परिवरा अश्वक्रिडा करनेको जाता हुवा दत्त गाथापतिके घरके पास हो कर निकला॥३४॥तब वह वैश्रमण राजा दत्तगाथापतिके घरके पास जाते देवदत्ता बालिका को आवस के उपर के तल में क्रीडा करती हुई देखी,देखकर देवदत्ता बालिका के रूप में यौवन में लावण्यता में यावत् आश्चार्यता को प्राप्त हुवा, कोटुम्बिक पुरुष को बोलाकर यों कहने लगा-किहे देवानुप्रिय ! यह बालिका किसकी है? इसका क्या नाम है?॥३५॥तब कोटुम्बिक पुरुष वैश्रमण राजा से हाथ जोडकर यों

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा वेसमणराया करयल जाव एवंवयासी-एसणंसामी ! दत्तसत्थवाहस्स धूया कण्हासिरिअत्तया देवदत्ताणामं दारिया रूवेणय जोव्वणेय लावण्णेणय उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा ॥ ३६ ॥ तएणं से वेसमणेराया आसवाहाणिओ पडिणियत्तेसमाणे अभिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छाणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दत्तस्सधूयं कण्हसिरी अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसणंदिस्स जुवरण्णो भारियाए वरेह जइवियसयंरज्जसुक्का ॥ ३७ ॥ तएणं से अब्भितरट्ठाणिज्जा पुरिसा वेसमणरण्णो एवं वुत्तसमाणे हट्ठ करयल जाव एवं पडिसुणेइ २ त्ता ण्हाया जाव

अर्थ

कहने लगा—अहो स्वामी ! यह दत्तसार्थवाही की पुत्री कृष्णश्री की आत्मज देवदत्ता नाम की कन्या, रूपकर यौवन कर लावण्यताकर उत्कृष्ट उत्कृष्ट शरीर की धारक है ॥ ३६ ॥ तब वैश्रयण राजा अश्वक्रिडा से पीछा निवृत्त कर आया, अभ्यन्तर के कार्य करता पुरुष को बोलाकर यों कहने लगा—यों निश्चय हे देवानुप्रिया ! जावो तुम दत्तसार्थवाही की पुत्री कृष्णश्री भार्या की आत्मज देवदत्ता नाम की कन्या को पुष्पनन्दी युवराज को भार्या के लिये मांगो, जो उस का मूल्य हो सो देवो ॥ ३७ ॥ तब वह अभ्यन्तरिक पुरुष वैश्रमण राजाका उक्त कथन श्रवणकर हर्ष पाया, हाथ जोड सिरचडा वचन प्रमाण किया, स्नान किया, यावत् शुद्ध हो उत्तम वस्त्र धारनकर मनुष्यों के परिवार से परिवरा हुवा, उस दत्तगाथापति के

सूत्र

सुद्धप्पावेइ संपरिवुडा, तएणं दत्तस्सगिहे तेणेव उवागच्छइ २ ॥ ३८ ॥ तंएण से दत्तसत्थवाहे ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ २ त्ता हट्ठ आसणाओ अब्भुट्ठइ सतट्ठपयाइं अभुग्गए आसणेणं उवणिमंतेइ २ त्ता ते पुरिसे आसत्थ वीसत्थे सुहासण वरगए एवं वयासी-संदिसंतुणं देवाणुप्पिया ! किं मागमणप्पओयण ? ॥ ३९ ॥ तएणं ते रायपुरिसा दत्तसत्थवाहं एवं वयासी-अम्हेणं देवाणुप्पिया ! तवधूयं कण्हसिरी अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसणंदिस्स जुवरण्णो भारियत्ताए वरेमो, तं जइणंसि देवाणुप्पिया ! जुत्तंवा पत्तंवा सल्लाहणिज्जंवा सरिसोवा, संजोगा दिज्जंउणं देवदत्ता भारिया पूसणं-

अर्थ

घर को आया ॥ ३८ ॥ तब वह दत्तसार्थवाही उस राज्य पुरुष को आता हुवा देखकर हर्ष पाया आसन से खडा हुवा सात आठ पांव सन्मुख गया. बैठने को आसन की आमंत्रणा की, तब वह राज पुरुष उस आसन पर बैठकर मार्गक्रमन के श्रम रहित हुवा, तब उसे दत्तसार्थवाही कहने लगा—हे देवानुप्रिया ! आज्ञा दीजीये तुमारा यहां किस प्रयोजन से आना हुवा है ? ॥ ३९ ॥ तब वह राज्य पुरुष दत्तसार्थवाही से ऐसा कहने लगा—हे देवाप्रिया ! मैं तुमारी पुत्री कृष्णा श्री की आत्मज देवदत्ता नाम की कन्या को पुष्पनन्दी युवराज की भार्या के लिये मांगने आया हुं, इसलिये अहो देवानुप्रिया ! यदि तुमारे को यह कार्य योग्य लगता हो, परतीतकारी मालुम पडता हो, प्रसंशनीय जानाजाता हो, दोनों का एकासा योग्य संजोग हो

सूत्र

दिस्स जुवराण्णो, भणदेवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्कं ? ॥ ४० ॥ तएणं से दत्ते ते अभिंतरट्ठाण पुरिसस्स एवं वयासी-एवं चणं देवाणुप्पिया! ममं सुक्कं जण्णं वेसमण दत्तेराया ममंदारिया णिमित्तेणं अणुगेण्ह २ त्ता सेट्ठाणपुरिसे विउलेणं पुप्फवत्थ गंधमल्ला लंकारेणे सक्कारेइ पडिविसज्जेइ ॥ ४१ ॥ तएणं सेट्ठाणपुरिसे जेणेव वेसमणेराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वेसमणस्सरण्णो एयमट्ठं णिवेदेइ ॥ ४२ ॥ तएणं से दत्तेगाहावई अण्णयाकयाइ सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुतंसि विउलंसि असणं ४ उवक्खडावेइ २ त्ता मित्तणाइ आमंते ण्हाए जाव पायच्छिते सुहासणवरगए तेणंमित सर्द्धि

अर्थ

तो तुमारी कन्या देवदत्ता को पुष्पनन्दीकुमार युवराज के भार्या पने देवों, और कहो कि हे देवानुप्रिया! उस का मूल्य क्या देवें? ॥ ४० ॥ तब दत्तगाथापति उस अभ्यन्तर स्थानिक राज्य पुरुषसे इसप्रकार बोला-यों निश्चय अहो देवानुप्रिया! मुझे मूल्य यही दीजीये कि वैश्रमणदत्त राजा मेरी पुत्री को ग्रहण करने अनुग्रह करें. यों कहकर उस अभ्यन्तर स्थानीय राज्य पुरुषको विस्तीर्ण वस्त्र सुगंध द्रव्य फुलमाला अलंकार कर सत्कार सन्मानदे विसर्जन किया ॥ ४१ ॥ तब वह अभ्यन्तर स्थानीय पुरुष जहां वैश्रमणराजा था तहां आकर वैश्रमणराजासे सर्व वृतान्त निवेदन किया ॥ ४२ ॥ तब वह दत्तगाथापति अन्यदा किसी वक्त अच्छा तिथी दिन करण नक्षत्रादि मुहूर्त देखकर विस्तीर्ण अशनादि चारों आहार तैयार कराकर मित्रज्ञा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

संपरिवुडे तंविउलं असणं ४ आसाएमाणा ४ एवं चणं विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए आयंते ३ तं मित्तणाई विउलं गंध पुप्फ जाव आलंकारेणं सक्कारेइ समणेइ, देवदत्तं दारियं ण्हायं जाव विभूसियं सरीरं पुरिसहस्सवाहिणीयं दुरुहिए २त्ता सुबहुमित्त जाव सद्धिं संपरिवुडे सव्वड्ढीए जाव सव्वरवेणं रोहिडगं णयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव वेसमणे रण्णोगिहे जेणेव वेसमणोराया तेणेव उवागच्छइ २त्ता करयल जाव वद्धावेइ २त्ता वेसमण-रायं देवदत्तं दारियं उवणेइ ॥ ४३ ॥ तएणं से वेसमणराया देवदत्तं दारियं उवणीयं

अर्थ

तीयों को बोलाये; यावत् मायाश्चितकर शुद्ध हुवे, सुखासनपर बैठे हुवे उन मित्रज्ञातीयो के साथ परिवरे हुवे विस्तीर्ण अशनादि चारों आहारको खाते खिलाते विचरने लगे ॥ जीमकर तृप्त हुवे कुल्ले आदिकार अत्यन्त पवित्र हुवे,फिर उन मित्रज्ञाति को विस्तीर्ण गंधफूल यावत अलंकारकर सत्कारे सन्माने,देवदत्ता लडकी को स्नानकराया यावत् बहु मूल्य वस्त्र भूषण कर विभूषित की, हजार पुरुष उठावे ऐसी शिबका में बैठाइ, बैठाकर बहुत मित्रज्ञाति आदिके साथ यावत् परिवरे हुवे सर्व ऋद्धियुक्त यावत् वादित्र के झणकार युक्त रोहिड नगर के मध्य मध्य में होकर जहां वैश्रमणराजा का घर था जहां वैश्रमणराजा था तहां आये आकर हाथ जोड सिरसावर्त कर जयहो विजयहो इस प्रकार बधाये, बधाकर वैश्रमणराजा को देवदत्ता पुत्री सुपरतकी ॥ ४३ ॥ तब वैश्रमणराजा देवदत्ता कन्या को प्राप्त हुइ देखकर हर्ष पाया फिर विस्तीर्ण

सूत्र

पासइ २त्ता हट्ठ विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ २त्ता मित्तणाइ आमंतेइ जाव सक्कारेइ २ सम्माणेइ पूसणंदिकुमारं देवदत्तं दारियं पट्टयं दुरुहेइ २ त्ता सेयापीएहिं कालसेहिं मज्जावेइ २त्ता वरणेवच्छाइं करेइ २त्ता अग्गिहोमं करेइ पूणंदिकुमारं देवदत्ताए दारियाए पाणिगिण्हावेइ ॥ ४४ ॥ तएणं से वेसमणदत्तेराया पुसणंदिकुमारस्स देवदत्तं दारियं सव्वड्ढीए जाव रवेणं महयाइड्ढी सक्कारसमुदाएणं पाणिग्गहणं करेइ, देवहत्ताए भारियाए अम्मापियरोमित्त जाव परियणंच विउलं असणं ४ वत्थगंधमल्लालंकारिय

अर्थ

अशनादि चारौ प्रकार के आहार को तैयार कराया, मित्रज्ञातीयों कों बोला ये सत्कारे सन्माने पुष्प नंदी कूमरको देवदत्त के साथ पाटपर बैठाये. बैठाकर चांदी के सुवर्ण के कलशकर स्नानकराया, फिर विवह योग्य प्रधान वस्त्र पहनाये अग्निहोम किया, पुष्पनन्दी कुमारका देवदत्ताका हाथ मिलाप किया पानी ग्रहण कराया ॥ ४४ ॥ तब फिर वैश्रमण दत्तराजा पुष्पनंदी कुमार को और देवदत्त को सर्व प्रकार की ऋद्धिकर यावत् सर्व प्रकार के द्रव्य कर बहुत सत्कार सन्मान कर बहुत परिवार से परिवरे पानी ग्रहण का उत्सव किया. तब फिर देवदत्ता भार्या के माता पिता मित्र यावत् परीजनको विस्तीर्ण अशनादि चारों प्रकार के आहार कर वस्त्र गंध अलंकार कर सत्कार सन्मान कर विसर्जन किये ॥ ४५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सक्कारेइ जाव पडिविसज्जेइ ॥ ४५ ॥ तएणं से पूसणंदीकुमारे देवदत्ताए भारियाए सद्धिं उप्पिंपसाय फुट्टवत्तीस उवगिज्ज २ इत्ता जाव विहरइ ॥ ४६ ॥ तएणं तीसे वेसमणेराया अण्णयाकयाइ कालधम्मुणासंजुत्ता, णीहरणं जाव रायाजाए पूसणंदी ॥ ४७ ॥ तएण से पूसणंदीराया सिरीदेवीएमाया भत्तेयावि होत्था, कल्ला काल्लिं जेणेव सिरिदेवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पायपडणं करेइ २ त्ता सयपाग सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भिगावेइ, अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाय रोमसुहाए चउविहाए संवाहणाइ संवाहावेइ २ त्ता सुरभिणा गंधवट्टएणं उव्वढावेइ २ त्ता तिहिंत्तिणि

अर्थ

तब वह पुष्पनन्दीकुमार देवदत्ता भार्या के साथ उपर प्रासाद में मृदंग के मस्तक फूटते हुवे बत्तीस प्रकार के नाटक होते हुए इत्यादि सुखोपभोग में गृद्ध हो सुख भोगवता विचर ने लगा ॥ ४६ ॥ तब वह वैश्रमण राजा अन्यदा किसी वक्त कालधर्म को प्राप्त हुवा—मृत्युपाया, जिसका महाऋद्धि से निहारन किया फिर वह पुष्पनन्दीकुमार राजा हुवा ॥४७॥ तब फिर पुष्पनन्दी राजा श्रीदेवी माता का भक्त बना सदैव वक्तो वक्त जहां श्रीदेवी है तहां आकर पांव पडे, फिर सोपाक सहश्रपाक तेलका मालिसकरे, वह तेलका मालिश, हड्डीको सुखदाइ, मांसको सुखादाइ, त्वचा-चमडीको सुखदाइ, रोमराइ को सुखदाइहोवे, यों चारप्रकारसुखकारी संवाहन करके सुगन्धी गंध पदार्थके उगटना पीठी करे, फिर तीन प्रकारके पानी कर स्नान करावे-प्रथम उष्ण पानी से नन्तर शीतल पानी से, नन्तर सुगंधी पानी से. स्नान करा वस्त्रादि से

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

पाणीए ण्हवरावइ उदएहिं मंज्जावेइ २ त्ता तंजहा-उसिणोदएणं, सिओदएणं, गंधोदएणं. विउलं असणं ४ भोयावेयी, सिरीदेवीए ण्हायाए जाव पायाच्छित्ताए जाव जिमिय भुत्तुत्तरागयाए, तओपच्छा ण्हाइ भुंजेहि वाउरालाइं मणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥४८॥ तएणं तीसे देवदत्ताए देवीए अण्णयाकयाइ पुव्वरत्ता वरत्त कालसमयंसि कुंटुब जागरियं जागरमाणे इमेयारूवे अज्झत्थिए ४ एवं खलु पूसणंदीराया सिरीदेवीए माइ भत्ते जाव विहरइ, तं एएणं विघाएणं णो संचाएमि अहं पूसणंदिणारण्णो सार्द्धिं उरालाइ भुंजमाणे विहरामी ॥ एवं संपेहेइ २ त्ता सिरीदेवीए अंतराणिय ३ पडि-जागरमाणी २ विहरइ ॥ ४९ ॥ तएणं सा सिरीदेवी अण्णयाकयाइ मज्जावीविरहिय

अर्थ

श्रृंगार कर असनादि चारों प्रकार का आहार तैयार करा के भोजन जिमावे, इस प्रकार श्रीदेवी को स्नान करा यावत् भोजन करा फिर आप अपने स्थानक में आकर स्नान करे भोजन करे प्रधान मनुष्य सम्बन्धी सुख भोगवता विचरे ॥ ४८ ॥ तब वह देवदत्तादेवी एकदा प्रस्तावे आधीरात्रि व्यतीतहुवे कुटुम्ब जागरना जागती हुई इस प्रकारका अध्यवसाय विचार करनेलगी-यों निश्चय पुष्पनन्दी राजा श्रीदेवी माता का भक्त होकर यावत् विचरता है, उस व्याघातकर मैं पुष्पनंदी राजा के साथ उदार प्रधान मनुष्य सम्बन्धी काम भोग भोगवने को समर्थ नहीं हुं. ऐसा विचार कर श्रीदेवी को मारने केलिये अन्तर छिद्र अकेली कबमिले इस प्रकार देखती हुई विचरने लगी ॥ ४९ ॥ तब वह श्रीदेवी अन्यदा किसी वक्त

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सयणिज्जंसिसुत्ताजायायावि होत्था ॥ ५० ॥ इमचणं देवदत्ताए देवी जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सिरीदेवी मज्जावीयं विरहिय सयणिज्जंसि सुहपसुत्त पासइ २ त्ता दिसालोयं करेइ २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोहदंडं परामुसइ २ त्ता लोहदंडं तावेइ २ त्ता तत्तं समं जोइभूयं फुल्ल किंसुयसमाणं संडासएणं गहाय जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सिरीएदेवीए अपाणंसि पक्खिवेइ ॥ ५१ ॥ तएणं सा सिरीदेवी महया २ सद्देणं आरसित्ता कालधम्मुणा संजुत्ता ॥ ५२ ॥ तएणं से सिरीदेवीए दासचेडीओ आरडियसद्दंसो च्चाणिसम्म जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवाग-

अर्थ

मदिरापी कर स्नानकर एकान्त स्थान में शैया में निद्रावश सूती थी ॥ ५० ॥ इस वक्त वह देवदत्ता देवी जहां श्रीदेवी थी तहां आइ आकर श्रीदेवी को मदिरा के नाश में वेहोश शैय्या में सुख से सूती देखकर चारों दिशा में अवलोकन किया कि कोइ देखता तो नहीं है, तत्काल जहां भोजनग्रह था तहां आइ आकर लोहाका दंड ग्रहण किया, लोहदंड ग्रहण कर अग्नि में तपाया, तप्त अग्नि समान कसूंबा (पलास) के फुल समान लाल किया, उसे संडास में पकड कर जहां श्रीदेवी सूती थी तहां आकर श्रीदेवी के अपान द्वार (योनी) में वह लोहदंड प्रक्षेप किया-दावा दिया ॥ ५१ ॥ तब वह श्रीदेवी महा २ शब्दकर चिल्लाइ और तत्काल मृत्यु प्राप्त हुई ॥ ५२ ॥ तब फिर श्रीदेवी की दासीने वह अरडाट शब्द श्रवनकर हृदयमें धारनकर श्रीदेवथी तहां आइ, देवदत्ता देवी को वहां से भागती हुइ देखी, देखकर जहां श्रीदेवी थी तहां

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

च्छइ २ त्ता देवदत्ति देविं तओ अवक्कममाणिं पासइ २ त्ता जेणेव सिरिदेवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सिरिदेवी णिप्पाणं णिच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासइ २ त्ता हाहा ! अहो अकज्जं !! मितिकट्टु, रोयमाणी २ जेणेव पूसणंदिराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पूसणंदीरायं एवं वयासी-एवं खलु सामी! सिरीदेविं देवदत्ता देवीए अकाले चेव जीविआओ विवरोविया ॥ ५३ ॥ तएणं से पूसणंदीराया तासिंदासचेडीओ अंतिए एयमट्ठं सोच्चाणिसम्म महया माइ सोएणं अफुण्णे समाणे फरसुणियंतेविव चंपग पायवं धसइ धरणीतलंसि सव्वंगोहिं सण्णिवडिये ॥ ५४ ॥ तएणं से पूसणंदीराया मुहुत्तं तरेणं आसत्थे समाणे बहुहिं राईसर जाव सत्थवाहोहिं मित्त जाव परणेणय सद्धिं रोयमाणे २

अर्थ

आकर श्रीदेवी को श्वासादि जीवित की चेष्टा रहित जीव रहित देखी, देखकर हाहाकार किया, अहो इति खेदाश्चर्य ! जबर अकार्य हुवा !! यों बोलती रुदन करती जहां पुष्पनन्दी राजा था तहां आइ आकर पुष्पनन्दी राजा को यों कहाने लगी— यों निश्चय हे स्वामी ! श्रीदेवी माता को देवदत्ता रानी को विनाकारन जीवित रहित की-मारडाली ! ॥ ५३ ॥ तब पुष्पनन्दी राजा उसदासी के पास उक्त कथन श्रवन कर अवधार कर माता क मृत्यु के महाशोगकर व्याप्त हुवा, जैसे फरसी मे काटी हुइ चम्पक वृक्ष की शाखा पडती है यों धमाकर धरणी तलपर सर्वांग कर पडगया ॥ ५४ ॥ तब फिर पुष्पनंदी राजा मुहुर्तबाद स्वस्थचित्त हो बहुत से राजा मधान सार्थवाह मित्र ज्ञाती यावत् दासदासीयों के साथ रूदन करता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सिरीए देवीए इड्डिए णीहरणं करेइ २त्ता, आसुरत्ते ६ देवदत्तं देविं पुरसेहिं गिण्हावेइ २त्ता, एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेई ॥५५॥ एवं खलु गोयमा ! देवदत्ता देवी पुरा जाव विहरइ ॥५६॥ देवदत्ताण भंते ! देवी इओ कालमासे कालंकिच्चा कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जिहिति? गोयमा ! असीयवासाइं परमाउपालेता कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरियत्ताए उववण्णे; संसारोवगस्सइ, तओणं अणंतरं उव्वट्टित्ता गंगपुरे णयरे हंसत्ताए पच्चायाहिं, तिसेणं, तत्थमाउणिएहिं वाधिए समाणे, तत्थेव गंगपुरे सेट्ठिकुले, बोहि, सोहम्मेकप्पे, महाविदेह सिज्झिहिंति॥५७॥ नवमं अज्झयणं सम्मत्तं॥९

अर्थ

अश्रूपात करता श्रीदेवी माता का मह ऋद्धिकर निहारन किया, फिर शिघ्र को पातुर हो देवदत्त देवी को अन्य पुरुष के पास पकडाकर हे गौतम ! तुमने देखआये तैसे हाल करा रहा है ॥ ५५ ॥ यों निश्चय हे गौतम ! देवदत्ता देवी पूर्वोपार्जित कर्म भोगवती विचर रही है, ॥५६॥ अहो भगवन्! यह देवदत्ता देवी काल के अवसर कालकर कहां जायगा कहां उत्पन्न होगा ? हे गौतम ! अस्सी (८०) वर्ष का पूर्ण आयुष्य भोगवकर काल के अवसर काल कर इसही रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न होगा यावत् मृगापुत्रकी तरह वह भी संसार परिभ्रमण कर गंगापुर नगर में हंस पक्षीपने उत्पन्न होगा, वहां चिडिमार के हाथ से मारा जायगा. फिर वही गंगापूर नगर में शेठ के कूल में जन्म ले, दीक्षा ले सौधर्म देवलों में देवतापने उत्पन्न होगा. वहां से महाविदेह क्षेत्रमें जन्म ले मोक्ष जावेगा ॥ इति विपाक सूत्रका देवदत्तारानी का नववा अध्याय संपूर्ण॥ ९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

* दशमम्-अध्ययनम् *

सूत्र

जइणं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स उक्खेवओ? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणंसमएणं वद्धमाणपुरेणामे णयरे होत्था, विजय वद्धमाणे उज्जाणे, मणिभद्दे जक्खे, विजयमित्तराया ॥ १ ॥ तत्थणं धणदेवणामं सत्थवाहे होत्था, अड्ढे, पियंगुभारिया, अंजूदारिया जाव सरीरा ॥ २ ॥ समोसरणं, परिसाणिग्गया जाव पडिग्गया ॥ ३ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं जेट्ठे जाव अडमाणे जाव विजयमित्तस्स रण्णोगिहस्स असो-

अर्थ

यदि अहो भगवान! श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने दशवे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है? यों निश्चय हे जंबू! उस काल उस समय में बृद्धमानपुर नाम का नगर था, वहां विजय बृद्धमान नाम का उध्यान था, उस में मणिभद्र यक्ष का देवालय था, बृद्धमान पुरका विजय मित्र नामे राजा राज्य करता था ॥ १ ॥ उस बृद्धमान नगर में धनदेव नाम का सार्थवाही रहता था, वह ऋद्धिवंत था, जिस की प्रियंगु नाम की भार्या थी और अंजूनामकी उसकी पुत्री थी, वह रूपकर यौवन कर लावण्यता कर यावत् उत्कृष्ट२ शरीर की धारन करने वाली थी ॥ २ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदनेगई, धर्म कथा श्रवण कर परिषदा पीछी गई ॥ ३ ॥ उस काल उस समय में भगवंत के जेष्ट शिष्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गवणियाए अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे पासइ २ त्ता एगइत्थियं सुक्कं भुक्खं णिम्मंसं किडि २ भूयं अट्ठिचम्मावणद्धं, णीलसासगणियत्थं कट्ठाइं कलुणाइं बिस्सराइ कूवमाणं पासइ २ त्ता चिंता, तहेव जाव एवं वयासी-एसणं भंते! इत्थिया पुव्वभवे काआसि? ॥ ४ ॥ वागरणं-एवं खलु गोयमा! तेणंकालेणं तेणंसमएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे इंदपुरे णामं णयरे होत्था. तत्थणंददत्तेराधा ॥पुढाविसिरि णामं गणिया वण्णओ ॥५॥ तएणं सा पुढविसिरी गणियाइंदपुरे णयरे बहवे राईसर जाव प्पभियओ

श्री गौतम स्वामी भिक्षार्थ बृद्धमान पुर में फिरते हुवे यावत् विजय राजा के घर की आशोक वाडी के पास होजाते हुवे एक स्त्री को देखी, वह स्त्री शरीर कर सूकी हुई भूखी हुई मास लोही रहित, ठड्डो की पिंजर चर्म से मंडीत शरीर को पानी मे भींजोइ हुइ साडी से ढककर करुना जनक क्लेशकारी दीनदयायने विद्रूप शब्द से अक्रन्दन रुदन करती देखकर गौतम स्वामीजी को विचार उत्पन्न हुवा, तैसे ही यावत् भगवंत पास आकर यों कहने लगे—अहो भगवन्! यह स्त्री पूर्व भव में कौन थी? ॥४॥ भगवंतने कहा यों निश्चय हे गौतम! उस काल उस समय में इस ही जम्बूद्वीप नामे द्वीप के भरत क्षेत्र के इन्द्रपुर नाम के नगर में इन्द्रदत्त राजा राज्य करता था, तहां पृथवी श्री नामे गणिका—वेश्या थी उस का वर्णन कामद्वजा गणिका जेसा जानना ॥ ५ ॥ तब वह पृथवी श्री

सूत्र

बहुहिं चुण्णप्पयोगेहिय जाव अभिओगिता उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥ ६ ॥ तएणं सा पुढविसिरि गणिया, एएकम्मा एयप्पकम्मा ४ सुबहुपावं समज्जिणित्ता पणतीसं वाससयाइं परमाउपालित्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठी पुढवीए उक्कोसे णेरइयत्ताए उववण्णा ॥ ७ ॥ साणं ताओ उव्वट्टित्ता इहेव वद्धमाणे णयरे धणदेवस्स सत्थवाहस्स पियंगुभारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए उववण्णे ॥ ८ ॥ तएणं सा पियंगुभारिया णवण्हं मासाणं दारियं पयाया, णामं अंजू, सेसं जहा देवदत्ताए ॥ ९ ॥ तएणं से विजयेराया आसवाहणियाए णिज्जायमाणे जहा

अर्थ

गणिका इन्द्रपुर नगर के बहुत से राजा ईश्वर यावत् प्रभृतिक को बहुत से चूर्णादि प्रयोग कर यावत् अभियोग कर वश में कर प्रधान मनुष्य संबंधि भोगोपभोग भोगवती विचरती थी ॥६॥ तब वह पृथवी श्री गणिका इस प्रकार कर्मोपार्जन कर बहुत प्रकार पाप का समाचरन कर पैंतीससो [३५००] वर्ष का पूर्ण आयुष्य पालकर काल के अवसर में काल पूर्ण कर छट्ठी पृथवी में उत्कृष्ट बावीस सागरोपम की स्थितिपने उत्पन्न हुई ॥ ७ ॥ वहां से निकलकर इस ही वृद्धमानपुर नगर में धनदेव सार्थवाही की प्रियंगु भार्या की कुक्षी में पुत्रीपने उत्पन्न हुई ॥ ८ ॥ तब प्रियंगु भार्या नव महीने पूर्ण हुवे पुत्रीका जन्म दिया, उस का अंजू नाम स्थापन किया, शेष अधिकार सब देवदत्ता कुमारी जैसा जानना ॥ ९ ॥ तब

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ

वेसमणदत्ते तहा अंजू पासइ, णवरं अप्पाणो अट्ठावएवरेइ, जहा तेतली, जाव अंजू भारियाए सद्धिं उप्पिं जाव विहरइ ॥ १० ॥ तएणं तीसे अंजूदेवीए अण्णयाकयाइ जोणीसूले पाउब्भूएयावि होत्था ॥ ११ ॥ तएणं से विजयेराया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी-गच्छहणं देवाणुप्पिया! वद्धमाणपुर णयरे सिंघाडग जाव एवं वय-एवं खलु देवाणुप्पिया! विजए रायस्स अजूदेवीए जोणी सूले पाउब्भूए,जोणं इच्छ-

सूत्र

वह विजयमित्र राजा अश्व क्रीडा नीमित्त निकला था जैसे वैश्रवण राजाने देवदत्ता को देखीथी तैसेही विजय मित्र राजाने अंजूकन्या को देखी, जिस में विशेष इतना वैश्रवण राजाने पुत्र केलिये याचना कराइ थी और इसने अपने लिये याचना कराइ, जिस प्रकार ज्ञाता सूत्र में तेतली प्रधानने कराइ थी. यावत् अंजू भार्या के साथ ऊपर प्रासाद में सुख भोगवता विचरने लगा ॥ १० ॥ तब उस अंजूदेवी को अन्यदा किसी वक्त योनीशूल का रोग उत्पन्न हुवा ॥ ११ ॥ तब विजय राजा कौटुम्बिक पुरुष को बुलाकर यों कहने लगा—हे देवानुप्रिय ! जावो तुम वृद्धमानपुर नगर के शृंगाटक पंथ में यावत् महापंथ में महा २ शब्द कर उद्घोषणा करो कि विजय मित्र राजा की अंजूरानी के योनी में शूल रोग उत्पन्न हुवा है, उसे कोइ वैद्यादि आराम करेगा उसे विजय मित्र राजा बहुत अर्थ सम्पदा देगा. कौटुम्बिक पुरुषोंने उस ही प्रकार उद्घोषना

सूत्र

सिवा ६ जाव उग्घोसइ ॥ १२ ॥ तएणं से बहवे वेज्जाया ६, इमं एयारूवं सोच्चा-णिसम्म जेणेव विजयराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अंजूए देवीए बहवे उप्पत्तियाहिं ४ बुद्धिहिं परिणामे माणाइच्छंति अंजूए देवीए जोणीसूले उवसामित्ते णो संचाएइ उवसामित्तए ॥ १३ ॥ तएणं ते बहवे विज्जायइ जाहे णो संचाएइ अंजूदेवीए जोणीसूले उवसामित्तए ताहेसंता तंता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया ॥ १४ ॥ तएणं सा अंजूदेवी ताये वेयणाए अभिभूया समाणी सुक्काभुक्खा णिम्मंसा कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं विलवइ ॥ १५ ॥ एवं खलु गोयमा ! अंजूदेवी पुरा जाव विहरइ ॥ १६ ॥ अंजूणं भंते देवीए कालमासे कालंकिच्चा

अर्थ

की ॥ १२ ॥ तब वे बहुत वैद्य वैद्य के पुत्रों वगैरे औषध शास्त्रादि लेकर विजयमित्र राजा के पास आये, आकर अंजूदेवी की चिकित्सा उत्पतियादि चारों प्रकार की बुद्धी प्रज्युंकर करी परन्तु अंजूदेवी की योनीशूल उपशमाने-गमाने समर्थ नहीं हुवे. तब वे वैद्यादिथके अतीहीथक कर जिस दिशा से आये थे उस दिशा [अपने घर] पीछेगये ॥१४॥ तब वह अंजूदेवी उस वेदनाकी सन्मुखहुई सूकी भुकी रक्त मांस राहित काष्ट भूत हो करुणा जनक शब्द करती हे गौतम ! तुमने देखी वैसी विचर रही है ॥ १५ ॥ यों निश्चय हे गौतम ! अंजूदेवी पूर्व जन्म के उपार्जन किये हुवे कर्मके फल इस प्रकार भोगवती विचर रही है॥१६॥अहो

सूत्र

कहिंगच्छिहिंति कहिं उववज्जहिंति ? गोयमा ! अंजूणंदेवी णेउइवासाइं परमाउ पालीता कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववण्णे, एवं संसारो जहा पढमो तहा णेयव्वं जाव वणस्सईसाणं तओअणंतरं उव्वट्टित्ता सव्वओ भद्दणयरे मयूरत्ताए पच्चायाहिंति, सेणं तत्थसाउणिएहिं बहिएसमाणे तत्थेव सव्वओ भद्दणयरे सेठिकुलंसि पुत्तताय पच्चाहिंति,सेणं तत्थ उमुक्कबालभावं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलिबोहिं बुज्झिहिंति २, पव्वज्जा, सोहम्मे सेणं ताओ देवलोगाओ

अर्थ

भगवान ! अंजूदेवी काल के अवसर पूर्ण कालकर कहां जावेगी कहां उत्पन्न होवेंगी ? हे गौतम! अंजूदेवी नव्वे (९०) वर्ष का पूर्ण आयुष्य पालकर काल के अवसर में काल पूर्ण कर, इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नेरीये पने उत्पन्न होगी. यों प्रथम अध्ययन में कहे मुजब मृगापुत्री की तरह संसार परिभ्रमण करेगी. यावत् वनस्पति काय में उत्पन्न हो तहां से अंतर रहित निकलकर सर्वोतभद्र नगर में मयूरपने उत्पन्न होगा, वहां चीडीमार के हाथ से मृत्यु पाकर वहीं उस ही सर्वतोभद्र नगर में शेठ के घर में पुत्र पने उत्पन्न होगा, वहां बालया वस्था से मुक्त हो यौवन अवस्था प्राप्त हुवे तथारूप स्थविर के पास केवली प्रणित धर्म से बोधित हो दीक्षा अंगीकार कर आयुष्य पूर्ण कर सौधर्म देवलोक में देवता होगी ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

आउक्खएणं ३ कहिं गच्छहिंति कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! महाविदेहवासे जहा पढमो जाव सिज्झिहिंति जाव अंतकाहिंति ॥ १७ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दुह विवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ दसमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ दुहविवागे दससु अज्झयणसु पढमो सुयक्खंधो सम्मत्तो ॥ १ ॥

अर्थ

अहो भगवान ! वहां से आयुष्य भवस्थिती क्षयकर कहां जावेंगा ? हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में प्रथम अध्ययन में कहे माफक सिद्ध बुद्ध मुक्त होगा यावत् सब दुःख का अन्त करेगा ॥ १७ ॥ इति दशवा अंजूंइवी का अध्ययन समाप्त ॥ १० ॥ यों निश्चय हे जंबु ! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोने दुःखविपाक के दशवा अध्ययनोंका यह अर्थ कहा ॥ तहिती भगवान ! ॥ इति दुःखविपाक सूत्र समाप्तम् ॥ १० ॥

*इति दुःखविपाक नामक प्रथम *

॥ श्रुतस्कन्ध समाप्तम् ॥

॥ द्वितीय श्रुतस्कन्ध-सुख विपाक ॥

सूत्र

अहबीय सुयखंधं ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं, रायगिहेणयरे, गुणसिले चेइए, सुहम्मो समोसड्ढे, जंबू जाव पज्जुवासंति एवं वयासी-जइण भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाण अयमट्ठे पण्णत्ते, सुहविवागाणं भंते ! समणेण जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ १ ॥ तएणं से सुहम्मे अणगारे जंबू ! अणगारं एवं वयासी एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता

अर्थ

अथ दूसरा श्रुतस्कन्ध सुख विपाक प्रारंभ॥ उस काल उस समय में राजगृही नाम की नगरी थी, जिस के ईशान कौन में गुणसिला नामका चैत्यथा. वहां श्री सुधर्मा स्वामी पधारे, इनके शिष्य जंबू स्वामी वंदना नमस्कार कर सेवा करते इस प्रकार बोले-यदि अहो भगवान! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी यावत् मोक्ष पधारे उनोने दुःख विपाक के दश अध्ययन कहे वे तो मैं ने श्रवण किये, अब अहो भगवान ! श्रमण यवात् मुक्ति पधारे उनोने सुख विपाक का क्या अर्थ कहा है ? ॥ १ ॥ तब सुधर्मास्वामी जंबूस्वामी से ऐसा बोले-यों निश्चय हे जंबू! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोंने सुख विपाक के दश अध्ययन कहे है, उन के नाम-१ सुबाहु कुमार का, २ भद्र नन्दी कुमार का, ३ सुजात कुमार का, ४ सुवासव कुमार का, ५ जिनदास कुमार

सूत्र

तंजहा-(गाहा)-सुबाहु, २ भद्दणंदी, ३ सुजाए, ४ सुवासवे, ५ तहेव जिणदासे ॥ ६ धणपतिय ७ महब्बलो, ८ भद्दणंदी, ९ महचंदे, १० वरदत्ते ॥ १ ॥ २ ॥ जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता; पढमस्सणं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ॥ ३ ॥ तएणं से सुहम्मे अणगारे जंबू ! अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणंसमएणं हत्थीसीसेणामं णयरे होत्था रिद्धत्थमिय, ॥ ४ ॥ तत्थणं हत्थीसीसस्सणयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए एत्थणं पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था, सव्वउय ॥

अर्थ

का, ६ धनपति कुमार का, ७ महाबल कुमार का, ८ भद्रनन्दी कुमार का, ९ महाचन्द्र कुमार का, और १० वर कुमार का, ॥ २ ॥ यदि अहो भगवान् ! श्रमण भगवंत यावत् मोक्ष पधारे उनोंने सुखविपाक सूत्र के दश अध्ययन कहे है, तो अहो भगवान ! प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा ? ॥ ३ ॥ तब सुधर्मा अनगार जंबू अनगार से ऐसा बोले—यों निश्चय हे जंबू ! उस काल उस समय में हस्तिशीर्ष नाम का नगर ऋद्धि समृद्धि कर संयुक्त था. ॥ ४ ॥ तहां हस्ति शीर्ष नगर के बाहिर उत्तर और पूर्व दिशाके बीच—ईशान कौन में पुष्पकरंड नाम का उद्यान था, उस में सर्व ऋतु की वस्तु प्राप्तहोतीथी, जहां कृतमालवनप्रिय नाम के यक्ष का यक्षाय तन (देवालय) था वह दिव्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तत्थणं कयवणमाला पियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था, दिव्वे ॥ ५ ॥ तत्थणं हत्थीसीसे णयरे अदीणसत्तूणामं रायाहोत्था, महया ॥ ६ ॥ अदीणसत्तुस्सरण्णो धारणीपामोक्खाणं देवीसहस्सं उरोहेयावी होत्था॥ ७ ॥ तएणंसा धारणीदेवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वास भवणंसि सीहं सुमिणं जहा मेहजम्मणं, तहा भाणियव्वं, णवरं सुबाहुकुमारं जाव अलंभोगसमत्थंवावि जाणंति २ त्ता अम्मा-पियरो पंचयासायवडिंसगवासायइं करेइ २ त्ता अब्भुगय भवणं एवं जहा महब्बल-

अर्थ

प्रसिद्धि पाया हुवा था ॥ ५ ॥ तहां हस्तिशीर्ष नगर में अदीनशत्रु नाम का राजा राज्य करता था, वह महाहिमवंत पर्वत समान था ॥६॥ उस अदीन शत्रु राजा के धारनी प्रमुख एक हजार देवी-रानीयों थी ॥ ७ ॥ तब वह धारनी रानी अन्यदा किसी वक्त पुन्यवंत के शयन करने योग्य भुवन [घर] में सुख शैय्या में सूती हुई सिंहका स्वपन देखा, जिस प्रकार मेघकुमार का जन्म का अधिकार ज्ञाता सूत्र में कहा है तैसे यहां भी कहना, जिस में इतना विशेष-सुबाहु कुमार नाम स्थापन किया, यावत् संपूर्ण भोग भोगवने समर्थ हुवा जानकर उसके माता पिताने पांचसो प्रसाद शिखरबंद कराये, उन पांचसो प्रसादो के मध्य में एक अति ऊंचा भुवन कराया. जिस प्रकार भगवती सूत्र में महाबल राजा को पांचसो कंन्या पानीग्रहण करानेका अधिकार कहा है तैसेही यहां भी जानना जिस में इतना विशेष-पुष्पचूला प्रमुख पांचसो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

स्सरण्णो णवरं पुप्फचूला पामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकण्ह सयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेइ, तहेव पंचसयदातो जाव उप्पिं पासाय वरगए फुट्ट जाव विहरइ ॥ ८ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणेणं भगवया महावीरेणं समोसरणं, परिसाणिग्गया, अदीणसत्तू जहा कोणिए णिग्गए, सुबाहुवि जहा जमाली जहा रहेणं णिग्गए, जाव धम्मकहिओ, राया परिसा पडिगया ॥ ९ ॥ तएणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चाणिसम्म हट्ठ तुट्ठे, उट्ठए उट्ठइता जाव एवं वयासी-सद्दहामिणं भंते ! निग्गंथे पावयणं जहाणं देवाणुप्पिया ! अंतिए बहवे राईसर जाव

अर्थ

राजा की प्रधान कन्या के साथ एकही दिन पानी ग्रहण कराया, तैसेही पांचसो २ सुवर्णकी रूपेकी यावत् १२८ बोलका दाय जादिया यावत् प्रसाद के ऊपर पांचो इन्द्रिय से विषय सुखोपभोग भोगवते विचारने लगे ॥८॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी समोसरे, परिषदा दर्शनार्थ आई, जितशत्रु राजा भी कोणिक राजाकी तरह आया, सुबाहुकुमार भी जमाली क्षत्रीकुमारकी तरह रथारुढ हो आया, धर्मकथा कही राजा परिषदा पीछीगइ॥९॥ तब सुबाहुकुमार श्रमण भगवंत महावीरस्वामी के पास धर्म श्रवण कर हर्ष तुष्ट आनन्द पाया उठखडाहुवा वंदना नमस्कारकर यावत यों बोला-अहो भगवान! मैंने निग्रन्थ प्रवचनका श्रधान किया, जैसा देवानुप्रियाने कहा वैसा ही है; यदि देवानुप्रिया! के पास तो बहुत से राजा युवराजादि राजा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

प्पामिइयो मुंडे भावित्ता, अणागाओ अणगारियं पव्वइया, णो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पव्वत्तिए, अहण्णं देवाणुप्पिया अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! मपडिबन्धं करेइ ॥ १० ॥ तएणं से सुबाहु कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ २ त्ता, तमेव दुरुहइ २ त्ता जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसं पडिगए ॥ ११ ॥ तेणं कालेणं तेणंसमएणं जेट्ठे इंदभूई जाव एवं वयासी-अहोणं भंते ! सुबाहु कुमारे

अर्थ

छोडकर साधुपना अङ्गीकार करते हैं परन्तु निश्चय में तैसा मुण्डितहो घर छोडकर अनगार होने साधु-बनने को समर्थ नहीं हुं.में तो देवाणुप्रियाके पास पांच अणुव्रत सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकारका जो गृहस्थका धर्म है उस को अङ्गीकार करणाचाता हुं।भगवंत कहा हे देवाणुप्रिया ! जिसप्रकार सुख हो उस प्रकार करो धर्म कार्य में प्रतिबन्ध-ढीलमतकरो ॥ १० ॥ तब सुबाहुकुमारे श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी के पास पांच अनुव्रत सात शिक्षाव्रत बारे प्रकार का श्रावक का धर्म अङ्गीकार किया, अंगीकार कर तैसे ही रथारुढ हो जिस दिशा से आयाथा उस दिशा पीछा गया ॥ ११ ॥ उस काल उस समय में श्रमगवंत के बडेशिष्य इन्द्रभूति-गौतम स्वामीजी भगवंत को वंदना नमस्कारकर यों बोले-अहो इति

सूत्र

इट्ठे-इट्ठ रूवे, कंते-कंतरूवे, पिए-पिएरूवे, मणुण्णे-मणाणे, सोमे, सुभगे, पियदंसणे, सुरूवे बहुजणस्स वियणं भंते! सुबाहु कुमारे इट्ठे २ कंते सोमे ४ साहुजणस्स वियणं, भंते! सुबहुकुमार इट्ठे इट्ठरूवेय जाव सुरूवे सुबाहुकुमारेणं भंते ! इमेयारूवे उराला माणुस्सरिद्धी किण्णालद्धा किण्णापत्ता किण्णा अभि समण्णागया, कोवाएस आसि पुव्वभवे जाव समण्णा गया? ॥ १२ ॥ एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणंसमएणं

अर्थ

हर्षाश्चर्य है कि अहो! भगवंत ! बहुत लोगों में सर्वाधिक सबाहुकुमार इष्टकारी इष्टकारी रूपवाला, कंतकारी कन्तकारी रूपवाला, प्रियकारी प्रियकारी रूपवाला, मनोज्ञयनाम सौम्य-चन्दमा समान सौभाग्यवंत, प्रेमोत्पादक सुन्दर दर्शनी स्वरूप शोभनिकाकार, देखने में आया, अहो भदंत ! सुबाहुकुमार इष्टकारी वल्लुभकारी अच्छा, कामनीय सौम्य-औदार यावत् सुरूप, अहो भदंत ! सुबाहुकुमार को इस प्रकार उदार प्रधान मनुष्य की ऋद्धि किस प्रकार की करनी करने से मिली है किस प्रकार प्राप्तहुई है किस हेतुसे भोगवने सन्मुख आई, सुबाहुकुमार परभव में कौन था यावत् क्या नाम व क्या गौत्र था कहां रहता था, क्या इसने अच्छा पदार्थ सुपात्रदानदिया, क्या इसने फ्रासुक आहारादि भोगवा, क्या इसने उत्तमाचार समाचारन किया, किस प्रकार साधु श्रावक के पास धर्म श्रवण किया, जिस से सुबाहुकुमार को इस प्रकार की प्रधान मनुष्य सम्बन्धी ऋद्धि मिली प्राप्तहुई सन्मुख आई है ? ॥ १२ ॥ भगवंत बोले-यों

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

इहेव जंबूद्दीवे २ भारहेवास हत्थिणाउरे णामंणयरे होत्था रिद्धत्थिमिय ॥ १३ ॥ तत्थणं हत्थिणाउरे णयरे सुहमेणामं गाहावइ परिवसइ अड्ढे ॥ १४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणामं थेरा जाइ संपण्णा जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिबुडा पुव्वाणु पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहा पडिरूवं उग्गहं उगिण्णइ २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरई ॥ १५ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतवासी सुदत्तेणामं अणगारे, उराले जाव तेयलेसे मासेमासेणं

अर्थ

निश्च हे गौतम ; उस काल उस समय में इस ही जम्बू द्वीपनाम के द्वीप में भरतक्षेत्र में हस्तिनापुर नाम का नगर ऋद्धि समृद्धि संयुक्त था ॥ १३ ॥ उस हस्तिनापुर नगर में सुमुखनाम का गाथापति रहता था वह ऋद्धिवंत था ॥ १४ ॥ उस काल उस समय में धर्मघोषनाम के स्थविर जाति संपन्न कुलसंपन्न यावत् पांचसो साधुओं के साथ परिवरे हुवे, पूर्वानु पूर्वानु चलते हुवे ग्रामानुग्राम उल्लंघते हुवे सुख सुख से विचरते हुवे जहां हस्तानपुर नगर का जहां सहश्रम्ब उध्यान था तहां आये आकर यथा प्रतिरूप साधु को कल्पे वैसा अवग्रह-आज्ञा ग्रहणकर संयम तपकर अपनी आत्मा को भवते हुवे विचरने लगे ॥१५॥ उस काल उस समय में धर्मघोष स्थविर के अन्तेवासी सुदत्तनाम के अनगार औदर- प्रधान तप के करनेवाले यावत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

खममाणे विहरइ ॥ १६ ॥ तएणं से सुदत्ते अणगारे मासखमणस्स पारणगंसि पढमं पोरसिए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसथेरे आपुच्छइ २ त्ता जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्सागिहं अणुपविट्ठे ॥ १७ ॥ तएणं से सुमुहगाहावई कुले सुदत्ते अणगारे एज्जमाणं पासइ हट्ठे तुट्ठे आसणाओ अब्भूट्ठइ २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरूहइ २ त्ता पादुयाओमुयइ २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइत्ता २ त्ता सुदत्तं अणगारं सतट्ठपायाइं अणुगच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २

अर्थ

तप के प्रभाव से उत्पन्न हुई तेंजोलेश्यों को गुप्तकर रखने वाले मांसमांस क्षमण तप करते विचरते थे ॥१६॥ तब वे सुदत्त अनगार मांस क्षमनोपवास के पारने के दिन प्रथम प्रहार में स्वध्याय की, दूसरे प्रहर में ध्यान किया तीसरे प्रहर में गौतम स्वामीजी की तरह धर्मघोष स्थाविर को पूछकर यावत् भीक्षार्थ फिरते हुवे सुमुख गाथापति के घर में प्रवेश किया ॥ १७ ॥ तब सुमुख गाथापति अपने घर में सुदत्त अनगार को आते हुवे देखकर हर्ष सन्तोषपाया, आसन छोडकर खडा हुआ, पादपीठका से नीचे उतरकर पांव में से पगरखी निकाली, फिर बीच में नहीं सींवा हुवा ऐसा एकपाटसाटिक-वस्त्र का उतरासन किया मुखकी यत्नाकर के सुदत्त अनगार के सन्मुख सात आठ पांव जाकर तीन वक्त दोनो हाथजोड प्रदक्षिणावर्त मस्तपर फिराकर वंदना नमस्कार किया. वंदना नमस्कार कर विस्तीर्ण अन्न पानी पक्कान मुखवास

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वंदइ णमंसइ २ त्ता विउलेणं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभे सामीति तुट्ठे॥ १८॥ तएणं तस्स समुहस्स तेणं दब्बसुद्धेणं दायकसुद्धेणं पडिग्गह सुद्धेणं तिविहेण तिकरणसुद्धेणं सुदत्तेअणगारे पडिलाभिए समाणे संसार परित्तीकए, मणुस्साउएणिबंधे गिहेसियं से इमाइं पंचदिव्वाइं पाउब्भूयाइं तंजहा-वसुहारबुट्ठी, दसद्धवण्णे कुसमेमणिवातिए, चेलुक्खेवंकरेइ, आहयाओ देवदुंदुभीया अंतरावियणं आगासंसि-अहोदाणं २ घुट्टेय,

अर्थ

चारों प्रकार का आहार का दानदेते पहिली संतुष्ट हुवा, ॥ १८ ॥ तब फिर वह सुमुख गाथापति द्रव्यशुद्ध अर्थात् जो द्रव्यदान में दियाजाता वह भी फ्रासुक निर्दोष तपसंयम की ज्ञान की बृद्धिकरनेवाला, दातार शुद्ध-अर्थात दानदेनेवाला भी विशुद्ध निर्मल-द्रव्यफल की वांछा रहित उदार परिणाम सहित, और पडिग्राहि भी शुद्ध-अर्थात् वह दानग्रहण करनेवाल भी शुद्ध संयमपालक संजमनिर्वाह के अर्थ लोलुपता रहित आहार ग्रहण करनेवाले, यों तीनों प्रकार के योग्य उत्तम मिले. और मन से उत्साहा सहित, वचन से गुणानुवाद करता, काय से अढलकदेता, यों तीनों करणशुद्ध सुदत्तअणगार को प्रतिलाभता-दान देता हुवा संसारको परत किया अर्थात् संसार परिभ्रमण को पृष्टकी मोक्ष के सन्मुख हुवा. वहां ही मनुष्यायु का बन्ध किया. उस वक्त वहां उस सुमुख गाथापति के घर मे पांच प्रधान द्रव्य प्रगट हुवे, उन के नाम-साढी बाडे कोडी सोनैयेकी-पांच वर्णके अचित वैक्रय बनाये फूलों की-क्षोमयुगलादि उत्तमवस्त्रोंकी-बृष्टीहुई, आकाशमें

सूत्र

हत्थिणाउरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवं आइक्खइ - धण्णेणं देवाणुप्पिए! सुमुहेणं गाहावइ; जाव तंधण्णेणं देवाणुप्पिए! सुमुहेगाहावइ॥ १९ ॥ तएणं से सुमुहेगाहावइ बहुहिंवाससयाइं आउयंपालइ२त्ता कालमासे कालंकिच्चा इहेव हत्थिसिय णयरं अदीणसत्तुस्सरण्णो धारिणीएदवीं कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णो। ॥ २० ॥ तएणं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २

अर्थ

दुंदुभी का नाद हुवा और आकाश में रहे हुवे देवों महादानम् २ ऐसा निर्घोष शब्द करने लगे. हस्तिनापुर नगर के श्रृंगाटक पंथ में त्रीवट चौवट यावत् महापंथ में बहुत लोगों मिल २ कर परस्पर बातों करनेलगे कि-है देवानुप्रिया! सुमुख गाथापतिको धन्य है, कि जिसने इसप्रकार उत्तम प्रकार का दानदिया ऐसे उत्तम साधु को प्रतिलाभे इसलिये धन्य है सुमुख गाथापति को! ॥ १९ ॥ तब फिर सुमुख गाथापति बहुत वर्ष का आयुष्य पालकर काल के अवसर में काल पूर्णकर, इस ही जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र के इस ही हस्तिशीर्ष नगर में अदीन शत्रु राजा की धारनी रानी के कूंक्षी में पुत्रपने उत्पन्न हुवा ॥ २० ॥ तब धारनी देवीने सुख शैय्या में सुती हुइ कुछ निद्रा में कुछ जाग्रत इषत्निद्रा आते तैसे ही पूर्वोक्त प्रकार के-शीसिंह का स्वप्न अवलोकन किया और अधिकार सब पूर्वोक्त प्रकार जानना यावत् प्रासादों पर सुख

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तहेव सीहं पासइ, सेसं तंचेव जाव उप्पिंपासइ विहरंति ॥ २१ ॥ एवं खलु गोयमा! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धापत्ता अभिसमण्णागया ॥ २२ ॥ पभूणं भंते ? सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडेभवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइस्सए ? हंता पभू ॥ २३ ॥ तएणं से भगवं गोयमे ? समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ२त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ २४ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइ हत्थीसीसओणयराओ पुप्फकरंडाओ उज्जाणाओ कयवण जक्खयणाओ पडिनिक्खमइ२त्ता वहिया जणवह विहारं विहरइ ॥ २५ ॥

अर्थ

भोगवता विचरता है ॥ २१ ॥ यों निश्चय हे गौतम ! सुबाहु कुमारने पूर्वजन्म में इस प्रकार अच्छी करनी करने से मनुष्य सम्बन्धी ऋद्धि मिली है प्राप्त हुइ है, सन्मुख आई है ॥ २२ ॥ अहो भगवान ! सुबाहु कुमार गृहस्था वास छोडकर देवानुप्रिया के पास मुण्डित हो दीक्षालेने समर्थ है क्या? हां गौतम! सुबाहु कूमार दिक्षा ग्रहण करेगा ॥ २३ ॥ तब फिर भगवंत गौतम स्वामीजी श्रमण भगवंत महावीर स्वामीजीको वंदना नमस्कार कर तप संयम से अपनी आत्माको भावते हुवे विचरने लगे ॥ २४ ॥ तब श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीजी अन्यदा किसीवक्त हस्तिशीर्ष नगर के पुष्पकरंड उध्यान के कृतबनमाली यक्षके यक्षायतन से निकले निकल कर बाहिर जनपद देश में विहार करने लगे ॥ २५ ॥ तब सुबाहुकूमर श्रम-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तएणं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए अभिगय जीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ॥ २६ ॥ तएणं से सुबाहुकुमारे अण्णयाकयाइ चउद्दस्सट्ठमुद्दिट्ठ पुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसालं पमज्जइ २ त्ता उच्चारपासवणं भूमिपडिलेहे २ त्ता दब्भसंथारं संथरइ २ त्ता दब्भसंथारं दुरूहइ २ त्ता अट्ठमंभत्तं गिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिएपोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ॥ २७ ॥ तस्स सुबाहुस्सकुमारस्स पुव्वरत्तवरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स, इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पण्णे-धण्णाणं ते गामागरणगर जाव

अर्थ

श्रमणोपासक साधुका भक्तावना, जीव अजीव आदि नवतत्वका ज्ञान हुआ यावत् चउदह प्रकार का दान प्रतिलाभना हुआ विचरने लगा ॥ २६ ॥ तब सुबाहुकुमर अन्यदा किसिवक्त चतुर्दशी अमावस्या अष्टमी पूर्णिमाके दिन जहां पोषधशाला है तहां आया, आकर, पोषधशालाको रजोहरणसे पूंजकर उच्चार-बडीनीत पासवण लघुनीत परिठावनेकी भूमीका पडिलेही, पडिलेहकर दार्भ (घास) का संथारा [बिच्छोना बिछाकर दर्भ संथारे पर बैठकर अष्टमभक्त (तेलेका तप] ग्रहण किया, ग्रहणकर अष्टभक्त-तेलेका पोषधव्रत ग्रहणकर धर्म जागरना जागता हुआ विचरनेलगा ॥ २७ ॥ तब उस सुबाहुकुमरको आधीरात्री व्यतीत हुवे धर्म जागरणा जागते हुवे इस प्रकार अध्यवसाय उत्पन्न हुआ-धन्य है उस ग्राम नगर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

सण्णिवेसा जत्थणं समणे भगवं महावीरे विहरइ, धण्णाणं तेराईसर जेणं समणस्स अंतिएमुंडा जाव पव्वयंति, धण्णाणं तेराईसर जेणं समणस्स अंतिए पंचाणुव्वातियं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जइ. धण्णाणं तेराईसर जेणं समणस्स अंतिए धम्मं सुणेइ॥ जइणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा जाव विहरिज्जा तओणं अहं समणस्स अंतिए मुंडेभवित्ता जाव पव्वएज्जा ॥ २८ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता

अर्थ

यावत् सन्निवेस को जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी विचरते हैं, धन्य है उन राजा ईश्वर शेठ सेनापति आदि को जो श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पास मुण्डित होते हैं. यावत् दीक्षा धारन करते हैं, धन्य है उन राजा ईश्वरादि को जो श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पास पांच अनुव्रत सात शिक्षाव्रतरूप ग्रहस्थ का धर्म धारन करते हैं, धन्य है उन राजा ईश्वरादि को जो श्रमण भगवंत के पास धर्म श्रवण करते हैं; यदि श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पूर्वानु पूर्व चलते हुवे यहां पधारकर तप संयम से आत्मा भावते विचरते तो मैं भी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पास मुण्डित हो दीक्षा धारन करूं ॥ २८ ॥ तब श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने सुबाहु कुमार के इस प्रकार के अध्यवसाय को जाने, और पूर्वानुपूर्वी चलते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव दुइज्जमाणे जेणेव हत्थीसीसे णयरे जेणेव पुप्फकरंडए उज्जाणे जेणेव कयवणमाला पियरस जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा जाव विहरइ ॥ २९ ॥ परिसा राया निग्गओ, तएणं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तंमहया जहा पढमं तहा निग्गया धम्मोकहिओ परिसाराया पडिगया ॥ ३० ॥ तएणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मंसोच्चा णिसम्म हट्ठ जहा मेहो, तहा अम्मापियरो आपुच्छइ, निक्खमणाभिसेओ

अर्थ

ग्रामनुग्राम उल्लंघते जहां हस्तिशीर्ष नगर जहां पुष्पकरंड उद्यान जहां कृतवन माली यक्षका यक्षायतन था तहां आये, आकर यथा प्रतिरूप साधु के योग्य अवग्रह अवगाहकर-ग्रहणकर संजम तपकर अपनी आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ २९ ॥ परिषदा दर्शनार्थ आई, तब सुबाहु कुमार महा अडंबर कर पहिले की तरेही वंदनकरने गया, धर्मकथा कही, परिषदा पीछी गई ॥ ३० ॥ तब सुबाहु कुमार श्रमण भगवंत के पास धर्म श्रवणकर अवधार कर हृष तुष्ट आनन्दित हुवा जिस प्रकार कर मेघकुमारने अपने मातपिता से पुच्छा, प्रश्नोत्तर हुवा इस ही प्रकार प्रश्नोत्तर हुवे दीक्षाउत्सव भी तैसे ही हुवा यावत् अनगार-साधु हुवा, इर्यासमिती समता यावत् ब्रह्मचारी बना, ॥ ३१ ॥ तब वह सुबाहु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

तहेव अणगारे जाए, इरियासमिए जाव बंभयारी ॥ ३१ ॥ तएणं से सुबाहुअणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारुवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ २ त्ता बहुहिं चउत्थछट्ठट्ठम तवो विहाणेणं अप्पाणं भावित्ता बहुहिंवासाइं समणपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसिता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालंकिच्चा सोहम्मेकप्पे देवत्ताए उववण्णे ॥ ३२ ॥ सेणं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं

अर्थ

अनगार श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी के समीप रहने वाले तथारूप स्थविर के पास सामायिक आदिक इग्यारे अंगपढे, पढकर बहुत प्रकार चोथभक्त-उपवा वेला तेला आदि तपकर्मोपाधान से अपनी आत्मा को भावते बहुत वर्ष साधुपने की पर्याय का पालनकर, अन्तिम एक महिने की संलेषना से पापात्मा को झोंसनाकर साठ भक्त अनशन का छेदन कर आलोचना प्रतिक्रमनाकर समाधी प्राप्त हो काल के अवसर काल कर के सौधर्म देवलोक में देवतापने उत्पन्न हुवा ॥ ३२ ॥ वह सुबाहु देव देवलोक से यहां का बन्धा आयुष्य का क्षयकर देवता का भव का क्षयकर देवता की स्थिति का क्षयकर अन्तर रहित चवकर मनुष्यपने को प्राप्तहोगा; केवली प्रणित बोध से बोधित होगा, बोधित हो तथारूप स्थविरपास मुणित हो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भवक्खएणं ट्ठिइक्खएणं अणंतरं चयंचइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति केवलं बोहिं बुज्झिहिंति २ त्ता तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे जाव पव्वइस्सइ, सेणं तत्थ बहुहिं वासाइ समण्ण परियागं पाउणिहिंति, आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा, सणंकुमारकप्पे देवत्ताए उववण्णे: तओमाणुस्स पवज्जा, बंभलोए, माणुस्सं महासुक्के, माणुस्सं, आरणए, माणुस्सं, सव्वट्ठसिद्धिं॥सेणं तओ अणंतरं उव्वट्टिता महाविदेहे जाव अड्ढा जहा दढपइण्णे सिज्झिहिंति ॥३३॥ एवं खलु जंबू! समणेणं जाव सपत्तेणं सुहविवागाणं

यावत् दीक्षाधारन करेगा. वह वहां बहुत वर्ष साधुपना पालकर आलोचना प्रतिक्रमणाकर समाधी से काल के अवसर काल प्राप्त हो सनतकुमार नामक तीसरे देवलोक में देवता होगा, वहां से चवकर मनुष्य होगा, दीक्षाधारन करेगा, वहां पांचमे ब्रह्मदेवलोक में देवता होगा, वहां से मनुष्य हो संयमलेगा, वहां से सातवे महाशुक्र देवलोक में देवता होगा, वहां से फिर मनुष्य होगा, संयम की आराधना कर इग्यारवे अरण देवलोक में देवता होगा, वहां से फिर मनुष्य हो संयम की आराधना कर सर्वार्थ सिद्ध नामक महा-विमान में देवता होगा, वह सुबाहुकुमार का जीव वहां से अनन्तर निकलकर महाविदेह क्षेत्र में जन्मलेगा, ऋद्धिवंत होगा. जिस प्रकार दृढप्रतिज्ञा कुमार का कथन उववाइ सूत्र में कहा है उसही प्रकार संयमले कर्म का क्षयकर सिद्ध होगा बुद्धहोगा मुक्तहोगा निर्वाणपावेगा सर्व दुःख का अंतकरेगा ॥ ३३ ॥ यों निश्चय

अर्थ

पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठेपण्णत्ते त्तिबेमि ॥ इति पढमअज्झयणं सम्मत्तं ॥ १ ॥ बितियस्स उक्खेवओ ॥ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णयरे धूमकरंडगउज्जाणे, धण्णोजक्खो, धण्णोवहोराया, सरस्सइदेवी, सुमिणदंसणं, कहणा-जम्मं-बालतणं-कलाउय-जोव्वणे पाणिग्गहणं-दाउ-पसादं-भोगायं जहासुबाहुस्सः णवरं भदनंदीकुमारे, सिरिदेवी पामुक्खाणं पंचसया ॥ १ ॥ सामीस्स समोसरणं,सावगधम्मं

सूत्र

हे जंबू ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी मुक्ति पधारे उनोंने सुख विपाक का प्रथम अध्ययन का इस प्रकार अर्थ कहा तैसा ही मैं ने तेरे से कहा ॥ इति सुबाहु कुमार का प्रथम अध्ययन समाप्तम् ॥ १ ॥

दूसरा अध्ययन-यों निश्चय हे जंबू ! उस काल उस समय में वृषभपुर नाम का नगर का वहां स्तूभ-करंड नाम का उध्यान था, उसमें धन्नायक्षका यक्षयतन था, वृषभ पुरनगर का धन्नावह नामका राजाथा, उसकी सरस्वती नामकी रानीथी, सिंहका स्वप्न देखा, स्वप्नपाठक से पूछा, पुत्रजन्मोत्सव हुवा, बाल्यवस्था से मुक्त हो बहुतरकला का अभ्यास किया, श्री देवी आदि पांचसो कन्या के साथ पानी ग्रहण किया, पांचसो २ दातदी यावत् प्रसादपर पांचों इन्द्रीय के सुखोपभोग भोगवते विचारने लगे, इत्यादि सर्व कथन सुबाहु कुमार जैसा जानना जिसमें इतना विशेष इन का भद्रनन्दीकुमार नाम स्थापन किया ॥ १ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥२॥पुव्वभवपुच्छा-महाविदेहे पुंडरिगिणिणयरी विजयकुमारे,जुगबहुतित्थकरे पडिलाभे माणुस्साउ निबद्धे इहंउप्पण्णे,सेसं जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंतिं परिनिव्वाहिंति, सव्वदुक्खण मंतकरिहिंति,॥ त्रितियं अज्झयणं सम्मत्तं॥ २ ॥ तच्चस्सउक्खवओ ॥ वीरंपुरनयरं मणोरमंउज्जाणं, वीरकण्हमित्तेराया, सिरिदेवी; सुजातेकुमारे, बलसिरीपामोक्खाणं पंचसया, सामीसमोसरिए, ॥ पुव्वभवपुच्छा

श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी समोसरे धर्म कथा श्रवणकर श्रावक धर्म अङ्गीकार किया ॥ २ ॥ गौतम स्वामीजीने पूर्वभव की पृच्छा की भगवंतने फरमाया-महाविदेह क्षेत्र की पुंडरीकगणी नगरी में विजय नाम का राजय पुत्र था, श्री युगबाहु तीर्थंकर को प्रतिलाभे-दानदिया मनुष्यजन्म का आयुष्य बंधकर यहां उत्पन्न हुवा, शेष अधिकार सब सुबाहु कुमार जैसा जानना यावत् महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होगा तहां तक कह देना ॥ इति दूसरा भद्र नन्दी कुमार का अध्ययन समाप्तम ॥ २ ॥

तीसरा अध्ययन का उक्षेप ॥ वीरपुर नगर, मनोरम उध्यान, वीरकृष्ण मित्रराजा श्रीदेवी रानी सुजात नामका कुमार, बलश्री प्रमुख पांचसो कंन्या के साथ पानी ग्रहण किया. भगवंत पधारे, श्रावकव्रने, गौतम स्वामीने पूर्वभवपूछा-भगवंतने कहा-इक्षुकार नगरमें बृषभदत्त गाथापतिने पुष्पदत्त अनगारको प्रतिलाभकर मनुष्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

उसुयारेणयरे- उसभदत्तेगाहावई, पुप्फदत्तेअणगारे पडिलाभे, माणुस्साउनिबद्धे, इह-
उप्पण्णे, जाव महाविदेहे सिज्झिहिंति ॥ सुहविवागे तइयं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ३ ॥
चउत्थस्स उक्खेवओ ॥ विजयपुरंणयरं,णंदणवणं उज्जाणे, असोगोजक्खो, वासवद त्तेराया,
कण्हदेवी,सुवासवेकुमारे,भद्दापामोक्खं पंचसयादेवी॥ जाव पुव्वभवो-कोसंबीणयरी धण्णपा-
लोराया, वेसमण भद्दे अणगारे पडिलाभिए; इहं जावसिद्धे ॥ चउत्थअज्झयणं सम्मत्तं॥४॥
पंचमस्स उक्खोवओ ॥ सोगंधिया णयरी, णीलासोग उज्जाणे, सुकालो जक्खो,

अर्थ

आयुष्यबन्धकर उत्पन्नहुवा यावत् महाविदेह क्षेत्रमें सिद्धबुद्ध मुक्तहोगा ॥ इति सुजात कुमार का तीसरा अध्ययन ॥३॥
चौथा अध्ययन का उक्षेप ॥ विजयपुर नगर, नंदनवन उद्यान, आशोक यक्ष, वासवदत्त
राजा कृष्णादेवी रानी, सुवासव कुमार, भद्रा प्रमुख पांचसो कंन्या के सात पानी ग्रहण
कराया ॥ पूर्वभव—कोसंबी नगरी धनपाल राजाने वैश्रमण भद्र अनगार को प्रतिलाभे, यहां
उत्पन्न हुवा, यावत् महाविदे क्षेत्र में सिद्ध होगा ॥ इति सुवासव कुमार का चौथा अध्ययन संपूर्ण ॥ ४ ॥
पंचवा अध्ययन का उक्षेप—सौगन्धि का नगरी, नीलाशोक उध्यान, सुकाल यक्ष, अप्रतिहत राजा,
सुकृष्णादेवी रानी, महाचन्द्र कुमार, इसके अरहदत्त भारिया. जिसका जिनदास पुत्र, तीर्थंकर पधारे ॥

सूत्र

अप्पडिहयोराया, सुकण्हादेवी, महचंदकुमारे, तस्स अरहदत्ताभारिया, जिणदासपुत्ते, तित्थगरागमणं, जिणदासो, पुव्वभवो—मज्झिमिया णयरी, मेहरहोराया, सुहम्मे अणगारे पडिलाभिए, जाव सिद्धे ॥ पंचमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ५ ॥ छट्ठस्स उक्खेवओ-कणगपूरं णयरं, सेयासेयं उज्जाणे, वीरभद्दोजक्खो, पियचंदो राया सुभद्दादेवी, वेसमणे कुमारे, जुवराया, सिरिदेवी पामोक्खाणं पंचसया, तित्थगरागमणं धणवइ जुवरायपुत्तो, जाव पुव्वं भवं-मणिवया णयरी, मित्तोराया, संभूतिविजय अणगारे पडिलाभिए, जाव सिद्धे ॥ छट्ठं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ६ ॥ सत्तमस्स उक्खेवो ॥ महापुरं णयरं, रत्तासोगं उज्जाणं, रत्तापालजक्खो, बलेराया, सुभद्दा

अर्थ

पूर्वभव-मज्झिमिका नगरी, मेघरथराजा, सौधर्म अनगार प्रतिलाभे यावत् सिद्धहुवे॥ जिनदास का पांचवा अध्ययन॥५॥ छट्ठा अध्यायन का उक्षेप-कनकपुर नगर, श्वेताशोक उध्यान, वीरभद्रयक्ष, प्रियचंद्रराजा, सुभद्रादेवीरानी, वैश्रमण कुमार युवराजा, श्रीदेवी प्रमुख ५०० कुमरानी यों॥ तीर्थंकर पधारे, धनवती युवराजाका पुत्र॥ पूर्व भव पूच्छा. मणिवया नगरी, मित्रराजा, संभूतीविजय अनगार प्रतिलाभे यावत् मुक्ति प्राप्तहुवे॥ धनपति का छट्ठा अध्याय ॥६॥ सातवा अध्यायन का उक्षेप-महापुरनगर, रत्ताशोक उध्यान, रक्त पाल यक्ष बलनामे राजा, सुभद्रा देवी

सूत्र

देवी, महाबले कुमारे, रत्तवतीपामोक्खाणं पंचसया, तित्थगरागमणं, जाव पुव्वभवो-माणी-
पुरं णयरं, णागदत्तेगाहावई, इंदपुरे अणगारे पडिलाभिए, जाव सिद्धे॥ सत्तमं अ० स० ।७।
अट्ठमस्स उक्खेवओ ॥ सुघोसं णयरं, देवरमणं उज्जाणं, वीरसेणोजक्खो, अज्जुणोराया त-
त्तवइदेवी, भद्दनंदीकुमारे, सिरीदेवी पामोक्खाणं पंचसया ॥ जाव पुव्वभवेपुच्छा-महाघोसे
णयरे धम्मघोसेगाहावइ, धम्मसीहे अणगारे पडिलाभे, जाव सिद्धे॥ अट्ठमं अ० स० ॥८॥
णवमस्स उक्खेवओ ॥ चपाणयरी, पुण्णभद्दे उज्जाणे, पुण्णभद्देजक्खो, दत्तेराया, रत्तवइदेवी,
महचंदेकुमारे, जुवराया, सिरिकंतापामोक्खाणं पंचसया, जाव पुव्वभवो-तिगिच्छि णयरी,

अर्थ

रानी महाबल कुमार, रक्तावती प्रमुख ५०० कुमारानी यों ॥ तीर्थंकर समवसरे, पूर्वभव
पुच्छा—माणीपुर नगर, नागदत्त गाथापति, इन्द्रदत्त अनगार को प्रतिलाभे, यावत् मोक्षपाये
इति महाबल का सातवा अध्ययन समाप्तम् ॥ ७ ॥ ● आठवा अध्ययन का उक्षेप—सुघोस नगर,
देवरमण उद्यान, वीरसेन यक्ष, अर्जुन राजा, तत्तवतीरानी, भद्रनन्दी कुमार, श्रीदेवी प्रमुख ५००
कुमारानी. पुर्वभव-महाघोष नगर, धर्म घोष गाथापति, धर्म सिंह अनगार को प्रतिलाभे यावत् मोक्ष पाया ॥
इति भद्रनन्दीका आठवा अध्ययन समाप्त ॥८॥ ● नवा अध्ययन का उक्षेप—चम्पा नगरी, पूर्ण भद्रयक्ष

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र

जियसत्तुराया, धम्मविरति अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ णवमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ९॥ जइणं दसमस्स उक्खेवओ ॥ एवं खलु जंबु ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साएयं णामं णयरे होत्था, उत्तरकुरुउज्जाणे, पासामियो जक्खो, मित्तणंदीराया, सिरिकंता-देवी, वरदत्तकुमारे, वीरसेणापामोक्खाणं पंचसयादेवी, तित्थगरागमणं, सावगधम्मं ॥ पुव्वभवो-सयादुवारे णयरे, विमलवाहणेराया, धम्मरूइ अणगारे पडिलाभिए, माणुस्साउ

अर्थ

दत्तराजा रत्तवती रानी महाचन्द्र कुमार युवराजा, श्रीकान्ता प्रमुख पांचसो कुमारातीयों ॥ पूर्वभव-तिगिछी नगरी जितशत्रुराजा, धर्मवृति अनगार प्रतिलाभे, यावत् सिद्ध हुवे॥ इति महाचंदका नवबा अध्ययन समाप्तम्॥९।

दशवा अध्ययन का उक्षेप-यों निश्चय हे जंबू ! उस काल उस समय में साकेत नगर था उत्तरकुर उध्यान, पासामीयक्ष, मित्रनंदीराजा, श्रीकंतादेवी, वरदत्तकुमार. वीरसेना प्रमुख पांचसो कन्या से पानी ग्रहण कराया ॥ भगवंत श्री महावीर स्वाजी पधारे, वरदत्तकुमार श्रावक बना. गौतम स्वामीजीने पूर्वभव पूछा-भगवंत फरमाते हैं-शतद्वारा नगरी के विमल वाहनराजाने धर्मरुची अनगार को प्रतिलाभकर नुष्यायु का बन्धकर यहां उत्पन्न हुवा, और शेष अधिकार सुबाहु कुमार जैसा जानना, पौषध में भगवंत के दर्शन की चिन्तवना की भगवंत पधारे, दीक्षाधारन की, आयुष्य पूर्ण कर-प्रथम देवलोक,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बंधे इहं उप्पण्णे सेसं सुबाहुस्स चिंता जाव पवज्जा, कप्पंतरे तओ जाव सव्वट्ठसिद्धे, तओ महाविदेहे जाव सिज्झिहिंति ॥ दसमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ १० ॥ * एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥सेवंभंते २॥ णमोसुयदेवयाए विवागसुयस्स दोसुयक्खंधा दुहविवाग दसअज्झयणा, सुहविवाग दसअज्झयणा, एक्कारसगा दसमु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, एवं सुहविवागोवि सेसंजहा आयारस्स ॥ इति विवागसुयं एक्कारसमं अगं सम्मत्तो ॥ ११ ॥

अर्थ

मनुष्य, तीसरा देवलोक, मनुष्य, पांचवा देवलो, मनुष्य, सातवा देवलोक, मनुष्य, नवबा देवलोक, मनुष्य, इग्यारवा देवलोक मनुष्य और सर्वार्थ सिद्ध में उत्पन्न हो वहां से महाविदेह क्षेत्र में जन्मले दीक्षाले कर्म क्षयकर सिद्ध होगा यावत् सर्व दुःख का अन्त करेगा ॥ यों निश्चय हे जंबू ! श्रमण भगवंत यावत् मुक्ति गये जिनोने दशवा अध्ययन का यह अर्थ कहा, तैसा ही मेंने तेरे से कहा. तहति वचन अहो भगवान ! आपने कहा तैसा ही है ॥ इति सुख विपाक का दशवा अध्ययन समाप्तम् ॥ १० ॥ +

उपसंहार-नमस्कार होवो श्रुतदेवको, विपाक सूत्रके दो श्रुतस्कन्ध दुःख विपाकके दश अध्ययन और सुख विपाक के भी दश अध्ययन. इग्यारवे अंग के २० अध्ययन प्रथमके दश अध्ययन भी दश दिन में वांचने तैसेही दूसरे केदश अध्ययन भी दश दिन में बांचन, और आचारंग के जैसे जानना ॥ इति सुख विपाक सूत्र समाप्तम् ॥ ११ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इति

एका दशमाङ्ग विपाक सूत्र समाप्तम्

* वीराब्द-२४४४ जेष्ट पूर्णिमा चन्द्रवार. *

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शास्त्रोद्धार प्रारंभ वीराब्द २४४२ ज्ञान पंचमी

१३२६

इति

विपाक सूत्र

समाप्तम्

शास्त्रोद्धार समाप्ति वीराब्द २४४६ विजयादशमी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org